श्री षोडशी
तन्त्रशास्त्र
राजेश दीक्षित

षोडशी तन्त्र शास्त्र

षोडशी तन्त्र शास्त्र

साधक ध्यान रखें

पुस्तक को अध्ययन करते समय सर्वप्रथम निम्नलिखित वातों का विशेष ख्याल रखें—

× अपने आत्म-विश्वास और कार्य-सिद्धि के ढंग पर ही आपके कार्य का फल निर्भर करता है। बिना विश्वास के कोई फल प्राप्त नहीं होता।

× तान्त्रिक सांधन उपचार और दुख निवारण के लिए ही प्रयोग करने चाहिए न कि निजी स्वार्थ के लिए।

× किसी अनिष्टकारक फल की प्राप्ति के लिए किया गया कार्य दूसरों की हानि की अपेक्षा स्वयं को अधिक हानिकारक होता है।

षोडशी तन्त्र शास्त्र

[श्रीविद्या, ललिता, राजराजेश्वरी, त्रिपुरा, महात्रिपुर सुन्दरी, बाला तथा पञ्चदशी आदि नामों से प्रसिद्ध, तृतीय महाविद्या भगवती के तत्व, यन्त्र ध्यान, न्यास, पूजा-पद्धति, भेद, स्तोत्र, कवच, हृदय, सहस्रनाम आदि का शास्त्रीय विवेचनात्मक संकलन ग्रंथ]

●

विद्या-वारिधि, दैवज्ञ-वृहस्पति

आचार्य पं० राजेश दीक्षित

[सहस्राधिक ग्रंथों के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लेखक]

●

प्रकाशक

सुमित प्रकाशन

९१/ए आलोक नगर (बी) आगरा-१०

● प्रकाशक :
सुमित प्रकाशन
९१/ए आलोक नगर (बी) आगरा-१०

● लेखक/सम्पादक
आचार्य पं० राजेश दीक्षित

● संस्करण १९८७ ई०

● मूल्य : तीस रुपये

● मुद्रक :
सुमन कम्पोजिंग हाऊस, अमरपुरा, भरतपुर रोड, आगरा

SHODASHI-TANTRA SHASHTRA
by : Pt. Rajesh Dixit

षोडशी तन्त्र शास्त्र

□ तन्त्र एक ऐसा कल्पवृक्ष है, जिससे छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी कामनाओं की पूर्ति सुलभ है।

□ श्रद्धा और विश्वास के सम्बल पर लक्ष्य की ओर बढ़ने वाला तन्त्र-साधक अतिशीघ्र निश्चित लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

□

भावों को प्रकट करने के साधनों का आदिस्रोत यन्त्र-तन्त्र ही है। यन्त्र-तन्त्र के विकास से ही अंक और अक्षरों की सृष्टि हुई है। अतः रेखा, अंक एवं अक्षरों का मिला-जुला रूप तन्त्रों में व्याप्त हो गया। साधकों ने इष्टदेव की अनुकम्पा से बीज-मन्त्र तथा मन्त्रों को प्राप्त किया और उनके जप से सिद्धियाँ पायीं तो यन्त्र-तन्त्र में उन्हें भी अंकित कर लिया।

□

❀ एक दृष्टि में ❀

- ☐ मानव-जीवन की आवश्यकता और आकांक्षाओं की पूर्ति के अनेक साधनों में 'तन्त्र' सरल और सुगम साधन हैं।
- ☐ यह भ्रम सर्वथा निर्मूल है कि तन्त्र केवल भूल-भूलैया अथवा मन बहलाने का नाम है।
- ☐ तन्त्र का विशाल प्राचीन साहित्य इसकी वैज्ञानिक सत्यता का जीता-जागता प्रमाण है।
- ☐ आधुनिक विज्ञान और तन्त्र में बहुत समानता होते हुए भी तन्त्र में स्थायित्व है, सत्य है और कल्याण है।
- ☐ तन्त्र-विधान का शास्त्रीय परिचय और विधियों का सर्वांगीण ज्ञान साधना का सफल बनाकर सिद्धि तक पहुँचता है।
- ☐ लाक-कल्याण और आत्म-कल्याण की कामना से किये गये तान्त्रिक कर्म इस लोक और परलोक दोनों में लाभदायी होते हैं।
- ☐ नित्यकर्म, संक्षिप्त हवन विधि, शास्त्रीय विवेचन और काली तन्त्र के अभिनव-प्रयोग आपको कष्टों से बचाने में सहायक होंगे।
- ☐ इस पुस्तक में दिये गये तन्त्र-मन्त्र प्राचीनतम्, प्रामाणिक, अनुपलब्ध पुस्तकों से संकलित किये गये हैं सिर्फ उन्हीं मन्त्र, तन्त्र को पुस्तक में स्थान दिया गया है जिनकी सत्यता निर्विवाद है।
- ☐ पुस्तक पाठकों की भलाई के लिए बनायी गयी है .अस्तु "कुएँ के अन्दर जैसी आवाज देंगे वैसी ही प्रतिध्वनि हागी" की तरह साधना आपके सच्चे मन कर्म से होगी तभी उसमें इष्टतम् फल प्राप्त होगा अन्यथा जैसा करेगा वैसा भरेगा। इसमें लेखक, प्रकाशक का क्या दोष ?

साधना से पूर्व आवश्यक निर्देश

किसी भी मन्त्र-तन्त्र की साधना से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान में रखना आवश्यक है—

(१) मन्त्र-तन्त्र का जप अंग-शुद्धि, सरलीकरण एव विधि-विधान पूर्वक करना उचित है। आत्म-रक्षा के लिए सरलीकरण की आवश्यकता होती है।

(२) किसी भी तन्त्र अथवा मन्त्र की साधना करते समय उस पर पूर्ण श्रद्धा रखना आवश्यक है, अन्यथा वांछित फल प्राप्त नहीं होगा।

(३) मन्त्र-तन्त्र साधन के समय शरीर का स्वस्थ्य एवं पवित्र रहना आवश्यक है। चित्त शान्त हो तथा मन में किसी प्रकार की ग्लानि न रहे।

(४) शुद्ध, हवादार, पवित्र एवं एकान्त-स्थान में ही मन्त्र साधना करनी चाहिए। मन्त्र-तन्त्र साधना की समाप्ति तक एक स्थान परिवर्तन नहीं करना चाहिए।

(५) जिस मन्त्र-तन्त्र की जैसी साधना-विधि वर्णित है, उसी के अनुरूप सभी कर्म करने चाहिए अन्यथा परिवर्तन करने से विघ्न-बाधाएँ उपस्थित हो सकती हैं तथा सिद्धी में भी सन्देह हो सकता है।

(६) जिस मन्त्र की जप संख्या आदि जितनी लिखी है उतनी ही संख्या में जप-हवन आदि करना चाहिए। इसी प्रकार जिस दिशा की ओर मुँह करके बैठना लिखा हो तथा जिस रंग के पुष्पों का विधान हो, उन सबका यथावत् पालन करना चाहिए।

(७) एक बार में एक ही तन्त्र की साधना करना उचित है। इसी प्रकार एक समय केवल एक ही मनोभिलाषा की पूर्ति का उद्देश्य सम्मुख रहना चाहिए।

दो शब्द

- दशमहाविद्या तन्त्र ग्रंथ माला की यह तीसरी पुस्तक है। इसमें श्रीविद्या, ललिता, राजराजेश्वरी, त्रिपुरा, महात्रिपुर सुन्दरी, बाला, पञ्चदशी आदि नामों मे प्रसिद्ध तृतीया महाविद्या भगवती षोडशी के स्वरूप तत्व, यंन्त्र-तत्व, मन्त्र, न्यास, जप तथा पूजा-विधि के अतिरिक्त इनके भेद एवं गोपाल सुन्दरी मन्त्र की साधन-विधि का शास्त्रीय-विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

- भगवती महाकाली, उग्रतारा तथा षोडशी—ये तीनों आद्य महाविद्या हैं अन्य सभी महाविद्याओं का प्राक्ट्य इन्हीं से हुआ है। इनमें भी साधक-गण श्रीविद्या नाम्नी भगवती षोडशी को ही सर्वोपरि मानते हैं। 'श्रीयन्त्र' को तो मन्त्रराज के नाम से विश्व-विश्रुत ख्यातिं प्राप्त है ही।

- श्रीविद्या सद्य फलदायक है तथा श्रीयन्त्र दर्शन मन्त्र से ही समस्त काम-नाओं को पूर्ण करता है। जिस घर में श्रीयन्त्र विद्यमान रहता है, वहाँ धन-धान्य आदि किसी वस्तु की कमी नहीं रहती।

- प्रस्तुत संकलन में जहाँ मन्त्र, जप, पूजन आदि की विधि का सुविस्तृत वर्णन किया गया है, वहीं भगवती षोडशी से संबंधित स्तोत्र, कवचादि देकर इसे पाठकों के लिए अधिकाधिक उपयोगी बनाने की चेष्टा की गई है। एतदर्थ जिन-जिन सूत्रों से सामग्री-संचय में सहायता मिली है, उन सभी के प्रति हम हृदय से आभारी हैं।

- आशा है भगवती षोडशी श्रीविद्या के उपासकों तथा साधकों के लिए यह संकलन उपयोगी सिद्ध होगा। इस पुस्तक में वर्णित किसी विषय अथवा तन्त्र विषयक किसी कार्य एवं जानकारी के लिए हमसे पत्राचार द्वारा सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है।

—राजेश दीक्षित

विद्या-वारिधि, दैवज्ञ बृहस्पति

आचार्य पं. राजेश दीक्षित

लिखित

तन्त्र सम्बन्धी श्रेष्ठ पुस्तकें

●

१. हिन्दू तन्त्र शास्त्र
२. जैन तन्त्र शास्त्र
३. इस्लामी तन्त्र शास्त्र
४. शावर तन्त्र शास्त्र
५. काली-तन्त्र शास्त्र
६. तारा-तन्त्र शास्त्र
७. षोडशी-तन्त्र शास्त्र
८. भुवनेश्वरी-तन्त्र शास्त्र
९. छिन्नमस्ता-तन्त्रशास्त्र
१०. भैरवी-तन्त्र शास्त्र
११. धूमावती-तन्त्र शास्त्र
१२. बगलामुखी-तन्त्र शास्त्र
१३. मातङ्गी-तन्त्र शास्त्र
१४. कमला-तन्त्र शास्त्र
१५. बौद्ध तन्त्र शास्त्र

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य ३० रुपया (डाकखर्च अलग)

सुमित प्रकाशन

९१/ए आलोक नगर (बी) आगरा-१०

समर्पण

अध्यात्म-चिन्तक, कुशल-प्रशासक, साहित्य-स्नेही

डा. अनाविनाथ सैंगल

I. A. S

को

सानुराग

विषय सूची

१ | षोडशी-तत्त्व

षोडशी विद्या

दशमहाविद्यान्तर्गत (१) काली, (२) तारा एवं (३) षोडशी—इन तीन को ही सर्वप्रधान विद्या माना गया है। इन तीनों से ही नौ विद्याएँ तथा एक पूरक विद्या—इस प्रकार कुल मिलाकर 'दशमहाविद्या' होती हैं। मूलतः तो एक से ही तीन होती हैं और वह सबकी मूलभूत एक विद्या 'श्रीविद्या' ही है, ऐसी मान्यता है।

जिस प्रकार 'महाकाल' पुरुष की आद्याशक्ति 'महाकाली' तथा 'अक्षोम्य-रुद्र' की शक्ति 'तारा' है, उसी प्रकार 'पंच वक्त्र' शिव की शक्ति का नाम 'षोडशी' कहा गया है। शक्ति एवं कार्य-भेद से भगवान् शकर के अनेक रूप हो जाते हैं। एक ही शिव-सूर्य पाँच दिशाओं में व्याप्त होकर 'पञ्चवक्त्र अथवा 'पञ्चमुख' बन जाते हैं। वे पाँचों मुख (१) पूर्वा, (२) पश्चिमा, (३) उत्तरा, (४) दक्षिणा तथा (५) ऊर्ध्वा दिग्-भेद से क्रमशः (१) तत्पुरुष, (२) सद्योजात, (३) वामदेव, (४) अघोर एवं (५) ईशान नाम से प्रसिद्ध हैं। इनके वर्ण क्रमशः (१) हरित, (२) रक्त, (३) धूम्र, (४) बीज तथा (५) पीत हैं। इनके दस हाथ हैं, जिनमें क्रमशः (१) अभय, (२) टङ्क, (३) शूल, (४) वज्र, (५) पाश, (६) खड्ग, (७) अङ्कुश, (८) घण्टा, (९) नाग तथा (१०) अग्नि—ये दस आयुध धारण किए हुए हैं। ये शिव अनन्त शक्तिमान् हैं। (१) आग्नेय, (२) वायव्य तथा (३) सौम्य—ये तीन इनके स्वरूप धर्म हैं। ये तीनों ही तीन-तीन प्रकार के हैं - 'आग्नेय प्राण' के (१) अग्नि, (२) वायु और (३) इन्द्र—ये तीन भेद हैं। 'वायव्य प्राण' के (१) वायु, (२) शब्द तथा (३) अग्नि ये तीन भेद हैं तथा 'सौम्य प्राण' के (१) वरुण, (२) चन्द्र और (३) दिक्—ये तीन भेद हैं। इस प्रकार उस शिव की ९ शक्तियाँ हो जाती हैं। ये सभी घोर उग्र हैं तथा इन सबका आधार भूत 'परोरजा' नामक सर्वप्रतिष्ठारूप शान्तिमय प्राजापत्य प्राण है, दश हाथ तथा दश आयुध इन्हीं दश शक्तियों के प्रतीक हैं।

'टङ्क' आग्नेय-ताप का; 'शूल' वायव्य-ताप का; 'वज्र' ऐन्द्र-ताप का; 'पाश' वारुण-ताप का; 'खड्ग' चान्द्र-शक्ति का; 'अङ्कुश' दिश्याहेति का; 'नाग' सञ्चर-नाड़ी तथा विषाक्त-वायु का; 'अग्नि-ज्वाला' प्रकाशरूपा दृष्टि का, मस्तकस्थ 'चन्द्रमा' सोमाहुति; का; 'अभय-मुद्रा शान्तिरूप परोरजा—प्राण का तथा 'घण्टा' स्वर-वाक् की अधिष्ठाहृता अर्थात् (ध्वनि, शब्द) का प्रतीक है।

इन्हीं पञ्चवक्त्र शिव की शक्ति का नाम 'षोडशी' है। स्व, पर, सूर्य, चन्द्र तथा पृथिवी—इन पाँचों में से एक मात्र सूर्य में ही उस 'षोडशी' का पूर्ण विकास होता है।

"स वा एष आत्मा वाङ्मय प्राणमयो मनोमयः।"—वृहदारण्यक की इस उक्ति के अनुसार सृष्टिसाक्षी आत्मा मन-प्राणवाङ्मय है। सूर्य में तीनों की सत्ता है। इसीलिए "सूर्य आत्मा जगतस्थुषश्य" इत्यादि रूप से सूर्य को स्थावर-जङ्गात्मक सम्पूर्ण विश्व का आत्मा बतलाया गया है। चूंकि इसमें षोडशकल पुरुष का पूर्ण विकास है, अतः हम इसे 'षोडशी' कह सकते हैं और इसी कारण इसकी शक्ति को भी 'षोडशी' कहा जा सकता है।

भूः, भुवः, स्वः रूप तीनों ब्रह्मपुर इसी महाशक्ति से उत्पन्न हुए हैं, अतः तन्त्र में इसका 'त्रिपुर सुन्दरी' नाम भी प्रसिद्ध है।

षोडशी स्वरूप की प्रतीकात्मकता

'शाक्त प्रमोद' षोडशीतन्त्र में कहा है—

"बालार्क मण्डलाभासां चतुर्बाहां त्रिलोचनाम्।
पाशाङ्कुशशरांश्चापं धारयन्ती शिवां भजे ।।"

अर्थात्—"बालसूर्य मण्डल की आभा युक्त, चार भुजाओं, तीन नेत्रों वाली एवं पाश, अंकुश एवं धनुष-बाण धारण करने वाली शिवा को मैं भजता हूँ।"

देवी का यह स्वरूप किन-किन प्रतीकों का उदाहरण है, इस पर हम संक्षेप में विचार करते हैं।

सूर्य में प्रकाश है, ताप (अग्नि) है तथा आहुतसोम (चन्द्रमा) भी है। "त्रीणि ज्योतीषि सचते स षोडशी" के अनुसार उस शिव-शक्ति ने इन्हीं तीन रूपों में विश्व को प्रकाशित कर रखा है, इसी लिए सूर्य को 'लोक चक्षु' कहते हैं। इन्हीं तीन ज्योतियों के प्रतीक भगवती षोडशी के 'तीन नेत्र' समझने चाहिए।

सौर-शक्ति सम्पूर्ण खगोल में व्याप्त है तथा खगोल चतुर्भुज है, इसी की प्रतीक रूपा भगवती की चार भुजाएँ हैं।

यह अग्नि सोमाहुति से शान्त बन रही है। प्रातःकाल का बालसूर्य इसी को साक्षात् प्रतिकृति है, अतः देवी के शरीर की वालार्क अथवा बाल-सूर्य जैसी आभा इसी अवस्था की प्रतीक है।

सूर्य से उत्पन्न होने वाली प्रजा सौर-आकर्षण-सूत्र से बद्ध रहती है। स्वयं पृथ्वी भी उससे वद्ध होने के कारण कभी क्रान्तिवृत्त को नहीं छोड़ती। अस्तु उस सौर-शक्ति ने अपने आकर्षण रूपी पाश से सबको बाँध रखा है। 'पाश' इसी का प्रतीक है।

देवी सबके ऊपर अपना अंकुश रखती हैं। उन्हीं के भय से अग्नि तपती है, उन्हीं के भय से सूर्य तपता है तथा उन्हीं के भय से इन्द्र, वायु तथा यम अपने-अपने कार्य में संलग्न बने रहते हैं। 'अंकुश' इसी का प्रतीक है।

जो प्रधापराध से शक्ति के अटल नियमों का उल्लंघन करते हैं, उनका वह नाश कर डालती है। पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौ—इन तीनों लोकों में व्याप्त रुद्र के अन्न, वायु और वर्षा – ये तीन प्रकार के वाण हैं। वे वाण यथार्थ में इस शक्ति के ही हैं। इन्हीं के द्वारा वह संहार करती है। अतः 'शर' (वाण) इसी के प्रतीक हैं!

सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा, पालक विष्णु, संहारक रुद्र तथा खण्ड प्रलय के अधिष्ठाता यम—ये चारों देवता इसी शक्ति के अधीन हैं। वह चारों पर प्रतिष्ठित है, अतः चतुर्वाहा' इसी का प्रतीक है।

विविधनाम

'श्री विद्या' ही ललिता, राजराजेश्वरी, महा त्रिपुर सुन्दरी, वाला, पञ्च-दशी तथा षोडशी आदि नामों से प्रसिद्ध है। मूल-तत्त्व में ऐक्य होते हुए भी ये भिन्न-भिन्न नाम अवस्थाभेद के परिचायक हैं।

दश महाविद्याओं में 'षोडशी' के नाम से प्रसिद्ध विद्या 'श्री विद्या' का ही परिणत स्वरूप है। इसी को 'ब्रह्मविद्या' तथा 'ब्रह्ममयी' भी कहते हैं।

'श्रीविद्या' शब्द से श्री त्रिपुरसुन्दरी का मन्त्र तथा उसकी अधिष्ठात्री देवता—दोनों का बोध होता है।

सामान्यतः लोक में श्री शब्द का अर्थ 'लक्ष्मी' प्रसिद्ध है। परन्तु हारिता-यनसंहिता, ब्रह्माण्डपुराणोत्तरखण्ड आदि में वर्णित कथाओं के अनुसार 'श्री' शब्द का मुख्यार्थ 'महात्रिपुर सुन्दरी' ही है।

श्री महालक्ष्मी ने महात्रिपुर सुन्दरी की चिरकाल तक आराधना करके जो अनेक वरदान प्राप्त किए हैं, उनमें ही एक वरदान उन्हें 'श्री' शब्द से प्रसिद्ध होने

का भी मिला है, तभी से 'श्री' शब्द का अर्थ 'महालक्ष्मी' होने लगा अर्थात् 'श्री' शब्द के लिए महालक्ष्मी अर्थ गौण है।

'श्री' अर्थात् महा त्रिपुर सुन्दरी की प्रतिपादिका विद्या-मन्त्र ही 'श्री विद्या' है। वाच्य-वाचक का अभेद मानकर इस मन्त्र की अधिष्टात्री देवता भी 'श्रीविद्या' ही कही जाती है।

सामान्यत: 'श्री' शब्द श्रेष्ठता एवं पूज्यता का सूचक है। सर्वोपरि श्रेष्ठ तो परब्रह्म ही है। ब्रह्म कलांश के रहने की सूचना ही 'श्री' शब्द द्वारा व्यक्त होती है। जिनमें अंशत: ब्रह्मकला प्रकट हो, वे ही शब्द 'श्री' सहित व्यवहृत होते हैं। सर्वकारणभूता आत्मशक्ति त्रिपुरेश्वरी साक्षात् ब्रह्मरूपिणी होने के कारण केवल 'श्री' शब्द से ही व्यवहृत होती है। इसी कारण साहि श्रीगमृता सताम्' आदि कहकर श्रुति भी इसी परब्रह्म स्वरूपिणी विद्या की स्तुति करती है।

विभिन्न देवताओं की आराधना से धन-धान्य, पुत्र, स्त्री, आदि लौकिक-फल प्राप्त होते हैं, परन्तु 'श्री विद्या' के उपासकों को लौकिक-फल के साथ ही आत्मज्ञान की उपलब्धि भी होती है। आत्मज्ञानी को प्राप्त होने वाली शोकोत्तीर्णता श्री विद्योपासक को भी अवश्य मिलती है, इस कारण फलंश्य से 'श्री विद्या' ही 'ब्रह्मविद्या' है।

'श्री विद्या' को क्रमिक-उपासना यदि सौभाग्यवश सद्गुरु सम्प्रदाय से प्राप्त हो जाय तो, सामान्य मनुष्य भी क्रमश: उपासना के परिपाक एवं श्रीमाता की अभिन्नता रूप गुरु-कृपा से इसी जन्म में आत्मज्ञानी हो सकता है।

शास्त्रों में 'कहा गया है कि श्री विद्या के उपासक को भोग तथा अपवर्ग दोनों ही प्राप्त होते हैं।

कामेश्वरी-तत्त्व

'स्वतन्त्र तन्त्र' में कहा है—"स्वात्मा ही विश्वात्मिका ललिता देवी है, उसका विमर्श ही उसका रक्त वर्ण है और इस प्रकार की भावना ही उसकी उपासना है।"

स्वात्मशक्ति श्रीविद्या ही ललिता-कामेश्वरी हैं। वे महाकामेश्वर के अङ्क में विराजमान हैं। उपाधि-रहित शुद्ध स्वात्मा ही महाकामेश्वर है। सदानन्दरूपा उपाधिपूर्ण स्वात्मा ही पर-देवता महा त्रिपुर सुन्दरी ललिता है। निष्कर्ष यह है कि 'स्व' अर्थात् 'उपासक का आत्मा' ही अर्थात् अन्तर्यामी ही वह सदानन्द-उपाधि पूर्ण ललिता है।

सत्त्व, चित्त्व तथा आनन्द स्वरूप धर्मत्रयनियुक्त धर्मिमात्र वही स्वात्मा श्री विद्या ललिता का आधारभूत महाकामेश्वर है।

कामेश्वर-कामेश्वरी के रक्त वर्ण का ध्यान किये जाने का रहस्य यह है— "लौहित्यमेतस्य सर्वस्य विमर्शः।' महाकामेश्वर, ललिता तथा स्वयं—इन तीनों का विमर्श अर्थात् स्वात्मा में अनुसन्धान करना ही ललिता के रक्तवर्ण की भावना है।

कामेश्वर तथा कामेश्वरी का सम्बन्ध लाक्षाद्रव तथा पट के सम्बन्ध की भांति सामरस्यात्मक है—इस प्रकार की वासना ही रक्तवर्ण की भावना है। कामेश्वर शिव की शिवता महाशक्ति के उल्लासरूप सान्निध्य से ही स्फुरित होती है।

पञ्च प्रेतासन—श्रीविद्या राज राजेश्वरी पञ्च प्रेतासन पर विराजमान है। (१) ब्रह्मा, (२) विष्णु, (३) रुद्र, (४) ईश्वर और (५) सदाशिव—ये पञ्च-महाप्रेत हैं।

जब ब्रह्मादि अपनी-अपनी शक्तियों से रहित होकर कार्य-अक्षम हो जाते हैं, तब वे 'प्रेत' कहे जाते हैं। उनमें भी ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और ईश्वर—ये चार पाद हैं तथा सदाशिव फलक है, उस पर ही महाकामेश्वर के अङ्क में महाकामेश्वरी विराजमान हैं।

आयुध—कामेश्वरी की चार भुजाओं में (१) पाश, (२) अङ्कुश, (३) इक्षु-धनु तथा (४) पञ्च-पुष्पबाणों का ध्यान किया जाता है।

'उत्तर चतुःशास्त्र' में इन आयुधों का यथार्थ स्वरूप इस प्रकार कहा गया है—

(१) 'पाश' इच्छा-शक्ति; 'अंकुश' ज्ञान-शक्ति, तथा 'धनुष' और 'बाण' क्रिया-शक्ति के प्रतीक हैं।

चतुर्विध रूप—आत्म शक्ति 'श्रीविद्या' के (१) स्थूल, (२) सूक्ष्म तथा (३) पर—ये तीन स्वरूप प्रकट हैं। इनमें पहला स्थूल रूप मन्त्र-सिद्धि प्राप्त साधकों के नेत्र तथा हाथों के प्रत्यक्ष का विषय है। वे नेत्रों से उस लोकोत्तरआह्लादकारक तेजोराशि के नेत्रों से दर्शन करते हैं तथा हाथों से चरणों का स्पर्श करते हैं।

दूसरा मन्त्रात्मक 'सूक्ष्म' रूप पुण्यात्मा साधकों की कर्णेन्द्रिय तथा वागीन्द्रिय के प्रत्यक्ष का विषय है। 'मन्त्र-मयी देवता' के सिद्धान्तानुसार मन्त्र वर्णों में ही देवता के शरीरावयवों की कल्पना करने से वह मन्त्रात्मक स्वरूप मन्त्र

ध्वनि श्रवण रूप में कर्णेन्द्रिय से तथा मन्त्रोच्चारण के रूप में वागीन्द्रिय से प्रत्यक्ष किया जाता है।

तीसरा वासनात्मक रूप महापुण्यवान् साधकों के केवल मन-इन्द्रिय द्वारा ही गृहीत होता है। आत्मशक्ति जगदम्बा का चैतन्य ही स्वरूप है और आत्म-चैतन्य का अनुभव मन से ही हो पाता है।

गुरू के साथ शिष्य यदि अपनी आत्मशक्ति की अभेद भावना करे तो उस शिष्य को भी श्री विद्या के साथ पूर्ण अभेद तत्क्षण प्राप्त हो जाता है। अतः श्री विद्या के साथ पूर्ण अभेद प्राप्त करने के लिए गुरु-कृपा के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है; अस्तु गुरु के साथ अभेद-भावना की नितान्त आवश्यकता है।

श्री विद्या के द्वादश सम्प्रदाय

'श्री विद्या' के १२ उपासक प्रसिद्ध हैं—(१) मनु, (२) चन्द्र, (३) कुवेर, (४) लोपामुद्रा, (५) मन्मथ अर्थात् कामदेव, (६) अगस्ति, (७) अग्नि, (८) सूर्य, (९) इन्द्र, (१०) स्कन्द अर्थात् कुमार कार्तिकेय, (११) शिव और क्रोध भट्टारक अर्थात् दुर्वासा ऋषि।

इनमें से प्रत्येक का अलग-अलग सम्प्रदाय था। परन्तु वर्तमान समय में केवल चतुर्थ तथा पंचम उपासक अर्थात् लोपामुद्रा एवं मन्मथ—इन दोनों के सम्प्रदाय ही प्रचलित हैं। इनमें भी प्रायः मन्मथ-सम्प्रदाय अर्थात् कामराज विद्या का ही सर्वतोमुख प्रचार है।

'त्रिपुरा-रहस्य' के माहात्म्य-खण्ड में वर्णित कथाओं के अनुसार कामदेव ने अपनी निर्व्याज आराधना से श्रीमाता को प्रसन्न कर, उनसे अनेक दुर्लभ-वर प्राप्त किये तथा स्वोपासित कामराज-विद्या के उपासकों के लिए अनेक सुविधाएँ भी उपलब्ध करा दीं, अतः तभी से 'कामराज-विद्या' का विशेष प्रचार हुआ है।

कामराज-विद्या ककारादि पञ्चदश वर्णात्मक है। इसे 'कादि विद्या' भी कहते हैं।

लोपामुद्रा-विद्या भी पञ्चदशवर्णात्मिका ही है। 'इसे 'हादि विद्या' कहते हैं।

कामेश्वर के अङ्क में स्थित कामेश्वरी के पूजा-मन्त्रों में 'कादि' तथा 'हादि'—इन दोनों विद्याओं से युक्त नाममन्त्र की योजना सत्-सम्प्रदायों में प्रचलित है। शेष मनु, चन्द्र आदि दश विद्याएँ केवल आम्नाय-पाठ में ही उल्लिखित हैं। प्रचलित उपासना पद्धतियों में उनका विशेष उपयोग नहीं होता।

त्रिपुरा-तत्त्व

श्रीकामराज-विद्या की अधिष्ठात्री 'श्रीविद्या' का ही नामान्तर 'त्रिपुरा' है। त्रिमूर्तियों से 'पुरा' अर्थात् पुरातन होने के कारण 'त्रिपुरा' नाम हुआ।

'गौड़पदीय सूत्र' के अनुसार 'तत्त्वत्रयेण भिदा' अर्थात् तीनों तत्त्वों से भिन्न, गुणत्रयातीता होने अथवा त्रिगुण नियन्त्री शक्ति होने के कारण इनका नाम 'त्रिपुरा' है।

'त्रिपुरार्णव' में 'त्रिपुरा' शब्द की प्रकारान्तर से निरुक्ति की गई है। यथा—इडा, पिङ्गला और सुषुम्णा—ये तीन नाड़ियाँ हीं 'त्रिपुरा' है। वह शक्ति मन, बुद्धि तथा चित्त—इन तीन पुरों में निवास करती है, इसलिए 'त्रिपुरा' कही जाती है।

प्रकारान्तर से 'त्रिपुरा' शब्द की निरुक्ति में कहा गया है—(१) त्रिमूर्त्ति अर्थात ब्रह्मा, विष्णु, महेश की जननी होने से, (२) त्रयी अर्थात् ऋक्, यजुः साम मयी होने से एवं (३) महाप्रलय में त्रिलोकी को अपने में लीन कर लेने से जगदम्बा 'श्री विद्या' का 'त्रिपुरा' नाम प्रसिद्ध हुआ है।

'वामकेश्वर तन्त्र' में कहा गया है—'ब्रह्मा, विष्णु तथा ईश रूपिणी श्री विद्या' के ही ज्ञान-शक्ति, क्रिया-शक्ति और इच्छा-शक्ति—ये तीन स्वरूप हैं। इच्छा शक्ति उसका शिरोभाग है, ज्ञान शक्ति मध्यभाग है तथा क्रियाशक्ति अधोभाग है। इस प्रकार शक्ति त्रयात्मक होने के कारण ही उसे 'त्रिपुरा' कहा जाता है।

श्री विद्या के लीला-विग्रह

यों तो 'श्री विद्या' के लीला-विग्रहों (अवतारों) की कोई गणना नहीं की जा सकती, तथापि 'त्रिपुरारहस्य' महात्म्य-खण्ड एवं 'ब्रह्माण्ड पुराण' उत्तरखण्ड आदि में वर्णित प्रमुख विग्रह (अवतार) निम्नलिखित हैं—

(१) कुमारी—इन्द्रादि देवताओं का गर्व नष्ट करने हेतु श्री माता 'कुमारी' रूप में प्रकट हुई थी।

(२) त्रिरूपा—कारण पुरुष ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव को उनके अधिकृत सृष्टि, स्थिति एवं संहार कार्यों में सहायता करने के लिए श्रीमाता ने (१) वाणी, (२) रमा तथा (३) रुद्राणी शक्तियों को अपने शरीर से उत्पन्न कर, क्रमशः तीनों देवताओं को पत्नी रूप में सौंपा।

(३) काली—आदि दैत्य मधु तथा कैटभ के कुलों में उत्पन्न शुम्भ-निशुम्भ नामक दैत्यों ने उग्र तपस्या द्वारा ब्रह्मा से जब पुरुष मात्र से अजेय होने का वर

प्राप्त कर लिया और वे तीनों लोकों पर अत्याचार करने लगे, उस समय ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि देवताओं ने भगवती त्रिपुराम्बा की स्तुति की। उस समय भगवती ने प्रसन्न होकर गौरी को भेजा तथा गौरी ने काली रूप धारण कर, शुम्भ-निशुम्भ द्वारा प्रेषित चण्ड-मुण्ड नामक दैत्यों का संहार किया।

(४) चण्डिका—इनके अवतार की कथा 'दुर्गा सप्तशती स्तोत्र' में प्रसिद्ध है।

(५) काली—इनके अवतार की कथा भी 'दुर्गा सप्तशती' में वर्णित है।

(६) दुर्गा—महिषासुर का वध करने हेतु भगवती ने दुर्गा का अवतार लिया था। यह कथा भी 'दुर्गा सप्तशती' में वर्णित है।

(७) ललिता—पूर्वकाल में 'भण्ड' नामक असुर ने शिवजी से अभय-वर प्राप्त कर, तीनों लोकों पर अधिकार कर लिया तथा देवताओं के हविर्भाग का स्वयं उपभोग करने लगा। उस समय इन्द्राणी भयभीत होकर भगवती गौरी की शरण में गईं। इधर भण्ड ने 'विशुक्र' को पृथ्वी का तथा 'विषङ्ग' को पाताल का अधिपत्य देकर स्वय इन्द्रासन पर अधिकार कर लिया तथा इन्द्र आदि देवताओं को अपनी पालकी ढोने पर नियुक्त किया। तब शुक्राचार्य जी ने दया के वशीभूत हो देवताओं को उस दुर्गति से बचाया। अन्ततः भण्ड दैत्य जब गौरी के समीप इन्द्राणी को लेने के उद्देश्य से पहुँचा, तब देवताओं ने हिमाचल में त्रिपुरादेवी के उद्देश्य से महायज्ञ आरम्भ किया, उसमें से अन्तिम समय भगवती त्रिपुराम्बा प्रकट हुईं फिर उन्होंने श्री चक्रात्मक रथ पर अरूढ़ होकर दैत्यराज भण्ड से महा-भयानक युद्ध किया तथा महाकामेश्वरास्त्र का प्रयोग कर, उसे सपरिवार मार कर, देवताओं को निर्भय किया।

(८) भारती—एक बार ब्रह्मा की सभा में देवर्षि नारद ने जब सावित्री की स्तुति की तो ब्रह्मा ने उपहास किया। फलतः सावित्री ने ब्रह्मा को बहुत डाँटा। उस समय ब्रह्मा ने सावित्री से कहा—तुमने अपने पति का (मेरा) अपमान किया है, अतः तुम पत्नीत्व के अयोग्य हो। आज से तुम मेरे साथ यज्ञों में नहीं बैठ सकोगी।' यह सुनकर सावित्री बोली—'यदि मैं तुम्हारी पत्नी होने योग्य नहीं हूँ तो अब कोई शूद्र-कन्या ही तुम्हारी पत्नी होगी।'

तब ब्रह्मा ने सावित्री को शूद्र कन्या-जन्म में पूर्व-वृत्तान्त के स्मरण न रहने का शाप दिया तथा सावित्री ने ब्रह्मा को निन्द्य-स्त्री में काम भावना ग्रस्त होने का शाप दे डाला। तबसे सावित्री अन्यत्र जाकर रह उठीं।

फिर एक बार ब्रह्मा ने यज्ञ करने का विचार किया। उन्होंने सावित्री को बुलाया, परन्तु वे नहीं आईं, तब मुहूर्त निकल जाने के भय से भूतल से एक गोप-

कन्या लाकर उसके साथ ब्रह्मा का विवाह कराया गया तथा यज्ञ की यथाविधि समाप्त हुई।

उस समय सावित्री अत्यन्त क्रुद्ध हुईं। जब उनके क्रोध से तीनों लोक दग्ध होने लगे तब पार्वती की प्रार्थना पर भगवती त्रिपुराम्बा ने 'भारती' के रूप में प्रकट होकर सावित्री को शान्त किया।

(९) गौरी तथा (१०) रमा—एक बार भूलोक में राजा वीरव्रत के शासन काल में मनुष्यों ने यज्ञ-योगादि कार्य जब बन्द कर दिये तो इन्द्रादि देवताओं ने श्री महालक्ष्मी की आराधना की। महालक्ष्मी ने अपने पुत्र कामदेव को भेजा। उसने राजा वीरव्रत के सैनिकों को युद्ध में मार भगाया। यह देखकर राजा ने शंकर जी की आराधना की तथा उनसे विजय-प्राप्ति का वर लेकर शंकर प्रदत्त त्रिशूलात्मक बाण से कामदेव को मार डाला। यह समाचार पाकर भगवती लक्ष्मी ने त्रिपुराम्बा के प्रसाद से अमृत छिड़क कर कामदेव को पुनरुज्जीवित कर दिया। 'शंकर के प्रभाव से मेरी पराजय तथा मृत्यु हुई थी'—यह जानकर कामदेव शंकर से द्वेष मानने लगा तथा भगवती त्रिपुराम्बा की आराधना से शक्ति-संचय कर शंकर को हराने का निश्चय कर लिया।

उसी समय भगवती लक्ष्मी ने त्रिपुराम्बा का स्मरण किया, तो उनके द्वारा प्रेषित 'भगवती गौरी' उनके पास पहुँचीं। लक्ष्मी ने जब उन्हें कामदेव के निश्चय के बारे में बताया तो उन्होंने लक्ष्मी तथा कामदेव को समझाते हुए यह कहा कि 'शंकर सर्वोपरि हैं, उनसे स्पर्द्धा करना अनुचित है।'

यह सुनकर कामदेव ने रुष्ट होकर कहा—"मैं शंकर पर विजय अवश्य प्राप्त करूँगा।' तब गौरी ने क्रुद्ध होकर उसे शाप दिया कि तुम 'शंकर के द्वारा दग्ध होगे।'

गौरी के इस शाप को सुनकर लक्ष्मी क्रुद्ध हो गईं। तब उन्होंने गौरी को शाप देते हुए कहा—'तुम भी पति निन्दा सुन कर दग्ध होओगी।' यह सुनकर गौरी ने भी लक्ष्मी को यह शाप दिया कि तुम पति-विरह का दुःख तथा सपत्नियों से क्लेश प्राप्त करोगी।

इसके बाद लक्ष्मी तथा गौरी में युद्ध प्रारम्भ हो गया। तब ब्रह्मा एवं सरस्वती की मध्यस्थता से किसी प्रकार शान्ति स्थापित हुई।

फिर शिवजी को जीतने के उद्देश्य से कामदेव ने अपनी माता लक्ष्मी द्वारा त्रिपुराम्बा का "सौभाग्याष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र" प्राप्त कर, मंदराचल की गुफा में बैठकर भगवती की आराधना की, फलतः उन्होंने स्वप्न में कामदेव को गुप्त 'पञ्चदशी-विद्या' का उपदेश किया। तत्पश्चात् कामदेव जब एकाग्रभाव से तीन

दिव्य वर्षों तक श्री माता की आराधना करता रहा तब भगवती ने प्रत्यक्ष प्रकट होकर, उसे 'अजेय' होने का वर दिया तथा अपने धनुष-वाण से धनुष-वाण उत्पन्न कर कामदेव को दिये।

बाद में दक्ष यज्ञ के समय पति की निन्दा सुनकर गौरी-यज्ञ कुण्ड में भस्मी-भूत हुईं तथा कालान्तर में हिमाचल के घर जन्म लेकर पुनः शिव-पत्नी बनीं। फिर तारकासुर के वध हेतु शिव के पुत्र को सेनापति बनाना आवश्यक होने पर, शिवजी की तपस्या भंग करने के लिए कामदेव ने उन पर अपने शस्त्रों का प्रयोग किया, जिसमें वह सफल रहा, परन्तु जब शिवजी ने अपने तृतीय नेत्र से उसे देखा तो वह जलकर भस्म हो गया।

कालान्तर में लक्ष्मी ने भी श्री विष्णु के रामावतार के समय सीता के रूप में पति-विरह का कष्ट पाया तथा कृष्णावतार के समय रुक्मिणी के रूप में सपत्नियों द्वारा क्लेश भी पाया। इस प्रकार सभी के शाप तथा वरदान फलप्रद रहे।

२ | श्री यन्त्र तत्त्वं

पिछले प्रकरण में बताया जा चुका है कि 'श्री विद्या' के द्वादश उपासकों के द्वारा उपासना-पद्धति के बारह सम्प्रदाय थे, परन्तु वर्तमान समय में केवल 'लोपामुद्रा' तथा 'मन्मथ'—ये दो सम्प्रदाय ही प्रचलित हैं। लोपामुद्रा-सम्प्रदाय की विद्या को 'हादि विद्या' एवं मन्मथ-सम्प्रदाय की विद्या को 'कादि विद्या' कहते हैं।'

तान्त्रिक-उपासना में यन्त्र को देवता का शरीर तथा मन्त्र को उसकी आत्मा माना गया है। इस उपासना विधि का ध्येय अद्वैत-सिद्धि है तान्त्रिक-उपासक के लिए सम्पूर्ण विश्व ही उसके इष्टदेव की मूर्ति है अतः साधक का शरीर भी विश्व की प्रतिमूर्ति होने के कारण उसी इष्टदेव का रूप है। यह तादात्म्य यन्त्रों के द्वारा होता है।

भगवती त्रिपुर सुन्दरी का यन्त्र 'श्रीयन्त्र' के नाम से प्रसिद्ध है। इसे यन्त्र-राज अथवा सर्वश्रेष्ठ यन्त्र भी कहते हैं। इसमें समस्त ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति तथा विकास को प्रदर्शित किया गया है। साथ ही यह यन्त्र मानव-शरीर का द्योतक भी है।

श्री यन्त्र-लेखन

कुलाचार, समयाचार, सम्प्रदाय तथा आचार्य-भेद से श्रीयन्त्र-लेखन के अनेक प्रकारों का वर्णन पाया जाता है।

सामान्यतः श्रीयन्त्र (१) बिन्दु, (२) त्रिकोण, (३) अष्टार, (४) अन्तर्दशार, (५) बहिर्दशार, (६) चतुर्दशार, (७) अष्टदल पद्म, (८) षोडशदल पद्म तथा चतुरस्र—इन नव चक्रों से बनता है। श्रीमत् शकराचार्य ने भी 'सौन्दर्य लहरी' में श्री यन्त्र के इसी स्वरूप का वणन किया है। यथा—

"चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिव युवतिभिः पञ्चभिरपि
प्रभिन्नाभिः शम्भोर्नवभिरपि मूल प्रकृतिभिः।

चतुश्चत्वारिंशद्वसुदल कलाश्रत्रिबलयत्रिरेखाभिः
सार्धं तव शरणकोणाः परिणताः ॥"

(सौन्दर्य लहरी, ५१)

कुछ आचार्य षोडशदलपद्म के अनन्तर वृत्तत्रय को भी अतिरिक्त चक्र मानते हैं। यथा—

"विन्दुत्रिकोण वसुकोणदशार युग्म
मन्वस्रनागदल संयुत षोडशारम्।
वृत्तत्रयञ्च धरणीसदनत्रयञ्च
श्री चक्रराज मुदितं पर देवतायाः॥"

(यामल)

उनके मत से 'विन्दु' सर्व-व्यापक है, अतः वे उसकी गणना नव-चक्रों में नहीं करते।

कुछ आचार्य तथा आधुनिक-साधक भी चतुर्दशार के अनन्तर एक मर्यादा-वृत्त तथा अष्टदलकर्णिका के लिए एक वृत्त तथा अष्टदल के बाद भी षोडशदल-कर्णिका, तदनन्तर मर्यादा-वृत्त—इस प्रकार वृत्तत्रय बनाते हैं।

कोई मर्यादा-वृत्त न देकर केवल कर्णिका-वृत्त ही देते हैं तथा षोडशदल के अनन्तर अतिरिक्त वृत्तत्रय देते हैं।

कुछ उपासक वृत्त देते ही नहीं हैं। इसी भाँति चतुरस्र के विषय में भी मतभेद पाये जाते हैं। कोई एक रेखात्मक चार द्वार युक्त चतुरस्र मानते हैं, तो कोई तत्तद् दिशाओं में, विभिन्न संख्याओं से दो द्वारयुक्त चतुरस्र लिखते हैं। कोई चार रेखाओं का चतुर्द्वार तथा द्वादशद्वार भी लिखते हैं।

अधिकतर त्रिरेखात्मक चतुर्द्वार युक्त चतुरस्र ही पाया जाता है। अतः विन्दु से चतुर्दशार तक ही प्रधान मन्त्र माना जाता है। यथार्थ श्री यन्त्र शिव-शक्ति का सम्पुट स्वरूप है। चतुर्दशार तक ही नवचक्रों का अन्तर्भाव है। इनमें त्रिकोण, अष्टकोण, अन्तर्दशार, बहिर्दशार और चतुरस्र—ये पाँच शक्ति-चक्र हैं तथा विन्दु, अष्टदल, षोडशदल एवं चतुरस्र—ये चार शिव-चक्र उन पाँचों के अन्तर्भूत हैं। अर्थात् त्रिकोण में विन्दु, अष्टार में अष्टदल, दोनों दशार में षोडशार तथा चतुर्दशार में चतुरस्र अन्तर्भूत हैं।

इस प्रकार इस यन्त्र में शिव-शक्ति का पारस्परिक अविनाभावरूप सम्मिश्रण है, अतः चतुर्दशार तक ही प्रधान यन्त्र की सीमा है। चतुर्दशार के बाहर

लिखना केवल शिष्य के बुद्धि-विकास के लिए ही है। यही सर्वसम्मत सिद्धान्त भी है।

प्रायः सर्वत्र प्रचलित 'वामकेश्वर-तन्त्र' के आधार पर यन्त्र-लेखन प्रकार का दिग्दर्शन कराने हेतु सर्व प्रथम उपयोगी-परिभाषाओं को लिखा जाता है। यथा—

(१) दिशा—साधक जिस दिशा की ओर मुख करके यन्त्र-लेखन करे, उसे पूर्व दिशा समझ कर, अन्य दिशाओं की कल्पना उसी के आधार पर कर लेनी चाहिए।

(२) शक्ति—ईशान से अग्निकोण तक एक सीधी रेखा खींचकर तथा दोनों कोणों से दो आड़ी रेखाएँ खींचकर पश्चिम में जोड़ देने से जो अपने सन्मुख एक अधोमुख त्रिकोण बनेगा, वह 'शक्ति त्रिकोण' होगा। इसी को शक्ति, पार्वती, योनि आदि शब्दों से भी व्यक्त किया जाता है।

(३) शिव—वायव्य कोण से नैर्ऋत्य कोण तक एक सीधी रेखा खींचकर, इन दोनों कोणों से दो रेखाएँ ऊपर की ओर लेजाकर पूर्व दिशा में मिला देने से जो ऊर्ध्वमुख-त्रिकोण बनेगा, उसी की शिव, वह्नि, महेश्वर अथवा अग्नि आदि संज्ञा होती है।

उक्त विधि से शक्ति के तीन कोण ईशान, आग्नेय तथा पश्चिम एवं शिव के तीन कोण वायव्य, नैर्ऋत्य तथा पूर्व कोण नाम से प्रसिद्ध हैं।

(४) पार्श्व-रेखा – वाम तथा दक्षिण ओर की आड़ी रेखाओं को 'पार्श्व-रेखा' कहते हैं। कहीं-कहीं इन्हें 'ऊर्ध्व रेखा' और 'अधो रेखा' भी कहा जाता है।

(५) तिर्यक् रेखा – ईशान से आग्नेय तक तथा वायव्य से नैर्ऋत्य तक खींची गई रेखाएँ 'तिर्यक् रेखा' कही जाती है। इन्हें 'पूर्व-रेखा तथा पश्चिम रेखा' भी कहा जाता है।

(६) भेदन – एक रेखा के ऊपर दूसरी रेखा के आ जाने को 'भेदन' कहते हैं।

(७) सन्धि - 'भेदन' करने वाली दोनों रेखाओं के संयोग को 'सन्धि' कहते हैं।

(८) मर्म —'भेदन' करने वाली तीन रेखाओं के संयोग को 'मर्म' कहते हैं।

(९) ग्रन्थि—मर्म तथा सन्धि को 'ग्रंथि' कहा जाता है।

(१०) डमरू—शक्ति के पश्चिम-कोण तथा वह्नि (शिव) के पूर्व-कोण के मिलने से 'डमरू' बनता है।

(११) वृत्त—चन्द्राकार रेखा को 'वृत्त' कहा जाता है।

(१२) परिवेष – चतुरस्र रेखा को 'परिदेष' कहते हैं।

(१३) भूपुर—त्रिरेखात्मक वृत्त को 'भूपुर' कहते हैं।

यन्त्र-लेखन हेतु सर्वप्रथम शक्ति-त्रिकोण बनाकर, उसे मध्य भाग में उत्तर से दक्षिण की ओर एक तिर्यक् रेखा से भेदन करें। इस तिर्यक् (तिरछी) रेखा के दोनों सिरों से दा पार्श्व-रेखाएँ खींचकर, प्रथम शक्ति के पश्चिम कोण के पश्चिम की ओर मिलादें। यह दूसरी शक्ति बन गई।

पूजा-क्रम के अनुसार प्रथम शक्ति के भेदन से बने हुए त्रिकोण के मध्य में विन्दु रख देना चाहिए।

अव प्रथम शक्ति की तियक् रेखा के मध्य भाग से कुछ ऊपर पूर्व की ओर से दोनों भागों में सन्धि तथा मर्म वनाती हुई दो पार्श्व-रेखाएँ खींचें। इसी प्रकार प्रथम शक्ति के पश्चिमकोण को पश्चिम की ओर से स्पर्श करती हुई वायव्य से नैर्ऋत्य की आर एक तिर्यक्-रेखा खींचें और उन पार्श्व-रेखाओं का इसके दोनों सिरों से जोड़ दें। यह प्रथम 'वह्नि' (शिव) बन गया।

इस प्रकार आठों दिशाओं में आठ त्रिकोणों से अष्टार तथा मध्य में एक त्रिकोण और उसके मध्य में विन्दु होने से विन्दु, कोण तथा अष्टार—तीन यन्त्र बन गये। इन तीन यन्त्रों से निर्मित यह चक्र 'नवयोनिचक्र' के नाम से भी प्रसिद्ध है। इसमें नौ त्रिकोण, छः सन्धि, दा मर्म तथा दो डमरू होते हैं। प्रथम शक्ति की वाम एवं दक्षिण रेखाओं से वह्नि की पार्श्व-रेखाओं का दानों दिशाओं में संयोग होने से और पुनः द्वितीय शक्ति की तिर्यक्-रेखा द्वारा भेदन होने से उत्तर-दक्षिण मर्म वन गये। सन्धि और डमरू की प्रक्रिया इसी प्रकार समझनी चाहिए।

अव अन्तर्दशार की विधि को समझ लें—

उपर्युक्त नौ योनि वाले चक्र में पहली शक्ति की तिर्यक्-रेखा को दोनों सिरों की ओर कुछ बढ़ायें तथा उस बढ़ी हुई रेखा के दोनों सिरों से दो पार्श्व-रेखा दूसरी शक्ति के पश्चिम कोण से कुछ पश्चिम में जोड़ दें।

यह तीसरी शक्ति बन गई। इसके भीतर पूर्व त्रिकोण को छोड़कर सम्पूर्ण यन्त्र आ जाता है।

अव प्रथम वह्नि की तिर्यक्-रेखा को उसी प्रकार दोनों ओर को वढ़ायें तथा उस बढ़ी हुई रेखा के दोनों सिरों से दो पार्श्व-रेखाएँ खींचकर, प्रथम वह्नि के पूर्व-कोण को कुछ पूर्व की ओर लेजाकर मिलादें। इस प्रकार दूसरा वह्नि त्रिकोण वन गया। इस चक्र में ६ कोण और बढ़ गये तथा तीसरी शक्ति एवं दूसरे वह्नि के संयोग से दोनों पार्श्वों में दो डमरू भी बन गये।

फिर प्रथम शक्ति की पार्श्व-रेखाओं को क्रमशः ईशान तथा आग्नेयकोण में ऊपर प्रथम वह्नि के पूर्वकोण तक बढ़ा कर, प्रथम वह्नि के पूर्व कोण को स्पर्श करती हुई तिर्यक्-रेखा से उक्त पार्श्व-रेखाओं के सिरों को जोड़ दें। इस प्रकार प्रथम वह्नि की दोनों पार्श्व रेखाओं को वायव्य तथा नैर्ऋत्य-कोण में द्वितीय शक्ति के पश्चिम कोण तक बढ़ाकर इसी कोण को स्पर्श करती हुई तिर्यक्-रेखा से बढ़ी हुई पार्श्व-रेखाओं के सिरों को जोड़ दें। इस प्रकार चार कोण और बढ़ जाने से अन्तर्दशार बन जाता है।

अब 'बहिर्दशार' की विधि बताते हैं—

प्रथम वह्नि तथा द्वितीय वह्नि की मध्यवर्तिनी आद्य-शक्ति की पूर्व दिशा में स्थित तिर्यक्-रेखा के दोनों कोणों को (अन्तर्दशार के द्वितीय तथा दशम कोण को) क्रमशः ईशान तथा आग्नेय की ओर बढ़ाकर, ईशान-आग्नेय कोण बनाती हुई दो पार्श्वरेखाएँ नीचे की ओर खींच कर तृतीय शक्ति के पश्चिम कोण से कुछ पश्चिम की ओर लेजाकर मिलादें।

यह बहिर्दशार बनाने वाली चतुर्थ शक्ति बन गई।

फिर, प्रथम वह्नि की पश्चिम रेखा के दोनों कोणों को (अर्थात् अन्तर्दशार के पाँचवें एवं सातवें कोणों को) उत्तर-दक्षिण की ओर बढ़ा कर, उत्तर-दक्षिण कोण बनाती हुई, उसके दोनों सिरों से दो पार्श्व रेखाएँ चतुर्थ शक्ति की दोनों पार्श्व-रेखाओं को भेदन करती हुई, द्वितीय वह्नि के पूर्व-कोण से पूर्व की ओर लेजाकर मिलादें।

यह बहिर्दशार का घटक तृतीय वह्नि बन गया। इस प्रकार अन्तर्दशार के ऊपर एक षट्कोण बन जाएगा। तत्पश्चात् आद्य-शक्ति की वाम तथा दक्षिण रेखाओं को ईशान एवं अग्नि कोण की ओर द्वितीय वह्नि के पूर्वकोण के बराबर तक बढ़ाकर, उनके सिरों को द्वितीय वह्नि के पूर्व-कोण को स्पर्श करती हुई तिर्यक्-रेखा से जोड़ दें तथा आद्य वह्नि की दोनों पार्श्व-रेखाओं को क्रमशः नीचे वायव्य-नैर्ऋत्य कोण की ओर तृतीय शक्ति के पश्चिमकोण के बराबर तक बढ़ाकर, उक्त कोण को स्पर्श करती हुई एक तिर्यक्-रेखा खींचकर, उसके द्वारा उक्त पार्श्व रेखाओं को जोड़ दें। इस प्रकार 'बहिर्दशार' बन गया।

अब 'चतुर्दशार' की विधि बताते हैं—

चतुर्थ शक्ति को पूर्व की दिशा में स्थित तिर्यक्-रेखा को (अर्थात् बहिर्दशार के तीसरे एवं नवमकोण को) क्रमशः उत्तर-दक्षिण की ओर बढ़ाकर, उस बढ़ी हुई रेखा के दोनों सिरों से दो पार्श्व-रेखाएँ नीचे की ओर खींचकर चतुर्थ शक्ति के पश्चिम-कोण से पश्चिम में लेजाकर मिलादें।

यह चतुर्दशार बनाने वाली पंचम शक्ति बन गई ।

इसी प्रकार तृतीय वह्नि की पश्चिम दिशा में स्थित तिर्यक्-रेखा के दोनों कोणों (अर्थात् बहिर्दशार के चौथे, आठवें कोणों) को क्रमशः वायव्य-नैर्ऋत्य की ओर बढ़ाकर, बढ़ी हुई रेखा के दोनों अग्र-कोणों से पूर्व की ओर दो पार्श्व रेखाएँ पञ्चम शक्ति की पार्श्व-रेखाओं को भेदन करती हुई खींचकर तृतीय वह्नि के पूर्वकोण में ले जाकर मिलादें। यह चतुर्थ वह्नि बन गया। इस पंचम शक्ति तथा चतुर्थ वह्नि के योग से चतुर्दशार का सम्पादक षट्कोण बन गया।

फिर चतुर्थ शक्ति की पार्श्वरेखाओं को क्रमशः ईशान-आग्नेय की ओर बढ़ायें तथा इसी प्रकार आद्य-शक्ति की पूर्व रेखा के दोनों सिरों को क्रमशः ईशान-आग्नेय की ओर बढ़ाकर चतुर्थ शक्ति की पार्श्व-रेखाओं के सिरों से जोड़ दें। पुनः आद्य-शक्ति की दोनों पार्श्व-रेखाओं को यहाँ तक बढ़ायें कि वे चतुर्थ वह्नि की पार्श्वरेखाओं का भेदन करती हुई तृतीय वह्नि के पूर्वकोण के बराबर पहुँच जायें। फिर उक्त कोण को स्पर्श करती हुई एक पूर्व-रेखा खींचकर, उससे इन पार्श्व-रेखाओं के सिरों को जोड़ दें। इस प्रकार चक्र के पूर्वभाग में चार कोण और बढ़ जायेंगे। तत्पश्चात् वह्नि की पार्श्व रेखाओं को क्रमशः वायव्य-नैर्ऋत्य की ओर बढ़ायें तथा आद्य-वह्नि की पश्चिम रेखा के दोनों कोणों को क्रमशः वायव्य-नैर्ऋत्य की ओर बढ़ाकर, उक्त पार्श्व-रेखाओं को इस रेखा से मिलादें। इसी प्रकार आद्य-वह्नि की पार्श्व-रेखाओं को क्रमशः वायव्य-नैर्ऋत्य की ओर चतुर्थ शक्ति के पश्चिम कोण के बराबर तक बढ़ायें तथा इस कोण को स्पर्श करती हुई एक पश्चिम रेखा खींचकर उससे उक्त रेखाओं के सिरों को मिलादें। इस प्रकार 'चतुर्दशार' बन जाएगा।

अब इसके बाह्य भाग में शिव-चक्र लेखन की विधि लिखी जाती है।

पूर्व लिखित अनुसार मर्यादा वृत्त एवं कर्णिका वृत्त बनाकर अथवा न बनाकर, उक्त चक्र को १६ भागों में विभाजित करें, फिर एक-एक के अन्तर से अष्टदल-कमल बनायें, तदनन्तर (मतान्तर से) कर्णिका वृत्त बना कर, उसके बत्तीस भाग करके, एक-एक भाग के अन्तर से षोडशदल कमल बनायें। फिर (मतान्तर से) मर्यादा-वृत्त अथवा वृत्तत्रय देकर भूपुर के लिए चार द्वारों सहित अथवा (मतान्तर से) बिना द्वार के ही एक रेखा, तीन रेखा अथवा चार रेखाएँ खींचें।

उक्त विधि से सम्पूर्ण 'श्री यन्त्र' बन जाता है।

उपर्युक्त 'श्रीयन्त्र-लेखन-विधि' को कोई-कोई आचार्य 'सृष्टि-क्रम' का लेखन कहते हैं। समयाचार-मत वाले इस सृष्टि-क्रम से लिखित श्री यन्त्र को ही पूज्य मानते हैं, परन्तु कुलाचार में इस यन्त्र को 'संहार-क्रम' से ही लिखा जाता है।

संहार-क्रम में वृत्त से प्रारंभ कर, विन्दु पर समापन किया जाता है।

स्वामी शंकराचार्य समय-मत को मानने वाले थे। समय-मत के अनुयायी सृष्टि-क्रम वाले यन्त्र की ही पूजा करते हैं।

'संहार-क्रम' के अनुसार निर्मित 'श्रीयंत्र' में पाँच शक्ति त्रिकोण अधोमुखी तथा चार शिव-त्रिकोण ऊर्ध्वमुखी बनाये जाते हैं।

नीचे सृष्टि-क्रम के अनुसार निर्मित दोनो श्रीयन्त्रों के अलग-अलग चित्र प्रदर्शित हैं।
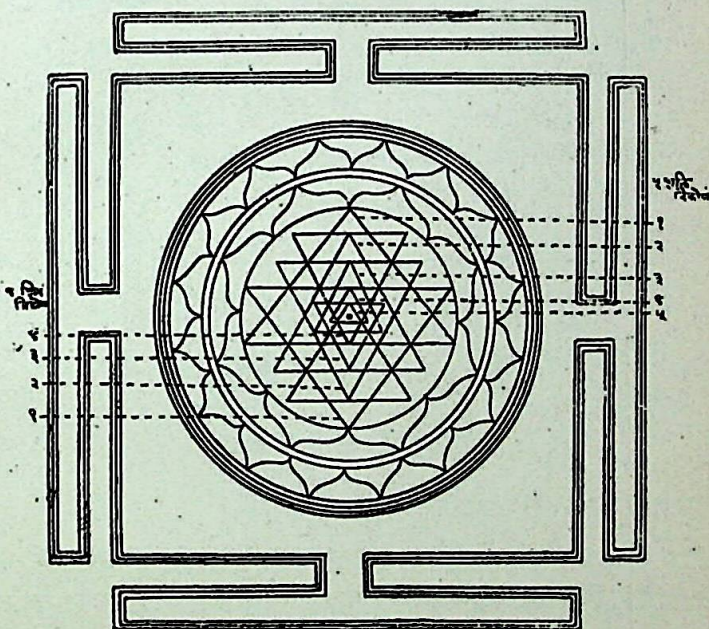
(श्रीयन्त्र का सृष्टिक्रम स्वरूप)

कौलमत के अनुयायी संहार-क्रम के श्री यन्त्र की पूजा करते हैं। कौल लोग काश्मीर-सम्प्रदाय के हैं।

'श्री-यन्त्र' में नौ त्रिकोण निराकार शिव की नौ मूल-प्रकृतियों के द्योतक हैं। इन नौ त्रिकोणों के सम्मिलन से ४३ छोटे-छोटे त्रिकोण बनते हैं। भीतरी

वृत्त के वाहर अष्टदल कमल, उसके वाहर षोडश दल कमल तथा इन सबके वाहर भूपुर है।
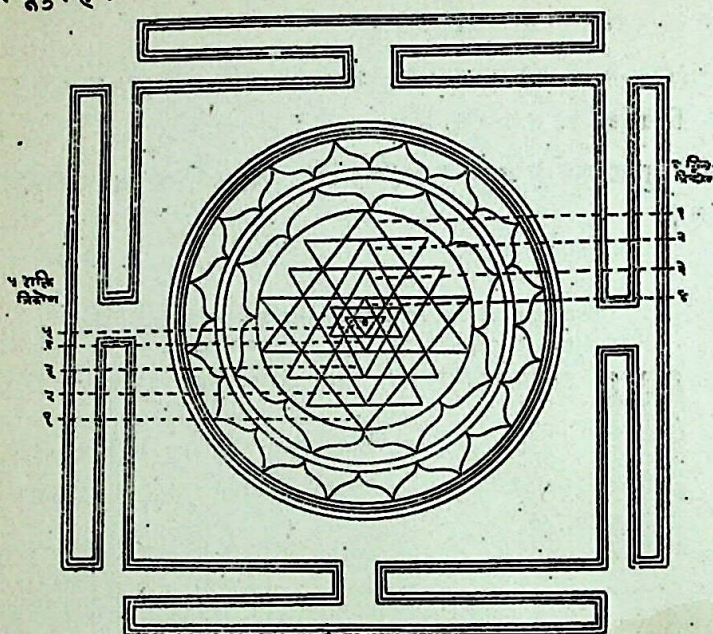
(श्रीयन्त्र का संहार-क्रम स्वरूप)

श्रीयन्त्र के ६ चक्र

'श्रीयन्त्र' के ६ चक्र निम्नलिखित क्रम से हैं—

(१) बिन्दु तथा महाबिन्दु—यह मूल कारण रूप है, महात्रिपुर सुन्दरी, कामेश्वर-कामेश्वरी-सामरस्य, जगत् की मूल योनि तथा शिवभाव का प्रतीक है।

(२) त्रिकोण—यह आद्या विमर्श शक्ति अथवा जीवभाव; शब्द-अर्थ रूप, सृष्टि की कारणात्मिका पराशक्ति, अहंभाव एवं जीव तत्त्व का प्रतीक है।

(३) 'अष्टार' अर्थात् आठ त्रिकोणों का समूह—यह पुर्यष्टक, कारण शरीर—लिङ्ग शरीर का कारण प्रतीक है।

(४) 'बहिर्दशार' अर्थात् दस त्रिकोणों का समूह—यह तन्मात्रा तथा पञ्चभूत (इन्द्रिय विषय) का प्रतीक है।

(५) 'चतुर्दशार' अर्थात् चौदह त्रिकोणों का समूह—यह जाग्रत् स्थूल शरीर का प्रतीक है।

(६) अष्टदल कमल—यह अष्टारवासना का प्रतीक है।

(७) शोडषदल कमल—यह दशारद्वय वासना का प्रतीक है।

(८) भूपुर—यह बिन्दु, त्रिकोण, अष्टदल, षोडशदल—इन चारों की समष्टि, प्रमातृपुर और प्रमाणपुर का—पशुपदीय प्रकृति, मन, बुद्धि, अहङ्कार एवं शिवपदीय शुद्ध विद्यातत्त्व चतुष्टय का सामरस्य है।

'श्रीयन्त्र' के उक्त ९ चक्रों तथा उनके अधिष्ठात्री देवता के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—

चक्र का नाम		अधिष्ठात्री देवता
(१) सर्वानन्दमय	—	महात्रिपुर सुन्दरी।
(२) सर्वसिद्धिप्रद	—	त्रिपुराम्बा।
(३) सर्व रोगहर	—	त्रिपुर सिद्धा।
(४) सर्व रक्षाकर	—	त्रिपुर मालिनी।
(५) सर्वार्थ साधक	—	त्रिपुराश्री।
(६) सर्वसौभाग्यदायक	—	त्रिपुरवासिनी।
(७) सर्वसंक्षोभण कारक	—	त्रिपुर सुन्दरी।
(८) सर्वाशापरिपूरक	—	त्रिपुरेशी।
(९) त्रैलोक्य मोहन	—	त्रिपुरा।

ये ही नवावरण—पूजा के नौ देवता है।

मतान्तर से इन्हें—(१) प्रकटा, (२) गुप्ता, (३) गुप्ततरा, (४) परा, (५) सम्प्रदाया, (६) कुलकौला, (७) निगर्भा, (८) अतिरहस्या, (९) परारहस्या, (१०) परापराति रहस्या आदि नामों से भी पुकारते हैं।

श्रीयन्त्र का शब्दार्थ

'श्रीयन्त्र' का सरल शब्दार्थ है—श्री का यन्त्र अर्थात् श्री का घर। चूंकि गृह में ही सब वस्तुओं का नियन्त्रण होता है, अतः श्रीविद्या को ढूंढने के लिए उसके गृह 'श्रीयन्त्र' की ही शरण लेनी होती है। यह विश्व ही श्री विद्या का गृह हैं। यहाँ विश्व' शब्द से 'ब्रह्माण्ड' तथा 'पिण्डाण्ड'—दोनों का ग्रहण है। 'मायाण्ड' तथा 'प्रकृत्यण्ड' भी स्थूल-सूक्ष्म रूप से इन्ही के अन्तर्गत आ जाते हैं।

'श्री' शब्द का अर्थ है—'श्रयते या सा श्रीः'—अर्थात् जो श्रयण की जाय, वही श्री है। श्रयणार्थक धातु सकर्मं है, अतः वह कर्म की अपेक्षा रखता है।

आगम के अनुसार श्री का श्रमण-कर्म हरि (ब्रह्म) के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं हो सकता। अतः जो नित्य परब्रह्म का आश्रयण करती है, वही श्री है।

जिस प्रकार प्रकाश या उष्णता अग्नि से अभिन्न है, और उसके बिना नहीं ठहर सकती। उसी प्रकार ब्रह्म से उसकी शक्ति श्री भी अभिन्न है और उससे कभी अलग नहीं हो सकती।

यह श्रीयन्त्र स्वरूप त्रिपुर सुन्दरी का गृह जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति तथा प्रमाता, प्रमेय, प्रमाण रूप से 'त्रिपुरात्मक' तथा सूर्य, चन्द्र, अग्नि भेद से त्रिखण्डात्मक कहलाता है।

इस प्रकार जैसे 'श्रीचक्र' विश्वमय है, उसी प्रकार शब्द-सृष्टि में मातृकामय है। इससे सिद्ध हुआ कि श्रीयन्त्र ब्रह्माण्ड एवं पिण्डाण्ड स्वरूप है। इसकी रचना दो-दो त्रिकोणों के परस्पर श्लेष से होती है। इस प्रकार इसमें ९ त्रिकोण होते हैं। ऐसी रचना से पिण्डाण्ड के भीतर ब्रह्माण्ड एवं ब्रह्माण्ड के भीतर पिण्डाण्ड का समावेश सूचित होता है।

'श्रीयन्त्र' को सृष्टि, स्थिति, प्रलयात्मक माना गया है। इसमें बिन्दु-चक्र शिव की मूल प्रकृति से बना हाने के कारण प्रकृति स्वरूप है। शेष आठ चक्र प्रकृति-विकृति उभयात्मक हैं। सम्पूर्ण श्रीचक्र इस प्रकार भी त्रितयात्मक है। विन्दु, त्रिकोण, अष्टार 'सृटि चक्र' हैं' दशारद्वय तथा चतुर्दशार 'स्थित चक्र' हैं एवं अष्टदल' षोडशदल, तथा भूपुर (चतुरस्र) 'संहार चक्र' है। अर्थात विन्दु से आरंभ कर भूपुरान्त चक्र को 'सृष्टि-क्रम' एवं भूपुर से प्रारंभ कर विन्दु-अन्त तक चक्र को 'संहार-क्रम' कहते हैं। इसके प्रत्येक खण्ड में आदि-मध्य-अन्त अथवा इच्छा-ज्ञान-किया रूप से त्रिपुरी समझनो चाहिए। सामान्यतः यही श्रोचक्र' का संक्षिप्त-परिचय है।

श्री यन्त्र के चक्रों का रहस्य

श्रो यन्त्र के पूर्वोक्त ९ चक्रों का रहस्य यथाक्रम निम्नानुसार है—

१. प्रथम चक्र का केन्द्रस्थ 'विन्दु' भगवती त्रिपुर सुन्दर अथवा ललिता का रूप है। यह विन्दु नाद तथा विन्दु ँ के तीन विन्दुओं के संयोग से बना है।

भगवती के चारों अस्त्र राग, द्वेष, मन तथा पञ्चतन्मात्राओं के द्योतक हैं। इन्हीं बन्धनों के द्वारा देवी निराकार सदाशिव को साकार लीला में प्रयुक्त करती है।

तन्त्रों में सुधासिन्धु तथा उसमें स्थित मणिद्वीप का वार-वार उल्लेख आता है। इसी मणिद्वीप में संयुक्त शक्ति-शिव निवास करते हैं। यही मणिद्वीप इस 'विन्दु' द्वारा प्रदर्शित किया गया है। मनुष्यों में इसी को (हृत्पुण्डरीक) (हृदय-कमल) कहते हैं।

प्रथम चक्र की अधिष्ठात्री ललिता अथवा महात्रिपुर सुन्दरी अपनी आवरण देवताओं के भेद से कहीं तो षोडश नित्याओं में मुख्य मानी गई हैं, कहीं अष्ट मातृकाओं में सर्वश्रेष्ठ कही गई है तथा कहीं अष्ट वशिनी देवताओं की अधिनायिका के रूप में उल्लिखित हैं। ये भेद प्रस्तार-भेद से हुए हैं तथा यथाक्रम इन तीनों प्रस्तारों के नाम मेरु, कैलाश तथा भूः प्रस्तार हैं। यही श्री यन्त्र की उपासना के मुख्य प्रकार भी हैं।

२. यह चक्र एक 'त्रिकोण' वाला है। इस त्रिकोण के तीनों कोण कामरूप, पूर्णगिरि तथा जालन्धर पीठ हैं। इनके मध्य में 'औड्याण पीठ' है। पूर्वोक्त तीनों पीठों की अधिष्ठात्री देवता कामेश्वरी, वज्रेश्वरी तथा भगमालिनी हैं। ये प्रकृति, महत् तथा अहंकार रूपा है।

३. इस चक्र के 'अष्टार' (आठ त्रिकोणों) की अधिष्ठात्री देवता—(१) वशिनी, (२) कामेश्वरी, (३) मोहिनी, (४) विमला, (५) अरुणा, (६) जयिनी, (७) सर्वेश्वरी तथा (८) कौलिनी क्रमशः शीत, उष्ण, सुख, दुख, इच्छा, सत्व, रज तथा तम की स्वामिनी है। इस चक्र का साधक गुणों पर अधिकार करने एवं द्वन्द्वातीत होने में समर्थ होता है।

४ इस चक्र के 'अन्तर्दशार' (दस त्रिकोणों) की शक्तियाँ—(१) सर्वज्ञा, (२) सर्वशक्तिप्रदा, (३) सर्वैश्वर्यप्रदा, (४) सर्वज्ञानमयी, (५) सर्वव्याधिनाशिनी, (६) सर्वाधारा, (७) सर्वपापहारा, (८) सर्वानन्दमयी, (९) सर्वरक्षा तथा (१०) सर्वेप्सित फलप्रदा है. जो क्रमशः रेचक, वाचक, शोषक, दाहक, प्लावक, क्षारक, उद्धारक, क्षोपक, जुम्भक तथा मोहक वह्निकलाओं की अधिष्ठात्री हैं।

५. इस चक्र के 'बहिर्दशार' के दस त्रिकोणों की दस अधिष्ठात्री देवता दस प्राणों की स्वामिनी हैं। इनके नाम हैं—(१) सर्व सिद्धिप्रदा, (२) सर्व सम्पत्प्रदा, (३) सर्वप्रियङ्करी, (४) सर्वमङ्गलकारिणी, (५) सर्वकामप्रदा, (६) सर्वदुःख विमोचिनी, (७) सर्वमृत्युप्रशमनी, (८) सर्वविघ्न निवारिणी, (९) सर्वाङ्गसुन्दरी और (१०) सर्वसौभाग्य दायिनी।

६ इस चक्र के 'चतुर्दशार' के चौदह त्रिकोण चौदह मुख्य नाड़ियों के द्योतक हैं। इन नाडियों के नाम हैं—(१) अलम्बुसा, (२) कुहु, (३) विश्वोदरी, (४) वारणा, (५) हस्ति जिह्वा, (६) यशोवती, (७) पयस्विनी, (८) गान्धारी, (९) पूषा, (१०) शंखिनी, (११) सरस्वती, (१२) इडा (१३) पिङ्गला तथा (१४) सुषुम्णा।

इन नाड़ियों की अधिष्ठात्री देवियों के नाम हैं—(१) सर्वसंक्षोभिणी, (२) सर्वविद्रावणी, (३) सर्वाकर्षिणी, (४) सर्वाह्लादिनी, (५) सर्वसम्मोहिनी, (६) सर्व स्तम्भिनी, (७) सर्वजृम्भिनी, (८) सर्ववशङ्करी, (९) सर्वारञ्जनी, (१०) सर्वोन्मा-

दिनी, (११) सर्वार्थ साधनी, (१२) सर्वसम्पत्तिपूरणी, (१३) सर्वमन्त्रमयी तथा (१४) सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करी।

७. इसचक्र के 'अष्टदल' (१) वचन, (२) आदान, (३) गमन, (४) विसर्ग, (५) आनन्द, (६) हान, (७) उपादान तथा (८) उपेक्षा—की बुद्धियों के स्थानापन्न हैं। इनकी अधिष्ठात्री देवियाँ हैं—(१) अनङ्गकुसुमा, (२) अनङ्गमेखला, (३) अनङ्गमदना, (४) अनङ्गमदनातुरा, (५) अनङ्गरेखा, (६) अनङ्गवेगिनी, (७) अनङ्गमदनांकुशा एवं (८) अनङ्गमालिनी।

८. इस चक्र के 'षोडशदल' का सम्बन्ध (१) मन, (२) बुद्धि, (३) अहङ्कार, (४) शब्द, (५) स्पर्श, (६) रूप, (७) रस, (८) गन्ध, (९) चित्त, (१०) धैर्य, (११) स्मृति, (१२) नाम, (१३) वार्धक्य, (१४) सूक्ष्म-शरीर, (१५) जीवन तथा (१६) स्थूल-शरीर से है। इनकी अधिष्ठात्री देवियाँ हैं—(१) कामाकर्षिणी, (२) बुद्धया, कर्षिणी, (३) अहङ्कार कर्षिणी, (४) शब्दाकर्षिणी, (५) स्पर्शाकर्षिणी, (६) रूपाकर्षिणी, (७) रसाकर्षिणी, (८) गन्धाकर्षिणी, (९) चित्ताकर्षिणी, (१०) धैर्याकर्षिणी, (११) स्मृत्याकर्षिणी, (१२) नामाकर्षिणी, (१३) बीजा कर्षिणी, (१४) आत्माकर्षिणी, (१५) अमृताकर्षिणी तथा (१६) शरीराकर्षिणी।

९. नवांचक्र 'भूपुर' है। इसके चार विमान है—(१) षोडशदल कमल के बाहरी चारों वृत्तों के परे तडाग जैसा स्थल, (२) इसस्थल से संलग्न पहली वाह्य रेखा, (३) दूसरी वाह्य रेखा तथा (४) सबसे बाहर वाली रेखा। इन चारों विभागों में क्रमशः १० सिद्धियों की स्थिति है। उनके नाम इस प्रकार हैं—

मुद्रा शक्तियाँ—(१) सर्व संक्षोभिणी, (२) सर्व विद्राविणी, (३) सर्वाकर्षिणी, (४) सर्वावेशकारिणी, (५) सर्वोन्मादिनी, (६) महांकुशा, (७) खेचरी, (८) बीजमुद्रा, (९) महायोनि और (१०) त्रिखण्डिका। इनका सम्बन्ध दस आधारों से है। इन आधारों के रूप में ही श्रीयन्त्र तथा षट्चक्रों का तारात्म्य सिद्ध होता है।

दश दिक्पाल—इनके नामों से सभी सुपरिचित होंगे ही। ये विघ्न-निवारण तथा साधक की रक्षा करते हैं।

अष्ट मातृकाएँ—(१) ब्राह्मी, (२) माहेश्वरी, (३) कौमारी, (४) वैष्णवी, (५) वाराही, (६) ऐन्द्री, (७) चामुण्डा एवं (८) महालक्ष्मी। इनकी पूजा का लक्ष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य, पाप तथा पुण्य पर विजय-प्राप्ति होती है।

दस सिद्धियाँ—अणिमा महिमा आदि है। इनका सम्बन्ध नौ रसों तथा नियति (भाग्य) से होता है।

पूजन-रहस्य

तन्त्र शास्त्र में 'श्रीयन्त्र' पूजन वाह्य तथा आभ्यन्तर भेद से दो प्रकार का बताया गया है।

बाह्य-पूजा के क्रम में श्रीयन्त्र का लेखन पूर्वोक्त विधि के अनुसार किया जाता है। परन्तु इसे लिखने से पूर्व साधक को उचित है कि वह सुयोग्य गुरु से दीक्षा लेकर ही किसी शुभ-मुहूर्त में उपासना करे, अन्यथा इससे फल मिलना तो दूर, उलटे अनिष्ट होने की संभावना बनी रहेगी। यन्त्र-लेखनोपरान्त गुरु द्वारा निर्देशित-विधि से षोढान्यासादि करके श्रीचक्रन्यास तथा भूतशुद्धि आदि से अपना शरीर शुद्ध कर मन्त्र में नियमानुसार देवताओं का आवरण-पूजन करे। फिर गुरु पादुका पूजन करके, वलि पूजोपहार चढ़ाकर यन्त्र का विसर्जन करे।

ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय तथा होता, अर्घ्य और हवि-इन त्रिपुरियों की अभेद-भावना ही अभ्यन्तर-पूजा है। यह भावना-अधिकारी भेद से तीन प्रकार की होती है—(१) सकल-भावना, (२) सकल-निष्कल भावना तथा (३) निष्कल भावना। इनमें निष्कल-भावना उत्तम अधिकारी के लिए है। इसमें केवल महाविन्दु में ही विन्दु आदि नव चक्रों के पारस्परिक-भेद के बिना निर्विषयक चित्स्वरूप कामकला की भावना करनी पड़ती है। यह सर्वोत्तम साधना है। इसे ही 'सकल-भावना' कहते हैं।

मध्यम श्रेणी के साधक के लिए विन्दु से लेकर अर्द्धचन्द्र, पाद चन्द्र, कला-चन्द्र नाद-शक्ति, व्यापिका, रोधिनी, समना, उन्मना आदि नौ चक्रों में श्री के उपर्युक्त नौ चक्रों की ऐक्य-भावना करना उत्तम रहता हैं। इसी को 'सकल-निष्कल भावना' कहते हैं।

तृतीय श्रेणी के उपासक को श्रीयन्त्र के सामान्य-विवेचन में कथित शरीर चक्रों के साथ ऐक्य भावना करनी चाहिए। यही 'निष्कल भावना' हैं। इस भावना-भेद से अधिकारी भी (१) विज्ञान केवल, (२) शुद्ध तथा (३) अशुद्ध—इन तीन प्रकारों के होते हैं।

३ | षोडशी-मन्त्र साधन

'मन्त्र महोदधि' में 'षोडशी महाविद्या का मन्त्र निम्नानुसार वर्णित है—

मन्त्र

"श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं।"

यह अट्ठाईस अक्षर का मन्त्र है। षडक्षरा (ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं हस-कहल ह्रीं सकल ह्रीं) विद्या को श्री, माया, काम, वाग् एवं शक्ति—इन पाँचों बीजों से सम्पुटित कर देने पर अनेक पुण्यों का फल देने वाली 'षोडशाक्षरी श्री विद्या' बनती है।

विनयोग

"अस्य श्री त्रिपुर सुन्दरी मन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिऋषिः पंक्तिश्छन्दः श्रीमत्त्रिपुर सुन्दरी देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।"

टीका—इस त्रिपुर सुन्दरी मन्त्र के दक्षिणामूर्त्ति ऋषि, पंक्ति छन्द, श्रीमद्त्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीज, सौः शक्तिः तथा क्लीं कीलक है। अभीष्ट कार्य की सिद्धि हेतु जप में इसका विनियोग है।

एक अन्य तन्त्र में भगवती त्रिपुरसुन्दरी का एक अन्य मन्त्र निम्नानुसार पाया जाता है—

मन्त्र

"ह्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं।"

टिप्पणी—उक्त षोडशाक्षर मन्त्र में कुछ मातृकाविन्यास का अन्तर है तथा इस मन्त्र के आनन्द भैरव ऋषि एवं गायत्री छन्द है।]

उक्त दोनों मन्त्र के 'न्यासादि' सब क्रियाऐं एक जैसी ही है। मन्त्र के 'न्यास' आदि निम्नानुसार किये जाते हैं—

ऋष्यादि न्यास:

"दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि।
पंक्तिश्छन्दसेनमः मुखे।
श्रीमत्त्रिपुर सुन्दरी देवतायै नमः हृदि।
ऐं बीजाय नमः गुह्ये।
सौः शक्तये नमः पादयोः।
क्लीं कीलकाय नमः नाभौ।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।"

(इति ऋष्यादि न्यासः)

कर-शुद्धिन्यास

इस महाविद्या के सभी न्यास प्रारंभ में 'माया' एवं 'श्री' वीज लगाकर करने चाहिए।

विन्दु सहित श्रीकण्ठ एवं अनन्त (अं आ) तथा विसर्ग सहित 'सौ' (सौः)— इन वर्णों के अन्त में 'नमः' लगाकर क्रमशः मध्यमा, अनामिका एवं कनिष्ठिका, फिर अङ्गुष्ठ तर्जनी तथा करतल कर पृष्ठ में न्यास करना चाहिए। इसे 'कर-शुद्धि न्यास' कहते हैं। यथा—

"ह्रीं श्रीं अं मध्यमाभ्यां नमः।
ह्रीं श्रीं आं अनामिकाभ्यां नमः।
ह्रीं श्रीं सौः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ह्रीं श्रीं अं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ह्रीं श्रीं आं तर्जनीभ्यां नमः।
ह्रीं श्रीं सौः करतलकर पृष्ठभ्यां नमः।"

(इति कर शुद्धि न्यासः)

आसनन्यास

इसके वाद आसन-न्यास करें। इस न्यास के समस्त मन्त्रों के प्रारम्भ में 'माया' एवं 'श्री' वीज लगायें। फिर प्रत्येक आसन के पहले उसके निर्दिष्ट वीज तथा अन्त में 'नमः' लगाकर न्यास करना चाहिए। यथा—

"ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः देव्यासनाय नमः—पादयो ।
ह्रीं श्रीं ह्रैं हसक्लौं हसौः चक्रासनाय नमः—जंघयो ।
ह्रीं श्रीं हसैं हसक्लीं हसौः सर्वमन्त्रासनाय नमः—जानुनोः ।
ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं क्लों साध्य सिद्धासनाय नमः—लिङ्गे ।"

(इति आसन न्यासः)

हृदयादि षडङ्गन्यास

इसके बाद निम्नानुसार हृदयादि षडङ्गन्यास करें—

"श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः हृदयाय नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं शिर से स्वाहा ।
कएईल ह्रीं शिखायै वषट् ।
हसकहल ह्रीं कवचाय हुम् ।
सकल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फ़ट् ।"

(इति हृदयादि षडङ्गन्यासः)

जगद् वशीकरण न्यास

इसके बाद 'जगद्वशीकरण न्यास' निम्नानुसार करें—

मन्त्राक्षरों से अमृत बरसाती हुई तथा उससे अपने शरीर को सप्लावित करती हुई, प्रदीप कलिका जैसे आकार वाली, ब्रह्मरन्ध्र में स्थित, सौभाग्यप्रदा देवी का ध्यान करते हुए मूल-मन्त्र के आरम्भ में प्रणव (ॐ) तथा अन्त में 'नमः' लगाकर मध्यमा तथा अनामिका से शिर में न्यास करें ।

फिर बाँये कान में परम सौभाग्य दण्डिनी मुद्रा करके, बाँई ओर सिर से पाँव तक आदि में प्रणव (ॐ) तथा अन्तमें 'नमः' लगाकर, मूल-मन्त्र का न्यास करें ।

फिर, 'सब लोकों का कर्त्ता मैं हूँ'—ऐसा विचारकर, 'त्रिखण्डा-मुद्रा' से आदि में 'प्रणव' (ॐ) तथा अन्त में 'नमः लगाकर, ललाट में न्यास करें ।

फिर 'रिपुजिह्वाग्रमुद्रा' को दिखाते हुए तथा "मैं सब शत्रुओं का निग्रह कर रहा हूँ"—इस भावना से आदि में 'प्रणव' (ॐ) तथा अन्त में 'नमः' लगा कर, पाद-मूल में न्यास करें ।

फिर, मुख में संवेष्टित करते हुए आदि में 'प्रणव' (ॐ) तथा अन्त में 'नमः' लगाकर मूलमन्त्र का न्यास करें ।

फिर, दाँये कान से बाँये कान तक उक्त विधि से न्यास करके, कण्ठ से मुख तक उसी प्रकार न्यास करना चाहिए।

फिर 'प्रणव' (ॐ) पुटित मूलमन्त्र का सर्वाङ्ग में न्यास करें। तत्पश्चात् मुख पर 'योनि मुद्रा' बाँधकर त्रिपुरसुन्दरीदेवी को प्रणाम करें।

त्रिखण्डा, योनि, सौभाग्यदण्डिनी तथा रिपुजिह्वाग्रहण मुद्राओं के लक्षण निम्नानुसार बताये गये हैं—

(१) त्रिखण्डा मुद्रा लक्षण

'परिवर्त्यंक रौस्पष्टावंगुष्ठौ कारयेत्समौ।
अनामान्तर्गते कृत्वा तर्जन्यौ कुटिलाकृती॥
कनिष्ठिके नियुंजीत निजस्थाने महेश्वरि।
त्रिखंडेयं समाख्याता त्रिपुराह्वान कर्मणि॥"

(२) योनिमुद्रा लक्षण

"मिथः कनिष्ठि के बद्वा तर्जनीभ्यामनामिके।
अनामिकोर्ध्वं संश्लिष्ट दीर्घमध्यभयोरधः॥
अंगुष्ठाग्रद्वयं न्यस्येद्योनिमुद्रेयमीरिता॥"

(३) पर सौभाग्य दण्डिनी मुद्रा लक्षण

"वामे मुष्टि दृढं बद्ध्वा तर्जनीं प्रविसारयेत्।
भ्रामयेद वामकर्णान्तं मुद्रा सौभाग्य दण्डिनीं॥"

(४) रिपुजिह्वा ग्रहण मुद्रा लक्षण

"अङ्गुष्ठगर्भितां मुष्टि बध्नीयात् दक्षपाणिना।
रिपुजिह्वाग्रहाख्येयं मुद्रोक्ता शत्रुनाशिनी॥"

(इति मुद्रा लक्षणम्)

सम्मोहन न्यासः

इसके बाद निम्नानुसार 'सम्मोहन न्यास' करें—

"देवी की आभा द्वारा लालवर्ण हुए विश्व का ध्यान करते हुए अंगूठे तथा अनामिका द्वारा ब्रह्मरन्ध्र, मणिबन्ध तथा ललाट मूल में मन्त्र का न्यास करें।

(इति सम्मोहन न्यासः)

अक्षर न्यासः

इसके बाद 'अक्षरन्यास' करें। अक्षर न्यास को 'वर्णन्यास' तथा 'संहार-न्यास' भी कहा जाता है।

इसमें क्रमशः दोनों पाँव, जंघा, जानु, कटिभाग, लिङ्ग, पीठ, नाभि, पार्श्व, स्तन, स्कन्ध, कान, ब्रह्मरन्ध, मुख, नेत्र, कान, तथा कर्ण शष्कुली में एक-एक अक्षर का न्यास किया जाता है। यथा—

"श्रीं नमः—पादयोः।
ह्रीं नमः—जंघयोः।
क्लीं नमः—जान्वोः।
ऐं नमः—कटिभागयोः।
सौः नमः—लिङ्गे।
ॐ नमः—पृष्ठे।
ह्रीं नमः—नाभिदेशे।
श्रीं नमः—पार्श्वयोः।
कएईल ह्रीं नमः—स्तनयोः।
हसकहल ह्रीं नमः—अंसयोः।
सकल ह्रीं नमः—कर्णयोः।
सौः नमः—ब्रह्मरन्ध्रे।
ऐं नमः—मुखे।
क्लीं नमः—नेत्रयोः।
ह्रीं नमः—कर्णयोः।
श्रीं नमः—कर्णवेष्टे।"

(इति अक्षर न्यासः)

वाग्देवता न्यासः

इसके बाद 'वाग्देवता न्यास' करना चाहिए। यथा—

"अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं
एं ऐं ओं औं अं अः ब्लूं वशिनी वाग्देवतायै नमः—शिरसि।
कं खं गं घं ङं ह्रीं कामेश्वरी वाग्देवतायै नमः—ललाटे।

चं छं जं झं ञं न्ब्लीं मोहिनी वाग्देवतायै नमः—भ्रूमध्ये ।
टं ठं डं ढं णं य्लूं विमला वाग्देवतायै नमः—कण्ठे ।
तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणा वाग्देवतायै नमः—हृदि ।
पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जपिनी वाग्देवतायै नमः—नाभौ ।
यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरी वाग्देवतायै नमः—मूलाधारे ।
शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनी वाग्देवतायै नमः—

ऊर्वादिपादान्तम् ।"

(इतिवाग्देवता न्यासः)

सृष्टि न्यासः

इसके बाद 'सृष्टि न्यास' करे। इसमें ब्रह्मरन्ध्र, ललाट नेत्र, कान, नासिका, कपोल, दाँत, होठ, जिह्वा, मुख, पीठ, सर्वाङ्ग, हृदय, स्तन, कुक्षि एवं लिङ्ग पर क्रमशः एक-एक वर्ण का न्यास करके सम्पूर्ण मन्त्र द्वारा व्यापक न्यास करना चाहिए । यथा—

"श्रीं नमः—ब्रह्मरन्ध्रे ।
ह्रीं नमः—ललाटे ।
क्लीं नमः—नेत्रयोः ।
ऐं नमः—कर्णयोः ।
सौः नमः—नासोः ।
ॐ नमः—गण्डे ।
ह्रीं नमः—दन्तेषु ।
श्रीं नमः—ओष्ठयोः ।
कएईल ह्रीं नमः—जिह्वायाम् ।
हसकहल ह्रीं नमः—मुखमध्ये ।
सकल ह्रीं नमः—पृष्ठे ।
सौः नमः—सर्वाङ्गे ।
ऐं नमः—हृदि ।
क्लीं नमः—स्तनयो ।

ह्लीं नमः—कुक्षौ ।
श्रीं नमः—लिङ्गे ।"

(इति सृष्टि न्यासः)

स्थिति न्यास

इसके बाद 'स्थिति न्यास' करें। इसमें हाथ के अंगूठे सहित पाँचों अंगुलियों, ब्रह्मरन्ध्र, मुख, हृदय, नाभि से पाँव तक, कण्ठ से नाभि तक, ब्रह्मरन्ध्र से कण्ठ तक तथा पांव को पाँचों अंगुलियों में क्रमशः मन्त्र के एक-एक वर्णका न्यास किया जाता है। यथा—

"श्रीं नमः—अंगुष्ठयोः ।
ह्लीं नमः—तर्जन्योः ।
क्लीं नमः—मध्यमयोः ।
ऐं नमः—अनामिकयोः ।
सौः नमः—कनिष्ठकयोः ।
ॐ नमः—ब्रह्मरन्ध्रे ।
ह्लीं नमः—मुखे ।
श्रीं नमः—हृदि ।
कएईलह्लीं नमः—नाभ्यादिपादान्तम् ।
हसकहलह्लीं नमः—कण्ठादि नाभ्यन्तम् ।
सकलह्लीं नमः—ब्रह्मरन्ध्रात् कण्ठान्तम् ।
सौः नमः—पादांगुष्ठयोः ।
ऐं नमः—पादतर्जन्योः ।
क्लीं ह्लीं नमः—पादमध्यमयोः ।
ह्लीं नमः—पादानामिकयोः ।
श्रीं नमः—पादकनिष्ठयोः ।"

(इति स्थिति न्यासः)

पंचावृत्ति न्यास

इसके बाद सर्वेष्ट सिद्धिदायक पञ्चावृत्तिरूपी पंचविध न्यास करना चाहिए।

क्रमशः शिर, मुख, दोनों नेत्र, दोनों कान, दोनों नासिका, दोनों कपोल (गण्ड), दोनों ओष्ठ, मुख गह्वर, दोनों दन्तपंक्तियां तथा मुख में एक-एक वर्ण का न्यास करें—यह 'प्रथम न्यास' कहलाता है।

शिखा, शिर, ललाट, भ्रू, नासिका एवं मुख में मन्त्र के ६ वर्णों का तथा दोनों हाथों की संधि एवं अग्रभाग में शेष वर्णों का न्यास करना चाहिए—इसे 'द्वितीय न्यास' कहते हैं।

शिर, ललाट, दोनों नेत्र, मुख एवं जिह्वा पर मन्त्र के ६ वर्ण तथा दोनों पांवों की सन्धियों एवं उनके अग्रभाग पर शेष वर्णों का न्यास करना चाहिए इसे 'तृतीय न्यास' कहा जाता है।

मातृकान्यास में बताये गये स्वर स्थानों में मन्त्र के १६ वर्णों का न्यास करने को 'चतुर्थ न्यास' कहते हैं।

ललाट, कण्ठ, हृदय, नाभि, मूलाधार, ब्रह्मरन्ध्र, मुख, गुदा, आधार, हृदय, ब्रह्मरन्ध्र, दोनों हाथ. दोनों पाँव तथा हृदय में मन्त्र के एक-एक वर्ण का न्यास करने को 'पंचम न्यास' कहते हैं।

उक्त प्रकार से पञ्चविध न्यास करने के पश्चात् प्रणव ॐ सम्पुटित मन्त्र को सब अङ्गों में 'व्यापक' न्यास करें तथा मूलमन्त्र के बाद 'नमः' लगाकर हृदय में न्यास करें। यथा—

पंचावृत्ति न्यासान्तर्गत

प्रथम न्यास

''श्रीं नमः—मूर्ध्नि।
ह्लीं नमः—वक्त्रे।
क्लीं नमः—दक्षिण नेत्रे।
ऐं नमः—वाम नेत्रे।
सौः नमः—दक्षिण कर्णे।
ॐ नमः—वाम कर्णे।
ह्रीं नमः—दक्षनासायम्।
श्रीं नमः—वाम नासायाम्।
कएईलह्रीं नमः—दक्षिणगण्डे।
हसकलहह्लीं नमः—वामगण्डे।

सकल ह्लीं नमः—ऊर्ध्वोष्ठे ।

सौः नमः—अधरोष्ठे ।

ऐं नमः--वक्त्रमध्ये ।

क्लीं नमः--ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ ।

ह्लीं नमः--अधोदन्तपंक्तौ ।

श्रीं नमः--वदन ।"

(इति प्रथम न्यासः)

द्वितीय न्यास

"श्रीं नमः—शिखायाम् ।
ह्लीं नमः—शिरसि ।
क्लीं नमः--ललाटे ।
ऐं नमः--भ्रुवोः ।
सौं नमः--नासायाम् ।
ॐ नमः--वक्त्रे ।
ह्लीं नमः--दक्षिण बाहूमूले ।
श्रीं नमः--दक्षिण कूर्परे ।
कएईल ह्लीं नमः--दक्षिण मणिबन्धे ।
हसकहलह्लीं नमः--दक्षिण अंगुलिमूले ।
सकल ह्लीं नमः--दक्षिण अंगुल्यग्रे ।
सौः नमः--वाम बाहुमूले ।
ऐं नमः--वाम कूपर्रे ।
क्लीं नमः--वाम मणिबन्धे ।
ह्लीं नमः--वाम अङ्गुलिमूले ।
श्रीं नमः--वाम अंङ्गुल्यग्रे ।"

(इति द्वितीय न्यासः)

तृतीय न्यासः

"श्रीं नमः—शिरसि ।
ह्लीं नमः—ललाटे ।
क्लीं नमः—दक्षिणनेत्रे ।
ऐं नमः—वाम नेत्रे ।
सौ नमः—मुखे ।
ॐ नमः—जिह्वायाम् ।
ह्लीं नमः—दक्षपादमूले ।
श्रीं नमः—दक्षगुल्फे ।
कएईलह्लीं नमः—दक्षजंघायाम् ।
हसकहल ह्लीं नमः—दक्षपादांगुलिमूले ।
सकलह्लीं नमः—दक्षपादांगुल्यग्रे ।
सौः नमः—वाम पादमूले ।
ऐं नमः—वाम गुल्फे ।
क्लीं नमः—वामजंघायाम् ।
ह्लीं नमः—वामपादांगुलिमूले ।
श्रीं नमः—वाम पादांगुल्यग्रे ।"

(इति तृतीय न्यासः)

चतुर्थ न्यासः

"श्रीं नमः—ललाटे ।
ह्लीं नमः—मुखवृत्ते ।
क्लीं नमः—दक्षनेत्रे ।
ऐं नमः—वामनेत्रे ।
सौः नमः—दक्षकर्णे ।
ॐ नमः—वामकर्णे ।
ह्लीं नमः—दक्ष नासायाम् ।
श्रीं नमः—वाम नासायाम् ।

कएईलह्रीं नमः—दक्ष गण्डे ।
हसकहलह्रीं नमः—वाम गण्डे ।
सकल ह्रीं नमः—ऊर्ध्वोष्ठे ।
सौः नमः—अधरे ।
ऐं नमः—ऊर्ध्वदन्त पंक्तौ ।
क्लीं नमः—अधोदन्त पंक्तौ ।
ह्रीं नमः—ब्रह्मरन्ध्रे ।
श्रीं नमः—मुखे ।"

(इति चतुर्थं न्यासः)

पंचम न्यासः

"श्रीं नमः—ललाटे ।
ह्रीं नमः—कण्ठे ।
क्लीं नमः—हृदि ।
ऐं नमः—नाभौ ।
सौः नमः—मूलाधारे ।
ॐ नमः—ब्रह्मरन्ध्रे ।
ह्रीं नमः—मुखे ।
श्रीं नमः—गुदे ।
कएईल ह्रीं नमः—आधारे ।
हसकहलह्रीं नमः—हृदि ।
सकल ह्रीं नमः—ब्रह्मरन्ध्रे ।
सौः नमः—दक्षिण हस्ते ।
ऐं नमः—वाम हस्ते ।
क्लीं नमः—दक्षिण पादे ।
ह्रीं नमः—वाम पादे
श्रीं नमः—हृदि ।"

(इति पंचम न्यासः)

उक्त विधि से पंचावृत्ति न्यास 'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं—मन्त्र का सब अङ्गों में 'व्यापक न्यास' करना चाहिए तथा इस मन्त्र के अन्त में 'नमः' लगाकर हृदय में न्यास करना चाहिए। यथा—

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकलह्रीं सौं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं–इति सर्वाङ्गे।"

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं सौं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः–इति हृदये।"

षोढान्यास

इसके बाद 'षोढान्यास' करने चाहिए। (१) गणेश मातृका न्यास, (२) ग्रह मातृका न्यास, (३) नक्षत्र मातृका न्यास, (४) योगिनी मातृका न्यास, (५) राशि मातृका न्यास एवं (६) पीठ मातृका न्यास—इन ६ न्यासों को सम्मिलित रूप में 'षोढान्यास' कहते हैं। इन्हें नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए—

(१) गणेश मातृका न्यास

अब सर्वप्रथम 'गणेश मातृका न्यास' के विषय में बताते हैं इस न्यास के लिए सर्वप्रथम निम्नानुसार विनियोग वाक्य पढ़कर 'षडङ्गन्यास' करना चाहिए—

विनियोग

"अस्य श्री गणेश मातृका मन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः गायत्री छन्दः श्रीमातृका सुन्दरी देवता मनोवास्य श्रीविद्याङ्गत्वेन षोढान्यासे विनियोगः।"

इसके बाद निम्नानुसार 'षडङ्गन्यास' करें—

षडङ्ग न्यास

"अं कं खं गं घं ङं आं ऐं हृदयाम नमः।
इं चं छं जं झं ईं क्लीं शिरसे स्वाहा।
उं टं ठं डं ढं णं ऊं सौः शिखायै वषट्।

एं तं थं दं धं नं ऐं सौः कवचाय हुम् ।
ओं पं फं वं भं मं औं क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः ऐं अस्त्राय फट् ।

(इति षडङ्ग न्यासः)

इसके वाद निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यान

"उद्यत्सूर्य सहस्राभां पीनोन्नत पयोधराम् ।
रक्तमाल्याम्बरालेप रक्तभूषण भूषिताम् ।।
पाशांकुश धनुर्बाणभास्वत्पाणि चतुष्टयम् ।
रक्तनेत्रत्रयां स्वर्णमुकुटोद्भासि चन्द्रिकाम् ।।"

गणेश मातृकान्यास

उक्त प्रकार से ध्यान कर, निम्नलिखित मन्त्रों से मातृका स्थानों में न्यास करना चाहिए। यथा —

"गं अं विघ्नेशह्रीभ्यां नमः ललाटे ।
गं आं विघ्नाराजश्रीभ्यां नमः मुखवृत्ते ।
गं इं विनायक पुष्टिभ्यां नमः दक्षनेत्रे ।
गं ईं शिवोत्तम शान्तिभ्यां नमः वामनेत्रे ।
गं उं विघ्नकृत् स्वस्तिभ्यां नमः दक्षकर्णे ।
गं ऊं विघ्नहर्त सरस्वतीभ्यां नमः वामकर्णे ।
गं ऋं गण स्वाहाभ्यां नमः दक्षगण्डे ।
गं ॠं एकदन्तसुमेधाभ्यां नमः वामगण्डे ।
गं लृं द्विदन्त कान्तिभ्यां नमः दक्षनासायाम् ।
गं ॡं गजवक्त्र कामिनीभ्यां नमः वामनासायाम् ।
गं एं निरंजन मोहिनीभ्यां नमः ऊर्ध्वोष्ठे ।
गं ऐं कपर्दीनटीभ्यां नमः अधरे ।
गं ओं दीर्घजिह्वा पार्वतीभ्यां नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ ।

गं औं शंकुकर्ण ज्वालिनीभ्यां नमः अधोदन्तपंक्तौ ।
गं अं वृषभध्वजनन्दाभ्यां नमः ब्रह्मरन्ध्रे ।
गं अः सुरेशगणनायकाभ्यां नमः मुखे ।
गं कं गजेन्द्रकात्ररूपिणीभ्यां नमः दक्षबाहुमूले ।
गं खं सूर्यकर्णोमाभ्यां नमः दक्ष कूर्परे ।
गं गं त्रिलोचनते जवतीभ्यां नमः दक्षमणिबन्धे ।
गं घं लम्बोदरसत्याभ्यांनमः दक्ष अंगुलिमूले ।
गं ङं महानन्द विघ्नेशीभ्यां नमः दक्ष अंगुल्यग्रे ।
गं चं चतुर्मूर्ति सुरूपिणीभ्यां नमः वामबाहुमूले ।
गं छं सदाशिवकामदाभ्यां नमः वामकूर्परे ।
गं जं आमोदमद जिह्वाभ्यां नमः वाम मणिबन्धे ।
गं झं दुर्मुखभूतिभ्यां नमः वाम अंगुलिमूले ।
गं ञं सुमुखभौतिकाभ्यां नमः वाम अंगुल्यग्रे ।
गं टं प्रमोद सिताभ्यां नमः दक्ष पाद मूले !
गं ठं एकपादरमाभ्यां नमः दक्षगुल्फे ।
गं डं द्विजिह्व महिषीभ्यां नमः दक्ष जंघायाम् ।
गं ढं शूरभंजिनीभ्यां नमः दक्ष पादांगुलिमूले ।
गं णं वीरविकर्णाभ्यां नमः दक्ष पादांगुल्यग्रे ।
गं तं षण्मुख भृकुटीभ्यां नमः वाम पादमूले ।
गं थं वरदलज्जाभ्यां नमः वामगुल्फे ।
गं दं वामदेव दीर्घघोणाभ्यां नमः वामजंघायाम् ।
गं धं वक्रतुण्डधनुर्धराभ्यां नमः वामपादांगुलिमूले ।
गं नं द्विरदयामिनीभ्यां नमः वामपादागुल्यग्रे ।
गं पं सेनानी रात्रिभ्यां नमः दक्षपार्श्वे ।
गं फं कामान्धो ग्रामणीभ्यां नमः वामपार्श्वे ।
गं बं मत्तशशिप्रभाभ्यो नमः पृष्ठे ।

गं भं विमत्तलोल लोचनाभ्यां नमः नाभौ ।
गं मं मत्तवाहन चंचलाभ्यां नमः उदरे ।
गं यं त्वगात्मभ्यां जटिदीप्तिभ्यां नमः हृदि ।
गं रं मुण्डी सुभगाभ्यां नमः दक्षांसे ।
गं लं खड्गी दुर्भगाभ्यां नमः ककुदि ।
गं वं वरेण्य शिवाभ्यां नमः वामांसे ।
गं शं वृषकेतन भगाभ्यां नमः हृदादिदक्ष करे ।
गं षं भक्तप्रियभगिनीभ्यां नमः हृदादिवामकरे ।
गं सं गणेश भोगिनीभ्यां नमः हृदादिदक्षपादे ।
गं हं मेघनाद सुभगाभ्यां नमः हृदादिवामपादे ।
गं ळं व्यासीस्थ कालरात्रिभ्यां नमः हृदयादि उदरे ।
गं क्षं गणेश्वरकालिकाभ्यां नमः हृदादि मुखे ।"

(इति गणेश मातृका न्यासः)

ग्रह मातृका न्यास

अब 'ग्रहमातृका न्यास' के 'विनियोग' को कहते हैं—

विनियोग

"अस्य श्री ग्रहमातृका मन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिऋर्षिः गायत्री छन्दः ग्रहरुपिणी सुन्दरी देवता ममोपास्य श्री विद्याङ्गत्वेन षोढ़ान्यासे विनियोगः ।"

इसका 'षोढान्यास' पूर्ववत् है । 'ध्यान' नीचे लिखे अनुसार है—

ध्यान

"रक्तं श्वेतं तथा रक्तं श्यामं पीतं च पाण्डुरम् ।
धूम्रकृष्णं च धूम्रं च धूमधूम्रं विचिन्तयेत् ।।
रविमुख्यान्कामरूपान्सर्वाभरण भूषितान् ।
वामोरुन्यस्तहस्तांश्च दक्षिणेनवरप्रदान् ।।"

न्यासः

"अं १६ सूर्यायरेणु काम्बायै नमः हृदि ।
यं ४ चन्द्रायामृताम्बायै नमः भ्रूमध्ये ।
कं ५ मङ्गलाय धामाम्बायै नमः नेत्रयो ।
चं ५ बुधाय ज्ञानरूपाम्बायै नमः हृदि ।
टं ५ वृहस्पतये यशस्विन्यम्बायै नमः हृदयोपरिभागे ।
तं ५ शुक्राय शांकर्यम्बायै नमः कण्ठे ।
पं ५ शनैश्चराय शक्त्यम्बायै नमः नाभौ ।
शं ४ राहवे कृष्णाम्बायै नमः मुखे ।
ळं क्षं केतवे धूम्राम्बायै नमः गुदे ।"

(इति ग्रहमातृका न्यासः)

नक्षत्र मातृका न्यास

अब 'नक्षत्र मातृका न्यास' के 'विनियोग' को कहते हैं—

विनियोग

"अस्य श्रीनक्षत्र मातृका मन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिऋर्षि गायत्री छन्दः नक्षत्ररुपिणी सुन्दरी देवता ममोपास्य श्रो विप्पाङ्गत्वेन षोढान्यासे विनियोगः ।"

इसके बाद 'षडङ्गन्यास' पूर्ववत् करके निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यान

"ज्वलत्कालाग्नि संकाशाः सर्वाभरण भूषिताः ।
नतिपाण्योऽश्विनी मुख्या वरदा त्रयपाणयः ।।"

न्यास

"अं आं आश्विन्यै नमः ललाटे ।
इं भरण्यैनमः दक्षनेत्रे ।
ईं उं ऊं कृत्तिकायै नमः वाम नेत्रे ।

ऋं ॠं लृं ॡं रोहिण्यै नमः दक्षकर्णे ।
एं मृगशिरसे नमः वामकर्णे ।
ऐं आर्द्रायै नमः दक्षत्रसायाम् ।
ओं औं पुनर्वसवे नमः वामनासायाम् ।
कं पुष्याय नमः कण्ठे ।
खं गं आश्लेषायै नमः दक्षस्कन्धे ।
घं ङं मघायै नमः वाम स्कन्धे ।
चं पूर्वा फाल्गुन्यै नमः दक्ष कूर्परे ।
छं जं उत्तराफाल्गुन्यै नमः वाम कूर्परे ।
झं ञं हस्ताय नमः दक्षमणि बन्धे ।
टं ठं चित्रायै नमः वाम मणि वन्धे ।
डं स्वात्यै नमः दक्षहस्ते ।
ढं णं विशाखायै नमः वाम हस्ते ।
तं थं दं अनुराधायै नमः नाभौ ।
धं ज्येष्ठायै नमः दक्ष कटौ ।
नं पं फ मूलाय नमः वामकटौ ।
बं पूर्वाषाढायै नमः दक्षोरौ ।
भं उत्तराषाढायै नमः वामोरौ ।
मं श्रवणाय दक्षजानुनि ।
यं रं धनिष्ठायै नमः वामजानुनि ।
लं शतभिषायै नमः दक्ष जंघायाम् ।
वं शं पूर्वाभाद्रपदायै नमः वाम जद्यांयाम् ।
षं सं हं उत्तराभाद्रपदायै नमः दक्षपादे ।
ळं क्षं अं अः रेवत्यैनमः वामपादे ।"

(इति नक्षत्र मातृका न्यासः)

योगिनी मातृका न्यास

अब 'योगिनो मातृका न्यास' के 'विनियोग' को कहते हैं—

विनियोग

"अस्य श्री योगिनी मातृका मन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः गायत्री छन्दः योगिनीरूपा सुन्दरी देवता श्रीविद्याङ्गत्वेन षोढान्यासे विनियोगः।"

इसके बाद निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यान

"सितासितारुणबभ्रू चित्रापीताश्च चित्रयेत्।
चतुर्भुजाः समैर्वक्त्रैः सर्वाभरण भूषिताः॥"

न्यास

"ह्लीं श्रीं डां डीं डं म ल व र यूं पूं डाकिन्यै नमः
अं १६ ममत्वचं रक्ष-रक्ष त्वगात्मनेनमः। कण्ठे विशुद्धे।
ह्लीं श्रीं रां रीं रं म ल वर यूं पूं राकिन्यैनमः
कं १२ ममरक्तं रक्ष रक्ष असृगात्मने नमः। हृद्यनाहते।
ह्लीं श्रीं लां लीं लं मलवर यूं पूं लाकिन्यै नमः
डं १० मममासं रक्ष-रक्ष मासात्मने नमः नाभौमणिपूरे।
ह्लीं श्रीं कां कीं कं मलवर यूं पूं काकिन्यै नमः
बं ६ मम मेदो रक्ष रक्ष मेद आत्मने नमः। लिङ्गे स्वाधिष्ठाने।
ह्लीं श्रीं शां शीं शं मलवर यूं पूं शाकिन्यै नमः
वं ४ मम अस्थि रक्ष-रक्ष अस्थ्यात्मने नमः गुदेमूलाधारे।
ह्लीं श्रीं हां हीं हं मलवर यूं पूं हाकिन्यै नमः
हं क्षं मम मज्जां रक्ष-रक्ष मज्जात्मने नमः भ्रूमध्ये आज्ञाचक्रे।
ह्लीं श्रीं यां यीं यं मलवर यूं पूं याकिन्यै नमः
अं मम शुक्रं रक्ष-रक्ष शुक्रात्मने नमः ब्रह्मरन्ध्रे।"

(इति योगिनी मातृका न्यासः)

राशि मातृका न्यास

अब 'राशि मातृकान्यास' के विनियोग को कहते हैं—

विनियोग

"अस्य श्री राशिमातृकामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः गादत्रीछन्दः राशिरूपा सुन्दरी देवता श्री विद्याङ्गत्वेन षोढ़ान्यासे विनियोगः ॥"

इसके बाद निम्नानुसार 'ध्यान' करें—

ध्यान

"रक्तश्वेत हरिद्वर्ण पाण्डुचित्रा सितान्स्मरेत् ।
विशंगपिंगलौ बभ्रु कर्बु राशित धूम्रभान् ॥"

न्यास

"अं आं इं ईं मेषाय नमः दक्षपाद गुल्फे ।
उं ऊं ऋं वृषाय नमः दक्षजानुनि ।
ॠं लृं ॡं मिथुनाय नमः दक्ष वृषणे ।
एं ऐं कर्काय नमः दक्षकुक्षौ ।
ओं औं सिंहाय नमः दक्षस्कन्धे ।
अं अः शं षं सं हं ळं कन्यायै नमः दक्ष शिरोभागे ।
कं खं गं घं ङं तुलायै नमः वाम शिरोभागे ।
चं छं जं झं ञं वृश्चिकाय नमः वाम स्कन्धे ।
टं ठं डं ढं णं धनुषे नमः वाम कुक्षौ ।
तं थं दं धं नं मकराय नमः वाम वृषणे ।
पं फं बं भं मं कुम्भाय नमः वाम जानुनि ।
यं रं लं वं क्षं मीनाय नमः वाम गुल्फे ।"

(इति राशि मातृका न्यासः)

पीठ मातृका न्यास

अब 'पीठ मातृका न्यास' के विनियोग को कहते हैं—

विनियोग

"अस्य श्री पीठ मातृका मन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः गायत्री छन्दः पीठरूपिणी सुन्दरी देवता श्रीविद्याङ्गत्वेन षोढान्यासे विनियोगः ।"

इसके बाद निम्नानुसार 'ध्यान' करें—

ध्यान

"सितासितारुणश्याम हरित्पीतान्यनुक्रमात् ।
पुनरेतत्क्रमाद्देवी पञ्चाशत्स्थान संचये ।।
पीठानीह स्मेरद्विद्वान्सर्वकामार्थसिद्धये ।।"

न्यास

"ह्लीं श्रीं अं कामरूपपीठाय नमः ललाटे ।
ह्लीं श्रीं आं वाराणसी पीठायनमः मुखवृत्ते ।
,, ,, इं नेपाल पीठाय नमः दक्षनेत्रे ।
,, ,, ईं पौंड्रवर्धनपीठाय नमः वामनेत्रे ।
,, ,, उं काश्मीर पीठाय नमः दक्षकर्णे ।
,, ,, ऊं कान्यकुब्ज पीठाय नमः वामकर्णे ।
,, ,, ऋं पूर्णगिरि पीठाय नमः दक्ष गण्डे ।
,, ,, ॠं अर्बुदाचल पीठाय नमः वाम गण्डे ।
,, ,, लृं आम्रातकेश्वर पीठाय दक्षनासायाम् ।
,, ,, लॄं एकाम्र पीठायनमः वामनासायाम् ।
,, ,, एं त्रिस्रोतः पीठायनमः ऊर्ध्वोष्ठे ।
,, ,, ऐं कामकोटि पीठायनमः अधेरे ।
,, ,, ओं कैलाश पीठाय नमः ऊर्ध्व दन्त पंक्तौ ।
,, ,, औं भृगु पीठाय नमः अधोदन्तपंक्तौ ।
,, ,, अं केदार पीठाय नमः ब्रह्मरन्ध्रे ।
,, ,, अः चन्द्रपुर पीठाय नमः मुखे ।
,, ,, कं श्री पीठाय नमः दक्षबाहुमूले ।
,, ,, खं ओंकार पीठाय नमः कूर्परे ।
,, ,, गं जालंधर पीठाय नमः मणिबन्धे ।
,, ,, घं मालव पीठाय नमः अंगुलिमूले ।

ह्रीं श्रीं ङ कुलान्त पीठाय नमः अंगुल्यग्रे ।
,, ,, चं देवीकोट्टक पीठाय नमः वाम बाहुमूले ।
,, ,, छं गोकर्ण पीठाय नमः वामकूर्परे ।
,, ,, जं मारुतेश्वर पीठाय नमः वाम मणिबन्धे ।
,, ,, झं अट्टहास पीठाय नमः वाम अंगुलिमूले ।
,, ,, ञं विरज पीठाय नमः वामांगुल्यग्रे ।
,, ,, टं राजगृ पीठाय नमः दक्षपाद मूले ।
,, ,, ठं महापथ पीठाय नमः दक्षगुल्फे ।
,, ,, डं कोल्लगिरि पीठाय नमः दक्ष जंघायाम् ।
,, ,, ढं एलापुर पीठाय नमः दक्ष पादांगुलिमूले ।
,, ,, णं कालेश्वर पीठाय नमः दक्ष पादांगुल्यग्रे ।
,, ,, तं जयन्ती पीठाय नमः वामपादमूले ।
,, ,, थं उज्जयिनी पीठाय नमः वाम गुल्फे ।
,, ,, दं चरित्र पीठाय नमः वाम जंघायाम् ।
,, ,, धं क्षीरिका पीठाय नमः वाम पादांगुलिमूले ।
,, ,, नं हस्तिनापुर पीठाय नमः वाम पादांगुल्यग्रे ।
,, ,, पं उड्डीश पीठाय नमः दक्ष पार्श्वे ।
,, ,, फं प्रयाग पीठाय नमः वाम पार्श्वे ।
,, ,, बं षष्ठीश पीठाय नमः पृष्ठे ।
,, ,, भं मायापुरी पीठाय नमः नाभौ ।
,, ,, मं मलय पीठाय नमः उदरे ।
,, ,, यं श्रीशैल पीठाय नमः हृदि ।
,, ,, रं मेरु पीठाय नमः दक्षांसे ।
,, ,, लं गिरि पीठाय नमः ककुदि ।
,, ,, वं माहेन्द्र पीठाय नमः वामांसे ।
,, ,, शं वामन पीठाय नमः हृदयादि दक्ष हस्ते ।

ह्लीं श्रीं षं हिरण्यपुर पीठाय नमः हृदयादि वामहस्ते ।
" " सं महालक्ष्मी पीठाय नमः हृदयादि दक्षपादे ।
" " हं उड्डियान पीठाय नमः हृदयादि वामपादे ।
" " ळं छाया पीठाय नमः हृदयादि उदरे ।
" " क्षं क्षत्रपुर पीठाय नमः हृदयादि मुखे ।"

(इति पीठ मातृका न्यासः)

न्यास-भेद

अन्य तन्त्रों में न्यास-भेद निम्नानुसार मिलता है। साधकों की जानकारी के लिए इसे भी प्रस्तुत किया जा रहा है।

कुल्लुका न्यास

"ऐं क्लीं ह्लीं श्रीं भगवति महात्रिपुर सुन्दरि स्वाहा ।'

—इति कुल्लुकां शिरसि ।

ॐ सेतुं—हृदि ।

ह्लीं महासेतुं—कण्ठे ।

ॐ श्रीं अं एं क्लीं सौं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं वं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं—इति निर्वाण नाभौ ।

क्लीं कामबीजं लिङ्गे ।"

जिह्वा में मूल-मन्त्र का चिन्तन्न कर, यथाशक्ति जप करना चाहिए ।

(इति कुल्लुकान्यासः)

रहस्य न्यासः

विनियोग—

"अस्य श्री रहस्यन्यास मन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुस्सामानिच्छन्दांसि चैतन्यशक्ति महात्रिपुर सुन्दरी देवता कृता-कृतन्यास पूर्णता सिद्धये विनियोगः ।"

'ब्रह्माविष्णुमहेश्वर ऋषिभ्यो नमः—शिरसि ।

ऋग्यजुस्सामभ्यश्छन्दोभ्यो नमः–मुखे ।

चैतन्यशक्तिमहात्रिपुर सुन्दर्यै देवतायै नमः–हृदये ।

विनियोगाय नमः–पादयोः ।

ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं सदाशिवासनायै महा-
त्रिपुर सुन्दर्यै नमः–मूलाधारे ।

ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं रतिप्रियायै महात्रिपुर
सुन्दर्यै नमः–स्वाधिष्ठाने ।

ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं ज्ञानरुपायै महात्रिपुर
सुन्दर्यै नमः–मणिपूरे ।

ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं ध्यानरुपायै महात्रिपुर
सुन्दर्यै नमः–अनाहते ।

ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं विशुद्ध स्वरूपायै महा-
त्रिपुर सुन्दर्यै नमः–विशुद्धौ ।

ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं स्वतन्त्र स्वरूपायै महा-
त्रिपुर सुन्दर्यै नमः–आज्ञायाम् ।

ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं आनन्द रुपायै महात्रिपुर
सुन्दर्यै नमः–सहस्रारे ।"

(इति रहस्य न्यासः)

काम न्यासः

"ह्रीं कामाय नमः ।

क्लीं मन्त्रथाय नमः ।

ऐं कन्दर्पाय नमः ।

क्लूं मकरध्वजाय नमः ।

स्त्रीं मीनकेतवे नमः ।"

ततः (फिर)—

"ऐं हृदयाय नमः ।

क्लीं शिरसे स्वाहा ।

सौं शिखायै वषट् ।
ऐं कवचाय हुं ।
क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
सौं अस्त्राय फट् ।"

इति काम न्यास:)

रत्यादि न्यास:

"ऐं रत्यै नमः लिङ्गे ।
क्लीं प्रीत्यै नमः हृदि ।
सौं मनोभवायैं नमः भ्रूमध्ये ।
सौं अमृतास्यायै नमः भ्रूमध्ये ।
क्लीं योगिन्यै नमः हृदि ।
ऐं विश्वयोन्यै नमः लिङ्गे ।

(इति रत्यादि न्यास:)

कामन्यास: (पुनश्च)

"स्ह्लौं ईशानाय मनोभवाय नमः–शिरसि ।
स्ह्लों तत्पुरुषाय मकरध्वजायनमः–मुखे ।
स्ह्लुं अधारे कुमाराय कन्दर्पाय नमः–हृदि ।
स्ह्लीं वामदेवाय मन्त्रथाय नमः–गुह्ये ।
स्ह्लूं सद्योजाताय कामदेवाय नमः–पादयो: ।"

(इति कामन्यास:)

मनोभव न्यास:

"स्ह्लौं ईशानाय मनोभवाय नमः–ऊर्ध्ववक्त्रे–मस्तके ।
स्ह्लों तत्पुरुषाय मकरध्वजाय नमः पूर्ववक्त्रे–भाले ।
स्ह्लुं अघोर कुमाराय कन्दर्माय नमः दक्षिण वक्त्रे–दक्षकर्णे ।
स्ह्लीं वामदेवाय मन्त्रथाय नमः उत्तरवक्त्रे–वामकर्णे ।
स्ह्लूं सद्योजाताय वामदेवाय नमः पश्चिमवक्त्रे–चूडाध ।"

(इति मनोभव न्यास:)

बाणन्यासः

"ह्लां क्षोभणवाणाय नमः हृदि ।
ह्लीं द्रावण बाणाय नमः शिरसि ।
क्लीं आकर्षण बाणाय नमः शिखायाम् ।
क्लं मोहन बाणाय नमः कवचम् ।
सः उन्मादन बाणाय नमः अस्त्रम् ।"

(इति बाणन्यासः)

करन्यासः

"ऐं ह्लीं क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
क्लीं श्रीं सौं ऐं तर्जनीभ्यां नमः ।
सौं औं ह्लीं श्रीं मध्ययाभ्यां नमः ।
ऐं कएलह्रीं हसकलह्लीं अनामिकाभ्यां नमः ।
क्लीं सकलह्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
सौः सौः ऐं क्लीं ह्लीं श्रीं करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ।"

(इति करन्यासः)

स्वतन्त्र न्यासः

"ऐं ह्लीं श्रीं ऐंकएलह्लीं सर्वज्ञायै महात्रिपुर सुन्दर्यै—हृदयाय नमः ।
ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं सहकहलह्लीं नित्यतृप्तायै महात्रिपुरसुन्दर्यै—शिरसे-स्वाहा ।।
ऐं ह्लीं श्रीं सौः सकलह्लीं अनादि बोधायै महात्रिपुर सुन्दर्यै—शिखायै वषट् ।
ऐं ह्लीं श्रीं ऐं कएलह्लीं स्वतन्त्रायै महात्रिपुर सुन्दर्यै—कवचाय हुं ।
ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं हसकहल ह्लीं नित्यमलुप्त शक्तये महात्रिपुर सुन्दर्यै—नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ऐं ह्लीं श्रीं सौः सकलह्लीं अनन्तायै महात्रिपुर सुन्दर्यै—अस्त्राय फट् ।

(इति स्वतन्त्र न्यासः) ।"

(टिप्पणी—अन्य तन्त्रों में वर्णित उक्त न्यासों का प्रयोग साधक की इच्छा पर निर्भर करता है)

मुद्रा-प्रदर्शन

इसके बाद प्राणायाम तथा षडङ्गन्यास करके निम्नलिखित मुद्राएँ दिखानी चाहिए।

(१) संक्षोभिणी, (२) द्रावणी, (३) आकर्षिणी (४) वश्या, (५) उन्माद, (६) महांकुशा, (७) खेचरी, (८) बीज तथा (९) महायोनि—ये नौ मुद्राएँ देवी की प्रिय मुद्राएँ हैं। इन मुद्राओं के लक्षण निम्नानुसार बताये गये हैं—

(१) संक्षोभिणी मुद्रा लक्षण

"मध्यमां मध्यमे कृत्वा कनिष्ठांगुष्ठरोधिते।
तर्जन्यौदण्डवत् कृत्वा मध्यमोपर्यनामिके॥
क्षोभाभिधान मुद्रेयं सर्व संक्षोम कारिणी॥"

(२) द्रावणी मुद्रा लक्षण

"एतस्या एव मुद्राया मध्यमे सरले यदा।
क्रियेते परमेशानि तदा विद्राविणीमता॥"

(३) आकर्षिणी मुद्रा लक्षण

"मध्यमा तर्जनीभ्यांतु कनिष्ठानामिके समे।
अंकुशाकार रूपाभ्यां मध्यमे परमेश्वरी॥
इयमार्काषणीमुद्रा त्रैलोक्याकर्षणे क्षमा॥"

(४) वश्यमुद्रा लक्षण

"पुटाकारौ करौ कृत्वा तर्जन्यावंकुशाकृतो।
परिवर्त्य क्रमेणैव मध्यमे तदधोगते॥
क्रमेण देवि तेनैव कनिष्ठानामिकादयः।
संयोज्य निविद्राः सर्वा अंगुष्ठावग्रदेशतः॥
मुद्रेयंपरमेशानि सर्ववश्यकरीमता॥"

(५) उन्माद मुद्रा लक्षण

"सम्मुखौ तु करौ कृत्वा मध्यमामध्यमेनुजे ।
अनामिके तु सरले तदधस्तर्जनीद्वयम् ।।
दण्डाकारौ ततोङ्गुष्ठौ मध्यमान स्वदेशगौ ।
मुद्रैषोन्मादिनी नाम क्लेदिनी सर्वयोषिताम् ।।"

(६) महांकुशा मुद्रा लक्षण

"अस्यास्त्वनामिका युग्ममधः कृत्वांकुशाकृति ।
तर्जन्यावपि तेनैव क्रमेण विनियोजयेत् ।।
इयं महांकुशा मुद्रा सर्वकामार्थसाधिनी ।।"

(७) खेचरी मुद्रा लक्षण

"सत्यं दक्षिण हस्ते तु सत्यहस्ते तु दक्षिणम् ।
बाहूकृत्त्वा महादेवि हस्तौ संपरिवर्त्य च ।।
कनिष्ठानामिके देवि युक्ता तेन क्रमेण तु ।
तर्जनीभ्यां समाक्रान्ते सर्वोर्ध्वमपि मध्यमे ।।
अंगुष्ठौ तु महादेवि सरलावपि कारयेत् ।
इयं सा खेचरी नाम मुद्रा सर्वोत्तमोत्तमा ।।"

(८) बीज मुद्रा लक्षण

"परिवर्त्य करौ स्पष्टावर्द्ध चन्द्राकृती प्रिये ।
तर्जन्यंगुष्ठ युगलं युगपत्कारयेत्ततः ।।
अधः कनिष्ठावष्टब्ध मध्यमे विनियोजयेत ।
तथैव कुटिले योज्ये सर्वाधस्तादनामिके ।।
बीज मुद्रेयमुदिता सर्वसिद्धि प्रदायिनी ।।"

(६) महायोनि मुद्रा लक्षण

"मध्यमे कुटिले कृत्वा तर्जन्युपरि संस्थिते ।
अनामिका मध्यगते तथैव हि कनिष्ठके ।।
सर्वा एकत्र संयोज्या अंगुष्ठ परिपीडिताः ।
एषा तु प्रथमा मुद्रा महायोन्याभिधा मता ।।"*

(इति मुद्रा लक्षणम्)

मुद्रा-प्रदर्शनोपरान्त निम्नानुसार 'ध्यान' करें ।

ध्यान

"बालार्कायुत् तेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं ।
नानालंकृति राजमानवपुषं बालोडुराट् शेखराम् ।।
हस्तैरिक्षुधनुः सृणिसुमशरंपाशं मुदा बिभ्रतीं ।
श्रीचक्रस्थित सुन्दरीं त्रिजगता माधारभूतां स्मरेत् ।।"

भावार्थ —"बालसूर्य जैसी कान्तिमान्, तीन नेत्रों वाली, लाल रंग के वस्त्रों से सुशोभित, अनेक प्रकार के भूषणों से अलंकृत शरीर वाली मस्तक पर चन्द्र-कला धारिणी, अपने चारों हाथों में क्रमशः इक्षुधनु, अंकुश, पुष्पवाण एवं पाश धारण करने वाली, श्रीचक्र पर विराजमान तथा तीनों लोकों की आधारभूता भगवती त्रिपुर सुन्दरी का मैं स्मरण करता हूँ ।"

जप-संख्या तथा हवन

इस मन्त्र का १,००,००० (एक लाख) की संख्या में जप करना चाहिए तथा त्रिमधुर मिश्रित कनेर के फूलों द्वारा विधिवत्-पूजित अग्नि में दशांश हवन करना चाहिए ।

षोडशी-पूजन विधि

अब षोडशी यन्त्र उद्धार तथा षोडशीयन्त्र पूजन की विधि का वर्णन किया जाता है, जिसके प्रयोग से साधक को अभीष्ट-सिद्धि प्राप्त होती है ।

---

* तान्त्रिक-साधनों में प्रदर्शित की जाने वाली विभिन्न मुद्राओं की विस्तृत तथा सचित्र जानकारी प्राप्त करने हेतु हमारी 'वृहद् मुद्रा तत्त्व विज्ञान' नामक पुस्तक का अध्ययन करें । (लेखक)

षोडषी पूजन यन्त्र

षोडशी यन्त्र के उद्धार की विधि निम्नानुसार है —

"स्व गर्भ में विन्दु सहित त्रिकोण लिखकर, उसके ऊपर अष्टदल लिखें। फिर उसके ऊपर क्रमशः दो दश दल, चतुर्दशदल, अष्ट दल एव षोडशदल लिखकर, इन्हें तीन रेखात्मक भूपुर से वेष्टित करें।

उक्त विधि से 'षोडशीयन्त्र' का जो स्वरूप वनेगा, उसे नीचे दिए गए चित्र में प्रदर्शित किया गया है।
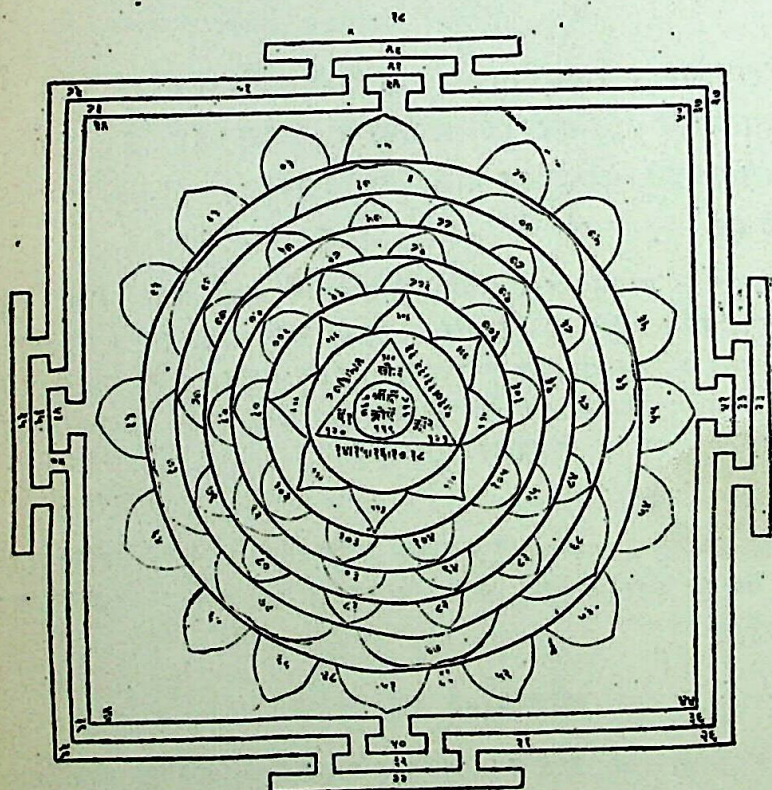
(षोडशी पूजन यन्त्र)

पात्र-स्थापन

श्रीयन्त्र पर श्रीविद्या का पूजन आरम्भ करना चाहिए। उसके लिए सर्व प्रथम पात्र-स्थापन किया जाता है। पात्र-स्थापन की विधि इस प्रकार है —

विधि – दक्षिण अथवा वाम-जो भी स्वर चल रहा हो, उसी ओर के हाथ से वक्ष्यमाण यन्त्र को लिखें। त्रिकोण के मध्य में षट्कोण, फिर वृत्त एवं भूपुर सहित यन्त्र को लिखें।

यन्त्र के मध्य की 'बाला-मन्त्र' से पूजा करनी चाहिए तथा उसके तीनों कोणों की बाला-मन्त्र के तीनों बीजों से पूजा करनी चाहिए। इन तीनों बीजों को अनुलोम एवं विलोम करके, उनसे क्रमशः षट्कोणों का पूजन करना चाहिए।

फिर उक्त यन्त्र के ऊपर 'अस्त्राय फट्'—इस मन्त्र से प्रक्षलित पात्राधार को रखें तथा ३१ अक्षर वाले मन्त्र द्वारा उस आधार का पूजन करें। आधार-पात्र की पूजा का ३१ अक्षर वाला मन्त्र इस प्रकार है—

"ॐ रां रीं रुं म्ल्व्यूं रं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने ऐं कलशाधाराय नमः।"

उक्त आधार-पात्र के ऊपर प्रदक्षिण क्रम से अग्नि की दशकलाओं का पूजन करें -

(१) धूम्रार्चि, (२) ऊष्मा, (३) ज्वलिनी, (४) ज्वालिनी, (५) विस्फुलिंगिनी, (६) सुश्री, (७) सुरूपा, (८) कपिला, (९) हव्यवहा तथा (१०) कव्यवहाये सविन्दु यकार आदि १० वर्णों के साथ अग्नि की कलाएँ कही गई हैं। इनके नाम के बाद 'कलाश्रीपादुकां पूजयामि' पद बोलते हुए उनका प्राण-स्थापन करना चाहिए। यथा—

"यं धूम्रार्चिषे नमः धूम्रार्चि कला श्रीपादुकां पूजयामि नमः।"

रं ऊष्मायै नमः ऊष्मा	,,	,,
लं ज्वलिन्यै नमः ज्वलिनी	,,	,,
वं ज्वालिन्यै नमः ज्वालिनी	,,	,,
शं विस्फुलिंगिन्यै नमः विस्फुलिंगनी	,,	,,
षं सुश्रियै नमः सुश्रीः	,,	,,
सं सुरूपायै नमः सुरूपा	,,	,,
हं कपिलायै नमः कपिला	,,	,,
ळं हव्यवाहायै नमः हव्यवहा	,,	,,
क्षं कव्यवाहायै नमः कव्यवहा	,,	,,

इसके पश्चात् इन कलाओं की पात्राधार पर प्राणप्रतिष्ठा करें। फिर पात्राधार पर "अस्त्राय फट्"—मन्त्र से प्रक्षालित स्वर्ण आदि से निर्मित कलश रखकर,

"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्म्ल्व्यूं हं सूर्यमण्डलाय वसुप्रदद्वादश कलात्मने क्लीं कलशाय नमः।"

इस मन्त्र से कलश का पूजन करें। फिर कलश पर निम्नलिखित मन्त्रों से तपिनी आदि सूर्य की कलाओं का पूजन करें। यथा—

"कं भं तर्पिन्यै नमः तपिनी कला श्रीपादुकांपूजयामि नमः।
खं बं तापिन्यै नमः तापिनींकला ,, ,,
गं फं धूम्रायै नमः धूम्राकला ,, ,,
घं पं मरीच्यैं नमः मरीचिकला ,, ,,
ङं नं ज्वालिन्यै नमः ज्वालिनीकला ,, ,,
चं धं रुच्यै नमः रुचि कला ,, ,,
छं दं सुषुम्णायै नमः सुषुम्ना कला ,, ,,
जं थं भोगदायै नमः भोगदा कला ,, ,,
झं तं विश्वायै नमः विश्वा कला ,, ,,
ञं णं बोधिन्यै नमः बोधिनी कला ,, ,,
टं ढं धारिण्यै नमः धारिणी कला ,, ,,
ठं डं क्षमायै नमः क्षमा कला ,, ।,,

इसके बाद "अं आं इं ईं..........ळं क्षं"—तक मातृकावर्णों को बोलते हुए कलश में जल भरकर—

"ॐ सां सीं सूं स्म्ल्व्यूं सं सोम मण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने सौः कलशामृताय नमः।"

इस मन्त्र से कलशोदक का पूजन करें। फिर निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए जल में 'अमृता' आदि चन्द्रमा की १६ कलाओं का पूजन करें। यथा—

"अं अमृतायै नमः अमृताकला श्रीपादुकां पूजायामिनमः।
आं मानदायै नमः मानदाकला ,, ,,
इं पूषायै नमः पूषाकला ,, ,,

ईं तुष्ट्यै नमः तुष्टिकला श्रीपादुकां पूजायामि नमः।
उं पुष्ट्यै नमः पुष्टि कला ,, ,,
ऊं रत्यै नमः रतिकला ,, ,,
ऋं धृत्यै नमः धृति कला ,, ,,
ॠं शशिन्यै नमः शशिनीकला ,, ,,
लृं चन्द्रिकायै नमः चन्द्रिका कला ,, ,,
ॡं कान्त्यै नमः कान्ति कला ,, ,,
एं ज्योत्स्नायै नमः ज्योत्स्ना कला ,, ,,
ऐं श्रियै नमः श्रीकला ,, ,,
ओं प्रीत्यै नमः प्रीतिकला ,, ,,
औं अंगदायै नमः अंगदा कला ,, ,,
अं पूर्णायैनमः पूर्णाकला ,, ,,
अः पूर्णामृतायै नमः पूर्णामृताकला ,, ,, ।"

इसके पश्चात् जल में—

"ह्स्क्ष्म्ल्व्लूं आनन्द भैरवाय वौषट् ।"

इस मन्त्र से भैरव का तथा—

"स्हक्ष्म्ल्व्लूं सुधा देव्यै वौषट् ।"

इस मन्त्र से सुधा देवी का पूजन करना चाहिए। फिर क्रमशः (१) मत्स्य, (२) अस्त्र, (३) कवच तथा (४) धेनु मुद्राऐं दिखाकर, (५) सन्निरोधिनो मुद्रा से सन्निरोधन कर, (६) मुसल, (७) चक्र, (८) महामुद्रा तथा (९) योनि मुद्राऐं प्रदर्शित करनी चाहिए।

मुद्रा-लक्षण

उक्त मुद्राओं के लक्षण निम्नानुसार बताये गये हैं—

(१) मत्स्यमुद्रा लक्षण

"वामोपरिष्टात्संस्थाप्य दक्षहस्तं प्रसारयेत् ।
अंगुष्ठौ युतयोः पार्श्वे मत्स्यमुद्रेयमीरिता ॥"

(२) अस्त्र मुद्रा लक्षण

"नाराचनुष्ट्युद्‌धृत बाहुयुग्मकांगुष्ठतर्जन्युदितोध्वनिस्तु ।
विष्क् विशक्तः कथिताऽस्त्र मुद्रा ।"

(३) कवच मुद्रा लक्षण

"करद्वन्द्वांगुल्यो वर्मणि (कवच) स्युः ।"

(४) धेनुमुद्रा लक्षण

"अन्योन्याभिमुखौ श्लिष्टौ कनिष्ठानामिकापुनः ।
तथैव तर्जनीमध्या धेनुमुद्रा प्रकीर्तिता ॥"

(५) सन्निरोध मुद्रा लक्षण

"आश्लिष्ठ मुष्टियुगला प्रोन्नताङ्गुष्ठयुग्मका ।
सन्निधाने समुद्दिष्टा मुद्रेयं तन्त्रवेदिभिः ॥
अङ्गुष्ठगर्भिणी सैव सन्निरोधे समीरिता ॥"

(६) मुसल मुद्रा लक्षण

"मुष्टिं कृत्त्वा तु हस्ताभ्यां वामस्पोपरि दक्षिणम् ।
कुर्यान्मुसलमुद्रेयं सर्वविघ्नविनाशिनी ॥"

(७) चक्रमुद्रा लक्षण

"हस्तौ तु संमुखौकृत्त्वा संलग्नौ सुप्रसारितौ ।
कनिष्ठांगुष्ठकौ लग्नौ मुद्रैषा चन्द्र संज्ञिका ॥"

(८) महामुद्रा लक्षण

"अन्योन्यग्रथितांगुष्ठौ प्रसारितकरांगुलि ।
महामुद्रेय मुदिता परमीकरणा बुधैः ॥'

(६) योनिमुद्रा लक्षण

"मिथः कनिष्ठके बद्ध्वा तर्जनीभ्यमनामिके ।
अनामिकोर्ध्वं संश्लिष्ट दीर्घमध्यमयोरधः ।
अंगुष्ठाग्रद्वयं न्यस्यद् योनिमुद्रेयमीरिता ।।"

उक्त रीति से कलश स्थापित कर, उसके दाँई ओर शंख तथा विशेषार्घ्य को भी पूर्वोक्त रीति से स्थापित करें।

[टिप्पणी—शंख आदि की स्थापना के समय कलश-स्थापन में बताये गये पूर्वोक्त मन्त्रों में 'कलश' के स्थान पर 'शंख' अथवा 'विशेषार्घ्य' पद लगाना चाहिए।]

फिर, अर्घ्यपात्र में अकारादि १६, ककारादि १६ एवं थकारादि १६ वर्णों की ३ रेखाओं से निर्मित तथा मध्य में ह् क्ष वर्णों से सुशोभित त्रिकोण का ध्यान कर, उसके मध्य में—

"ॐ ह्रीं हं सः सौः हं स्वाहा ।"

इस अष्टाक्षर-मन्त्र से बाला का पूजन करें। फिर उसके ऊपर ३ बार मूलमन्त्र का जप करके, पूर्वोक्त मत्स्य आदि ६ मुद्राएँ प्रदर्शित करें।

उक्त प्रकार से पात्रों का विधिवत् स्थापन करने के उपरान्त अर्घ्यपात्र से जल लेकर, मूलमन्त्र का जप करते हुए, पूजा-सामग्री एवं स्वयं को छींटे लगायें। तत्पश्चात् पूर्वोक्त—

"बालार्कायुततेजसं त्रिनयनां०......"

मन्त्र से देवी के स्वरूप का ध्यान कर, निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा मानसी-पूजा करें—

"ॐ लं पृथिव्यात्मकं महादेव्यै गन्धं विलेपयामि नमः—
अङ्गुष्ठ कनिष्ठाभ्याम् ।

ॐ हं आकाशात्मकं महादेव्यै पुष्पाणि समर्पयामि नमः
अङ्गुष्ठानामिकाभ्याम् ।

ॐ यं वाय्वात्मकं महादेव्यै धूपं आघ्रापयामि नमः
अङ्गुष्ठमध्यमाभ्याम् ।

ॐ रं वह्न्यात्मकं महादेव्यै दीपं दर्शयामि नमः

अङ्गुष्ठतर्जनीभ्याम् ।

ॐ वं अमृतात्मकं महादेव्यै नैवेद्यं निवेदयामि नमः

अंगुष्ठानामिकाभ्याम् ।"

पीठ-पूजा विधि

पात्र-स्थापन करने के वाद देवी का विधिवत् ध्यान तथा मानसोपचार-पूजन करके, यन्त्रराज के ऊपर निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा पीठ-देवताओं तथा पीठ-शक्तियों का पूजन करें। यथा —

कर्णिका में—

"ॐ मण्डूकाय नमः ।

ॐ कालाग्नि रुद्राय नमः ।

ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ।

ॐ आधार शक्तये नमः ।

ॐ कूर्माय नमः ।

ॐ शेषाय नमः ।

ॐ वाराहाय नमः ।

ॐ पृथिव्यै नमः ।

ॐ सुधाम्बुधये नमः ।

ॐ रत्नद्वीपाय नमः ।

ॐ मेरवे नमः ।

ॐ नन्दनवनाय नमः ।

ॐ कल्पवृक्षाय नमः ।"

कर्णिका-मूल में—

"ॐ विचित्रानन्दभूम्यै नमः ।"

फिर कर्णिका के ऊपर—

"ॐ श्री रत्नमन्दिराय नमः ।

ॐ रत्नवेदिकायै नमः ।

ॐ धर्मवारणाय नमः ।

ॐ रत्नसिंहासनाय नमः ।"

चारों दिशाओं में—

"ॐ धर्माय नमः ।

ॐ ज्ञानाय नमः ।

ॐ वैराग्याय नमः ।

ॐ ऐश्वर्याय नमः ।

ॐ अधर्माय नमः ।

ॐ अज्ञानाय नमः ।

ॐ अवैराग्याय नमः ।

ॐ अनैश्वर्याय नमः ।"

फिर मध्य में—

"ॐ आनन्दकन्दाय नमः ।

ॐ संविज्ञालाय नमः ।

ॐ सर्वतत्त्वात्मक पद्माय नमः ।

ॐ प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः ।

ॐ विकारमय केसरेभ्यो नमः ।

ॐ पञ्चाशद्बीजाढ्य कर्णिकायै नमः ।

ॐ अं द्वादश कलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः ।

ॐ उं षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः ।

ॐ मं दशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः ।

ॐ सं सत्त्वाय नमः ।

ॐ रं रजसे नमः ।

ॐ तं तमसे नमः ।

ॐ अं आत्मने नमः ।

ॐ उं अन्तरात्मने नमः ।

ॐ मं परमात्मने नमः ।

ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ।"

तत्रैव—

"ॐ मां मायातत्त्वाय नमः ।

ॐ कं कलतत्त्वाय नमः ।

ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ।

ॐ णं परतत्त्वाय नमः ।"

तत्रैव -

"ॐ बं ब्रह्मप्रेताय नमः ।

ॐ विं विष्णु प्रेताय नमः ।

ॐ रुं रुद्र प्रेताय नमः ।

ॐ इं ईश्वर प्रेताय नमः ।

ॐ सं सदाशिव प्रेताय नमः ।"

तत्रैव—

"ॐ सुधार्णवासनाय नमः ।

ॐ प्रेताम्बुजासनाय नमः ।

ॐ दिव्यासनाय नमः ।

ॐ चक्रासनाय नमः ।

ॐ सर्वयन्त्रासनाय नमः ।

ॐ साध्यसिद्धासनाय नमः ।"

इसके पश्चात् विधिवत् चक्रराज का पूजन करके पूर्वादि दिशाओं तथा मध्य में निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा ९ पीठ शक्तियों का पूजन करना चाहिए। यथा—

"ॐ इं इच्छायै नमः ।

ॐ ज्ञां ज्ञानायै नमः ।

ॐ क्रिं क्रियायै नमः ।

ॐ कां कामिन्यै नमः ।

ॐ कां कामदायिन्यै नमः ।

ॐ रं रत्यै नमः ।

ॐ रं रतिप्रियायै नमः ।

ॐ नं नन्दायै नमः ।"

मध्य में—

"ॐ मं मनोन्मन्यै नमः ।"

उक्त प्रकार से पीठ-शक्तियों का पूजन करने के बाद निम्नलिखित मन्त्र से चक्रनायक का पूजन करना चाहिए—

"ऐं परायै अपरायै परापरायै ह्सौः सदाशिवमहाप्रेत पद्मासनाय नमः ।"

इस प्रकार पीठ-पूजा करने के पश्चात् पुनः पुष्पांजलि देनी चाहिए। पुष्पांजलि देने का मन्त्र इस प्रकार है—

"ह्रीं श्रीं प्रकट गुप्तगुप्ततर सम्प्रदाय कुलनिगर्भरहस्या तिरहस्य परापर रहस्य संज्ञक श्रीचक्रगत योगिनीपादुकाभ्यो नमः ।"

इसके बाद 'त्रिखण्ड मुद्रा' बनाकर तथा अंजलि में पुष्प लेकर पूर्व वर्णित "बालार्कायुत तेजसं०··········स्मरेत् ।"

मन्त्र से देवी के स्वरूप का ध्यान कर, मूलमन्त्र का उच्चारण करें। फिर हृदय-कमल से नासिका-रन्ध्र से निर्गत एवं ब्रह्म रन्ध्र मार्ग से याजित चैतन्य (तेज) को पुष्पांजलि आवाहनोमुद्रा में लेकर, उस तेज को श्रीचक्रराज पर स्थापित कर, निम्नलिखित दो श्लोकों का पाठ करें—

"महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दधिग्रहे ।
सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरी ॥१॥
देवेशि भक्तिसुलभे सर्वावरण संयुते ।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिराभव ॥२॥"

[टिप्पणी—'आवाहनी मुद्रा' का लक्षण इस प्रकार बताया गया है—

"सम्यक् संपूजितैः पुष्पैः कराभ्यां कल्पिताञ्जलिः ।
आवाहनी समाख्याता मुद्रा देशिक सत्तमः ।।"]

उक्त प्रकार से 'आवाहन' करने के उपरान्त स्थापन करें। स्थापन में पहले 'भैरवी मन्त्र,' बोलकर फिर 'स्थापना-मन्त्र' का उच्चारण करें—

भैरवी मन्त्र

"ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्सौः ।"

स्थापन-मन्त्र

"श्रीमत्त्रिपुर सुन्दरि चक्रेऽस्मिन् कुरु सान्निध्यं नमः ।"

(१) स्थापनी-मुद्रा लक्षण

"अधोमुखी कृता सैव स्थापनीति निगद्यते ।"

इसके बाद (१) 'सन्निधान मुद्रा' से सन्निधान, (२) 'सन्निरोध-मुद्रा' से सन्निरोधन तथा 'सम्मुखी मुद्रा' से 'सम्मुखीकरण करने के बाद देवी के अङ्गों में षडङ्गन्यास करें। इसे 'सकलीकरण' कहते हैं। इन मुद्राओं के लक्षण निम्नलिखित हैं—

(२) सन्निधान-सन्निरोध एवं सम्मुखी मुद्रा लक्षण

"आश्लिष्टमुष्टि युगला प्रोन्नतांगुष्ठ युग्मका ।
सन्निधाने समुद्दिष्टा मुद्रेयं तन्त्रवेदिभिः ।।
अंगुष्ठ गर्भिणी सैव सन्निरोधे समीरिता ।
हृदि बद्धाञ्जलि मुद्रा सम्मुखी करणे मता ।।"

(३) सकलीकरण लक्षण

"देवाङ्गेषु षडङ्गानां न्यासः स्यात्सकलीकृतिः ।"

इसके बाद क्रमशः अवगुण्ठन, अमृतीकरण तथा परमीकरण मुद्राओ द्वारा अवगुण्ठन, अमृतीकरण तथा परमीकरण करें। इन मुद्राओं के लक्षण निम्नानुसार हैं—

(४) अवगुण्ठन-मुद्रा लक्षण

"सव्यहस्त कृतामुष्ठिः दीर्घाधोमुख तर्जनी ।
अवगुण्ठन मुद्रेयमभितो भ्रामिता भवेत् ॥"

(५) अमृतीकरण मुद्रा लक्षण

"अन्योन्याभिमुखो श्लिष्टौ कनिष्ठा नामिका पुनः ।
तथा तु तर्जनीमध्या धेनुमुद्रा प्रकीर्तिता ॥
अमृतीकरणं कुर्यात्तया देशिक सत्तमः ।"

(६) परमीकरण मुद्रा लक्षण

"अन्योन्य ग्रथितांगुष्ठौ प्रसारित करांगुलि ।
महामुद्रेयं मुदिता परमीकरणा बुधौः ॥"

इसके बाद मूलमन्त्र से पाद्यादि उपचारों से लेकर पुष्प चढ़ाने तक विधिवत् पूजन कर तीन बार तर्पण करें । तत्पश्चात् पुष्पांजलि लेकर देवी का विधिवत् ध्यान करके, आवरण-पूजा हेतु देवी की आज्ञा प्राप्त करे। पूजा-पद्धति निम्नानुसार है ।

पूजा-पद्धति

पीठ-पूजा करने के पश्चात् ।

"ह्लीं श्रीं प्रकट गुप्तगुप्ततर सम्प्रदाय कुलनिगर्भ रहस्याति रहस्य-परापररहस्य संज्ञक श्रीचक्रगत योगिनी पादुकाभ्यो नमः ।"

इस मन्त्र से पुष्पांजलि देकर, 'त्रिखण्डामुद्रा' बाँध कर तथा पुनः पुष्पांजलि लेकर, देवी को अपनी आत्मा से अभिन्न समझते हुए निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यान

"बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पाशांकुशशरांश्चापं धारयन्तीं शिवां भजे ॥"

उक्त प्रकार से ध्यान कर, दूर्वा, अक्षत रक्तचन्दन मिश्रित लोहितवर्ण हाथों की पुष्पांजलि में मातृकामन्त्र की भावना करें। तत्पश्चात् मूल-मन्त्र से

षट्चक्र-भेदन करते हुए चैतन्यमयी देवी को शिरस्थ: सहस्रदल-कमल को कर्णिका के मध्य में विराजमान परमशिव से संयोजित कर, सहस्रार-स्थित सुधा-सागर में विश्राम करने हेतु स्थापित करें। तत्पश्चात् अमृतलोलुपा चैतन्यमयी देवी को प्रवहणशील (जिससे वायु वह रही हो) नासा-पुट द्वारा पूर्वकल्पित पुष्पांजलि से अर्पित करते हुए निम्नलिखित मन्त्र से देवी का आवाहन करें—

आवाहन-मन्त्र

"ॐ चैतन्यं हृत्कमलतोनासिकारन्ध्रनिर्गतम् ।
ब्रह्मरन्ध्रस्य मार्गेण योजितं कुसुमाञ्जलौ ।।
महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्द विग्रहे ।
सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि ।।"

उक्त प्रकार से पुष्पांजलि में देवी का आवाहन कर उन पुष्पों को 'श्री यन्त्र' पर चढ़ा दें। फिर निम्नानुसार प्रार्थना करें—

प्रार्थना-मन्त्र

"ॐ देवेशि भक्ति सुलभे सर्वावरण संयुते ।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिराभव ।।"

प्रार्थना के बाद निम्नलिखित मन्त्र तथा स्थापनी मुद्रा द्वारा स्थापन' करें—

स्थापन-मन्त्र

"ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्सौः श्रीमत्त्रिपुर सुन्दरी चक्रेऽस्मिन् कुरु सान्निध्यं नमः ।"

[टिप्पणी—स्थापनी मुद्रा का लक्षण पहले बताया जा चुका है।]

फिर मूलमन्त्र बोलकर, निम्नलिखित मन्त्र से देवी को 'आसन' प्रदान करें—

आसन-मन्त्र

"ॐ सर्वान्तर्यामिनि देवि सर्वं बीजमयं शुभम् ।
स्वात्म स्थाप्य परं शुद्धमासनं कल्पयाम्यहम् ।।
आसनं गृहाण नमः ।"

इसके बाद पुनः मूलमन्त्र बोलकर, निम्नलिखित मन्त्र से देवी को अपने समीप प्रदत्त दिव्य आसन पर बैठायें—

उपवेशन-मन्त्र

"ॐ अस्मिन् वरासने देवि सुखासीनाऽक्षरात्मके ।
प्रतिष्ठिता भवेशि त्वं प्रसद्धि परमेश्वरि ।।
उपविष्ठा भव नमः ।"

इसके बाद मूल-मन्त्र वोल कर, निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए तथा पूर्वोक्त 'सन्निधान-मुद्रा' द्वारा 'सन्निधीकरण' करना चाहिए—

सन्निधीकरण-मन्त्र

"ॐ अनन्यं तव देवेशि यन्त्रं शक्तिरिदं वरे ।
सान्निध्यं कुरु तस्मिन्त्वं भक्तानुग्रहतत्परे ।।
भगवति त्रिपुर सुन्दरि इह सन्निधेहि ।"

इसके वाद मूल-मन्त्र वोलकर, निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए तथा पूर्वोक्त 'सन्निरोध-मुद्रा' द्वारा 'सन्निरोधन' करना चाहिए—

सन्निरोधन-मन्त्र

"ॐ आज्ञया तव देवेशि कृपाम्भोधे गुणाम्बुधे ।
आत्मानन्दैक तृप्तां त्वां निरुर्णाध्य पितर्गुरो ।।
श्रीमत्त्रिपुर सुन्दरि सन्निरुध्यस्व ।"

इसके वाद मूल मन्त्र वोलकर, निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए तथा 'सम्मुखीकरण-मुद्रा द्वारा' सम्मुखी करण करना चाहिए—

सम्मुखीकरण-मन्त्र

"ॐ अज्ञानाद दुर्मनस्ताद्वा वैकल्पात्साधनस्य च ।
यदा पूर्णं भवेत्कृत्यं तदप्यभिमुखी भव ।
श्रीमत्त्रिपुर सुन्दरि इह सम्मुखी भव ।।"

इसके बाद देवी के अङ्गों में 'षडङ्गन्यास' करें । इसे 'सकलीकरण' कहा जाता है । न्यास के मन्त्र निम्नलिखित हैं—

सकलीकरण (षडङ्गन्यास) मन्त्र

"श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः हृदयाय नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा ।

कएईल ह्रीं शिखायै वषट् ।

हसकहल ह्रीं कवचाय हुम् ।

सकल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ।

सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् ।"+

पाद्य-मन्त्र

इसके बाद जल में श्यामाक, विष्णुक्रान्ता, कमल तथा दूर्वा डाल कर मूलमन्त्र के अन्त में निम्नलिखित वाक्य का उच्चारण करते हुए 'पाद्य' प्रदान करें—

"एतत्पाद्यं श्रीमत्त्रिपुर सुन्दर्यै नमः ।"

अर्घ्य मन्त्र

इसके बाद अर्घ्य-पात्र में दूर्वा, तिल, दर्भाग्र, सरसों, जौ, पुष्प, गन्ध एवं अक्षत लेकर, मूलमन्त्र के साथ निम्नलिखित वाक्य का उच्चारण करते हुए 'अर्घ्य' प्रदान करें—

"इदमर्घ्यं श्रीमत्त्रिपुर सुन्दर्यै स्वाहा ।"

आचमन-मन्त्र

इसके बाद आचमनीय-जल में लौंग, जायफल तथा कंकोल डालकर, मूलमन्त्र के साथ निम्नलिखित वाक्य का उच्चारण करते हुए 'आचमन' करायें—

"इदमाचनीयं स्वधा ।"

स्नान-मन्त्र

इसके बाद स्नानीय-जल में चन्दन, अगर तथा सुगन्धित-द्रव्य डालकर मूलमन्त्र के साथ निम्नलिखित वाक्य का उच्चारण करते हुए स्नान, करायें—

"इदं स्नानीयं निवेदयामि ।"

इसके पश्चात् पञ्चामृत, शुद्धोदक एवं गन्धोदक से स्नान कराके, 'सर्वाङ्ग-स्नान' करायें। तदुपरान्त 'अभिषेक' करें। फिर पुनः 'आचमन' कराने के बाद 'वस्त्र' तथा 'उत्तरीय' समर्पित करें। तदुपरान्त पुनः आचमन कराके 'अलंकार' एवं 'आभूषण' समर्पित करें। इसके बाद मूलमन्त्र का उच्चारण कर, उसके अन्त

\+ कतिपय आचार्यों के मत से 'सकलीकरण' के बाद प्राणप्रतिष्ठा करनी चाहिए तथा 'अवगुण्ठन-मुद्रा' से ही अवगुण्ठन कर लेना चाहिए ।

में 'एष गन्धोनमः' यह वाक्य जोड़कर, कनिष्ठा अंगुली तथा अंगूठे को मिलाकर 'गन्धमुद्रा' बनाते हुए 'गन्ध' समर्पित करें। इसके उपरान्त अनेक प्रकार के परिमल सौभाग्य द्रव्य अर्पित करें तथा अक्षत चढ़ायें।

फिर अंगुष्ठ तथा अनामिका के संयोग से 'पुष्प मुद्रा' बनाकर, मूल मन्त्र का उच्चारण करते हुए अन्त में 'एतानि पुष्पाणि वौषट्' लगाकर ऋतुकालोद्भव पुष्प चढ़ायें।

इसके अनन्तर ३ पुष्पांजलियाँ समर्पित कर विधिवत् देवी का ध्यान करें तथा उनके परिवार के पूजनार्थ निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए आज्ञा माँगे—

"ॐ सं विन्मये परेदेवि परामृतरस प्रिये।
अनुज्ञां देहि त्रिपुरे परिवारार्चनाय मे।"

यह कहकर पुनः पुष्पांजलि दें।

षोडशी-परिवार पूजन पद्धति

भगवती 'त्रिपुर सुन्दरी' का पूजन सम्पन्न करके, उनसे परिवार-पूजन की आज्ञा लेकर सर्वप्रथम १६ नित्याओं का पूजन करना चाहिए।

नित्या-पूजन विधि

शुक्ल पक्ष में कामेश्वरी से विचित्रा पर्यन्त नित्याओं का तथा कृष्ण पक्ष में विचित्रा से कामेश्वरी तक नित्याओं का (त्रिकोण की रेखाओं के समीप ५-५ के क्रम से तथा वामावर्त क्रम से) पूजन करना चाहिए। मध्य विन्दु में मूल-मन्त्र द्वारा षोडशी का पूजन करना चाहिए।

एक-एक स्वर वोलकर पहले नित्या का मन्त्र फिर उनका नाम, तत्पश्चात् "नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः" लगाने से नित्या-पूजन के मन्त्र बन जाते हैं।

दाँये हाथ के अँगूठा तथा अनामिका द्वारा "पूजयामि" कहते समय पुष्प आदि चढ़ाने चाहिए एवं 'तर्पयामि' कहते समय बाँये हाथ से 'तत्त्वमुद्रा' द्वारा जल अथवा दूध चढ़ाना चाहिए।

[टिप्पणी—बाँये हाथ के अंगूठे तथा अनामिका को मिलाने से 'तत्त्व मुद्रा' बनती है। इस मुद्रा द्वारा तर्पण करना चाहिए।]

नित्याओं के नाम तथा उनके मन्त्र निम्नानुसार हैं—

(१) कामेश्वरी-मन्त्र

अं "ऐं क्लीं सौः ॐ नमः कामेश्वरि इच्छाकामप्रदे सर्वसत्त्वव-शंकरि सर्वजगत्क्षोभणकरि हुं हुं हुं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सौः क्लीं ऐं।"

"कामेश्वरी नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।"

(२) भगमालिनी-मन्त्र

आं "ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशंकरि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्व-रूपे सर्वभगानि मे ह्यानय वरदे वेते सुरेते भगक्लिन्न क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं।"

"भगमालिनी नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।"

(३) नित्यक्लिन्ना-मन्त्र

इं "ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा।"

"नित्य क्लिन्ना नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।"

(४) भेरुण्डा-मन्त्र

ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं च्रौं छ्रौं ज्रौं झ्रौं स्वाहा।"

"भेरुण्डा नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।"

(५) वह्नि वासिनी-मन्त्र

उं "ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः।

"वह्निवासिनी नित्या श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि नमः।"

(६) महाविद्येश्वरी-मन्त्र

ॐ "ॐ ह्रीं फ्रें सः नित्यक्लिन्नेमदद्रवेस्वाहा।"

"महाविद्येश्वरी नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।"

(७) शिवदूती-मन्त्र

ऋ "ह्रीं शिवदूत्यै नमः ।"
"शिवदूतीनित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।"

(८) त्वरिता-मन्त्र

ॠं "ॐ ह्रीं हु खेच छे क्षः स्त्रीं हूं क्षे ह्रीं फट् ।"
"त्वरिता नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।"

(९) कुलसुन्दरी-मन्त्र

लृं "ऐं क्लीं सौः ।"
"कुलसुन्दरी नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।"

(१०) नित्या-मन्त्र

ऐं क्लीं सौः ह्स्त्रों हस्कलरीं ह्सौः सौः क्लीं ऐं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ।"
लॄं --नित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।"

(११) नीलपताकिनी-मन्त्र

एं "ॐ ह्रीं फ्रें स्त्रं ह्रीं क्रों नित्यमदद्रवे हुं क्रों ।
"नीलपताकिनीनित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।"

(१२) विजया-मन्त्र

ऐं "हस्खफ्रें विजयायै नमः ।
विजया नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।"

(१३) सर्वमंगला-मन्त्र

ओं "स्वौं सर्वमङ्गलायै नमः ।"
"सर्वमङ्गला नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामिनमः ।

(१४) ज्वालामालिनी-मन्त्र

औं "ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलंति प्रज्वलंनि ज्वल ज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट् ।"

"ज्वालामालिनी नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(१५) विचित्रा-मन्त्र

अं 'च्क्रौं।"

"विचित्रा नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(१६) महात्रिपुर सुन्दरी-मन्त्र

अः "श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ।"

"महात्रिपुर सुन्दरी नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।"

ज्ञातव्य—त्रिकोण में पूर्वोक्त मन्त्रों द्वारा १५ नित्याओं का पूजन करके मध्यविन्दु में सोलहवीं महात्रिपुरसुन्दरी का पूजन करना चाहिए ।

गुरु-पूजन

(१) दिव्यौघ, (२) सिद्धौघ तथा (३) मानवौघ भेद से गुरू तीन प्रकार के होते हैं । प्रत्येक प्रकार के गुरू निम्नानुसार वताये गये हैं—

परमदिव्यौघ गुरू—(१) पर प्रकाश, (२) परशिव, (३) परशक्ति, (४) कौलेश, (५) शुक्लादेवी, (६) कुलेश्वर तथा (७) कामेश्वरी ।

परावर सिद्धौघ गुरु—(१) भोग, (२) क्रीड, (३) समय तथा (४) सहज ।

अपर मानवौघ गुरु—(१) गगन, (२) विश्व, (३) विमता, (४) मदन, (५) भुवन, (६) लीला, (७) स्वात्मा तथा (८) प्रियां ।

इनमें से पुरुष-गुरुओं के नाम के बाद 'आनन्द नाथ' तथा स्त्री-गुरुओं के नाम के बाद 'अम्बा' शब्द लगाना चाहिए । ये गुरु सब प्रकार की सिद्धि देने वाले हैं ।

'दिव्यौघ' गुरुओं में—(१) परशक्ति, (२) शुक्लादेवी तथा (३) कामेश्वरी—ये तीन स्त्रियां हैं । शेष सभी पुरुष हैं ।

सिद्धौघ' गुरुओं में चारों पुरुष हैं।

'मानवौघ' गुरुओं में (१) लीला तथा (२) प्रिया—ये दो स्त्रियाँ हैं। शेष सभी पुरुष हैं।

बिन्दु तथा त्रिकोण के बीच की ३ पंक्तियों में उक्त गुरुओं का पूजन करना चाहिए। इनके पूजन-मन्त्र निम्नानुसार हैं—

गुरु-पूजन मन्त्र

"(१) पर प्रकाशानन्द नाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(२) पर शिवानन्दनाथ ,, ,,
(३) पर शक्त्यम्बा ,, ,,
(४) कौलेशानन्दनाथ ,, ,,
(५) शुक्लाम्बा ,, ,,
(६) कुलेश्वरानन्दनाथ ,, ,,
(७) कामेश्वर्यम्बा ,, ,,
(८) भोगानन्दनाथ ,, ,,
(९) क्रीडानन्दनाथ ,, ,,
(१०) समयानन्द नाथ ,, ,,
(११) सहजानन्द नाथ ,, ,,
(१२) गगनानन्द नाथ ,, ,,
(१३) विश्वानन्द नाथ ,, ,,
(१४) विमलानन्द नाथ ,, ,,
(१५) मदनानन्द नाथ ,, ,,
(१६) भुवनानन्द नाथ ,, ,,
(१७) लीलाम्बा ,, ,,
(१८) स्वात्मानन्दनाथ ,, ,,
(१९) प्रियाम्बा ,, ,, ।"

आम्नाय-देवता पूजन

इसके वाद विन्दु के चारों ओर क्रमशः पूर्व, दक्षिण, पश्चिम एवं उत्तर आम्नाय के देवताओं का पूजन करना चाहिए। आम्नाय-देवताओं के पूजन-मन्त्र निम्नलिखित हैं—

"(१) ह्लीं श्रीं पूर्वाम्नायदेवता श्रीपादुकांपूजयामि नमः।
(२) ह्लीं श्रीं दक्षिणाम्नाय देवता ,, ,,
(३) ह्लीं श्रीं पश्चिमाम्नाय देवता ,, ,,
(४) ह्लीं श्रीं उत्तराम्नाय देवता ,, ,, ।"

पंच-पंचिका-पूजन

इसके वाद मध्य में तथा पूर्व आदि दिशाओं में पंच पंचिकाओं का पूजन करना चाहिए।

पंचिकाओं के पाँचों वर्गों में 'आद्या' श्रीविद्या ही वतलाई गई हैं। मध्य में 'आद्या' का तथा पूर्व आदि दिशाओं में अन्य चारों का पूजन किया जाता है।

पंचिकाओं के पाँचों वर्ग (पंचक) निम्नानुसार हैं—

(क) 'लक्ष्मी' संज्ञक पंचक—(१) श्रीविद्या, (२) लक्ष्मी, (३) महालक्ष्मी, (४) त्रिशक्ति एवं (५) सर्वसाम्राज्या।

(ख) 'कोश' संज्ञक पंचक—(१) श्री विद्या, (२) परंज्योति, (३) परनिष्कल शांभवी, (४) अजपा तथा (५) मातृका।

(ग) 'कल्पलता' संज्ञक पंचक—(१) श्री विद्या, (२) त्वरिता, (३) पारिजातेश्वरी, (४) त्रिपुटा तथा (५) पंच वाणेशी।

(घ) 'कामधेनु' संज्ञक पंचक—(१) श्रीविद्या, (२) अमृतपीठेशी, (३) सुधाश्री, (४) अमृतेश्वरी तथा (५) अन्नपूर्णा।

(ङ) 'रत्न' संज्ञक पंचक—(१) श्रीविद्या, (२) सिद्धलक्ष्मी, (३) मातंगी, (४) भुवनेशी तथा (५) वाराही।

ज्ञातव्य—श्रीविद्या का मध्य में मूल-मन्त्र से पूजन करना चाहिए तथा अन्यों का क्रमशः पूर्व आदि चारों दिशाओं में उनके मन्त्रों द्वारा पूजन करना चाहिए। इनके मन्त्रों के साथ "श्री पादुकां पूजयामि नमः' लगाने से इनके पूजन-मन्त्र बन जाते हैं।

आगे विभिन्न पंचकों की देवियों के पूजन-मन्त्रों को अलग-अलग लिखा जा रहा है।

(क) 'लक्ष्मी-पंचक' के मन्त्र

(१) 'त्रिपुर सुन्दरी' का मन्त्र—मूल-मन्त्र के बाद—

"त्रिपुर सुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।" लगायें।"

(इससे यन्त्र के 'मध्य' में पूजन करें)।

(२) 'लक्ष्मी' का मन्त्र—

"श्रीं" लक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।"

(इससे 'पूर्व' में पूजन करें)।

(३) 'महालक्ष्मी' का मन्त्र—

"ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नम।"

महालक्ष्मी श्री पादुकां पूजयामि नमः।"

(इससे 'दक्षिण' में पूजन करें)।

(४) 'त्रिशक्ति' का मन्त्र—

"श्रीं ह्रीं क्लीं" त्रिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः।"

(इससे 'पश्चिम' में पूजन करें)।

(५) 'सर्वसाम्राज्या' का मन्त्र—

"श्रीं स्ह्क्ल्ह्रीं श्रीं' सर्वसाम्राज्या श्री पादुकां पूजयामि नमः।"

(इससे 'उत्तर' में पूजन करें)।

(ख) 'कोश-पंचक' के मन्त्र—

(१) 'त्रिपुर सुन्दरी' का मन्त्र—मूल-मन्त्र के बाद

"त्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।"

(इससे मध्य में पूजा करें)

(२) 'परंज्योति' का मन्त्र—

"ॐ ह्रीं हंसः सोऽहं स्वाहा" परंज्योति श्री पादुकां पूजयामि नमः।"

(इससे 'पूर्व' में पूजा करें)

(३) 'पर निष्कल शाम्भवी' का मन्त्र—

"ॐ परनिष्कल शाम्भवी" परनिष्कल शांभवी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।"

(इससे दक्षिण में पूजा करें)

(४) 'अजपा' का मन्त्र—

"हंसः अजपा श्री पादुकां पूजयामि नमः ।"

(इससे 'पश्चिम' में पूजा करें)

(५) 'मातृका' का मन्त्र—

"अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं" मातृका श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।"

(इससे 'उत्तर' में पूजा करें)

(ग) 'कल्पलता-पंचक' के मन्त्र

(१) 'त्रिपुर सुन्दरी' का मन्त्र—मूल-मन्त्र के बाद

"त्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।"

(इससे 'मध्य' में पूजा करें)

(२) 'त्वरिता' का मन्त्र—

"ॐ ह्रीं हुं खेचछेक्षः स्त्रीं हुं क्षे ह्रीं फट्" त्वरिता श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।"

(इससे 'पूर्व' में पूजा करें)

(३) 'पारिजातेश्वरी' का मन्त्र—

"ॐ ह्रीं हं सं कं लं ह्रैं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः पारिजातेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि नमः ।"

(इससे 'दक्षिण' में पूजा करें)

(४) 'त्रिपुटा' का मन्त्र—

"श्रीं ह्रीं क्लीं" त्रिपुटा श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।"

(इससे 'पश्चिम' में पूजा करें)

(५) 'पंचबाणेशी' का मन्त्र—

"द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः" पंच बाणेशी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।"

(इससे 'उत्तर' में पूजा करें) ।

(घ) 'कामधेनु-पंचक' के मन्त्र

(१) त्रिपुर सुन्दरी का मन्त्र—मूल-मन्त्र के बाद

"त्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।"

(इससे 'मध्य' में पूजा करें)।

(२) 'अमृत पीठेशी' का मन्त्र—

"ऐं क्लीं सौः" अमृतपीठेशी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।"

(इससे 'मध्य' में पूजा करें)।

(३) 'सुधाश्री' का मन्त्र—

'ह्रस्त्रीं स्ह्लीं श्रीं क्लीं' सुधाश्री श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।"

(इससे 'दक्षिण' में पूजा करें)।

(४) 'अमृतेश्वरी' का मन्त्र—

"सौः क्लीं हैं" अमृतेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।"

(इससे 'पश्चिम' में पूजा करें)।

(५) 'अन्नपूर्णा' का मन्त्र—

"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्ण स्वाहा ।" अन्नपूर्णे श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।"

(इससे 'उत्तर' में पूजा करें)।

(ङ) 'रत्न-पंचक' के मन्त्र

(१) 'त्रिपुर सुन्दरी' का मन्त्र—मूल-मन्त्र के बाद

"त्रिपुरसुन्दरी श्री पादुकां पुजयामि नमः ।"

(इससे 'मध्य' में पूजा करें)।

(२) 'सिद्धलक्ष्मी' का मन्त्र—

"ऐंक्लिन्ने मदद्रवे कुले ह्सौः" सिद्धलक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।"

(इससे पूर्व में पूजा करें)

(३) 'मातंगी' का मन्त्र—

"ऐं क्लीं सौः ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति मातंगीश्वरि सर्वजन मनोहरि सर्व राजवशंकरि सर्वमुख रंजिनि सर्वस्त्रीपुरुष वशंकरि सर्व दुष्ट मृगवशंकरि सर्वलोकवशंकरि ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं" मातंगी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।"

(इससे 'दक्षिण' में पूजा करें)

(४) 'भुवनेश्वरी' का मन्त्र—

"ह्रीं" भुवनेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।"

(इससे 'पश्चिम' में पूजा करें)

(५) 'वाराही' का मन्त्र—

"ॐ ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वाराहि वाराहि वाराहमुखि ऐं ग्लौं ऐं अन्धे अन्धिनि नमः रुन्धे रुन्धिनि नमः जम्भे जम्भिनि नमः मोहे मोहिनि नमः स्तम्भे स्तम्भिनि नमः ऐं ग्लौं ऐं सर्वदुष्ट प्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्चित्त चक्षुर्मुखगति जिह्वास्तम्भं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं कुरु कुरु ऐं ग्लौं ऐं ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा" वाराही श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।"

(इससे 'उत्तर' में पूजा करें)

षड्दर्शन-पूजन

पंच-पंचिकाओं का पूजन करने के पश्चात् ६ दर्शनों का पूजन करना चाहिए। (१) शैव, (२) शाक्त, (२) ब्राह्म, (४) वैष्णव, (५) सौर तथा (६) सौगत—ये ६ दर्शन हैं। प्रथम दर्शन का मध्यमें, फिर चारों दर्शनों का क्रमशः पूर्व, दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर—इन चारों दिशाओं में तथा अन्तिम दर्शन का अग्रभाग में पूजन करना चाहिए।

दर्शन पूजा मन्त्र

उक्त ६ दर्शनों के नामों के आगे "श्री पादुकां पूजयामि नमः" लगाने से उनके पूजन-मन्त्र बन जाते हैं। यथा—

"(१) शैव दर्शन श्रीपादुकां पूजयामि नमः—मध्ये ।
(२) शाक्त दर्शन " " —पूर्वे ।
(३) ब्राह्म दर्शन " " —दक्षिणे ।
(४) वैष्णव दर्शन " " —पश्चिमे ।
(५) सौर दर्शन " " —उत्तरे ।
(६) सौगत दर्शन " " —अग्रभागे ।"

तर्पण-मन्त्र

इसके बाद मूल मन्त्र में 'महात्रिपुर सुन्दरी श्रीपादुकां तर्पयामि नमः' लगाकर तीन बार 'तर्पण' करें—

यथा—

"श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं महात्रिपुर सुन्दरी श्रीपादुकां तर्पयामि नमः ।"

टिप्पणी—उक्त प्रकार से विन्दु-चक्र में स्थित श्रीमत्त्रिपुर सुन्दरी का विधिवत् पूजन करने के बाद निम्नानुसार आवरण-पूजा प्रारम्भ करनी चाहिए—

आवरण-पूजा

भूपुर से प्रारम्भ तक बिन्दु पर्यन्त प्रतिलोम क्रम से ९ आवरणों की पूजा करनी चाहिए। आवरण देवताओं के नाम से पहले मायाबीज एवं श्री बीज तथा अन्त में "श्रीपादुकां पूजयामि नमः'—यह पद सर्वत्र लगाना चाहिए।

आग्नेय, ईशान, नैर्ऋत्य, वायव्य, अग्रभाग तथा चारों दिशाओं में षडङ्ग-पूजा करनी चाहिए।

भूपुर की प्रथम रेखा में, आठ दिशाओं, ऊर्ध्व तथा अधोभाग में क्रमशः १० सिद्धियों का पूजन करना चाहिए। सिद्धियों के नाम इस प्रकार है—(१) अणिमा, (२) महिमा, (३) लघिमा, (४) ईशिता, (५) वशिता, (६) सिद्धि, (७) प्राकाम्या, (८) भुक्तिरिच्छा, (९) प्राप्ति एवं (१०) सर्वाकाम्या। तप्तस्वर्ण जैसी आभावाली,

पाश एवं अंकुश धारण करने वाली तथा साधकों को रत्न-समुदाय देती हुई सिद्धियों का ध्यान करना चाहिए।

भूपुर की मध्य रेखा में ८ मातृका शक्तियों का पूजन करना चाहिए। उनके नाम इस प्रकार है—(१) ब्राह्मी, (२) माहेश्वरी, (३) कौमारी, (४) वैष्णवी, (५) वाराही, (६) इन्द्राणी, (७) चामुण्डा और (८) महालक्ष्मी समस्त आभूषणों से अलंकृत तथा अपने आठ हाथों में क्रमशः पुस्तक, शूल, शक्ति, चक्र, गदा, वज्र, दण्ड एवं कमल को धारण करने वाली एवं समस्त मनोरथों को पूर्ण करने वाली इन शक्तियों का ध्यान करना चाहिए।

भूपुर की तृतीय रेखा में १० मुद्राओं का पूजन करना चाहिए। उनके नाम इस प्रकार है—(१) क्षोभण, (२) द्रावण, (३) आकर्षण, (४) वश्य, (५) उन्माद, (६) महांकुशा, (७) खेचरी, (८) बीज, (९) योनि और (१०) त्रिखण्डा।

इस प्रकार प्रथमावरण में भूपुर का पूजन करके 'क्षोभ-मुद्रा' प्रदर्शित करनी चाहिए, तदुपरान्त "त्रैलोक्य मोहन चक्र में ये प्रकट योगिनियाँ पूजन एव तपण से अभीष्ट फलदायक हों"—यह प्रार्थना करके मूल-मन्त्र द्वारा विन्दु पर पुष्पांजलि चढ़ानी चाहिए। यथा—

षडङ्गपूजा

सर्वप्रथम यन्त्र के आग्नेय आदि कोणों में क्रमशः निम्नलिखित मन्त्रों से षडङ्ग-पूजा करें—

"श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः हृदयायनमः—आग्नेये।
ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा—ईशाने।
कएईल ह्रीं शिखायै वषट्—नैर्ऋत्ये।
हसकहल ह्रीं कवचाय हुम्—वायव्ये।
सकल ह्रीं नेत्र त्रयाय वौषट्—अग्रे।
सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट्—दिक्षु।"

इसके बाद क्रमशः आवरण-पूजा आरम्भ करें।

अथप्रथमावरण-पूजा

सर्वप्रथम निम्नलिखित मन्त्र से देवी का ध्यान करें—

"तप्तहेमसमानाभा पाशांकुशधराः शुभा।
साधकेभ्यः प्रयच्छन्ति रत्नोघं सिद्धयस्सदा॥"

इसके बाद भूपुर की प्रथम रेखा में, पर्व आदि दिशाओं में निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा 'अणिमा' आदि १० सिद्धियों का पूजन करें। यथा—

"ह्रीं श्रीं अणिमा सिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि—पूर्वे।
ह्रीं श्रीं महिमा सिद्धि ,, ,, —आग्नेये।
ह्रीं श्रीं लघिमा सिद्धि ,, ,, —दक्षिणे।
ह्रीं श्रीं ईशिता सिद्धि ,, ,, —नैर्ऋत्ये।
ह्रीं श्रीं वशिता सिद्धि ,, ,, —पश्चिमे।
ह्रीं श्रीं सिद्धि सिद्धि ,, ,, —वायव्ये।
ह्रीं श्रीं प्राकाम्या सिद्धि ,, ,, —उत्तरे।
ह्रीं श्रीं भुक्तिरिच्छा सिद्धि ,, ,, —ईशान्ये।
ह्रीं श्रीं प्राप्ति सिद्धि ,, ,, —ऊर्ध्वभागे।
ह्रीं श्रीं सर्वकामा सिद्धि ,, ,, —ऊधोभागे।"

इसके बाद भूपुर कीद्वितीय रेखा में पश्चिम आदि दिशाओं में निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा 'ब्राह्मी' आदि ८ मातृकाओं का पूजन करें। यथा—

"ह्रीं श्रीं ब्राह्मी मातृका श्रीपादुकां पूजयामि—पश्चिमे।
ह्रीं श्रीं माहेश्वरी मातृका ,, ,, —वायव्ये।
ह्रीं श्रीं कौमारी मातृका ,, ,, —उत्तरे।
ह्रीं श्रीं वैष्णवी मातृका ,, ,, —ईशान्ये।
ह्रीं श्रीं वाराही मातृका ,, ,, —पूर्वे।
ह्रीं श्रीं इन्द्राणी मातृका ,, ,, —आग्नेये।
ह्रीं श्रीं चामुण्डा मातृका ,, ,, —दक्षिणे।
ह्रीं श्रीं महालक्ष्मी मातृका ,, ,, —नैर्ऋत्ये।"

इसके बाद भूपुर की तृतीय-रेखा में—दिशाओं, ऊर्ध्व तथा अधोभाग में निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा 'क्षोभण' आदि १० मुद्राओं का पूजन करें। यथा—

"ह्रीं श्रीं क्षोभणमुद्रा श्रीपादुकां पूजयामि—पूर्वे।
ह्रीं श्रीं द्रावण मुद्रा " " —आग्नेये।
ह्रीं श्रीं आकर्षण मुद्रा " " —दक्षिणे।

ह्लीं श्रीं वश्य मुद्रा श्रीपादुकां पूजयामि—नैऋत्ये।
ह्लीं श्रीं उन्माद मुद्रा " " —पश्चिमे।
ह्लीं श्रीं महांकुशा मुद्रा " " —वायव्ये।
ह्लीं श्रीं खेचरी मुद्रा " " —उत्तरे।
ह्लीं श्रीं बीज मुद्रा " " —ईशान्ये।
ह्लीं श्रीं योनि मुद्रा " " —ऊर्ध्वभागे।
ह्लीं श्रीं त्रिखण्डा मुद्रा " " —अधोभागे।"

उक्त विधि से 'प्रथम-आवरण' का पूजन कर, 'क्षोभमुद्रा' प्रदर्शित कर—

"त्रैलोक्यमोहने चक्रे इमाः प्रकट योगिन्यः पूजितास्तर्पिता इष्टदाः सन्तुः।"

यह प्रार्थना कर, मूल-मन्त्र से बिन्दु पर पुष्पांजलि चढ़ायें।

क्षोभ-मुद्रा लक्षण

'क्षोभ मुद्रा' का लक्षण निम्नानुसार कहा गया है—

"मध्यमां मध्यमे कृत्वा कनिष्ठांगुष्ठरोधिते।
तर्जन्यौ दण्डवत् कृत्वा मध्यमोपर्य नामि के॥
क्षोभाभिधान मुद्रेयं सर्वसंक्षोभकारिणी।"

(इति प्रथमावरण-पूजा)

अथद्वितीयावरण-पूजा

फिर, षोडशदल में पश्चिम से प्रारम्भ कर विलोम-क्रम से कामाकर्षणिका आदि १६ शक्तियों का निम्नानुसार मन्त्रोच्चारण करते हुए पूजन करना चाहिए। यथा—

"ह्लीं श्रीं कामाकर्षणी शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि।
ह्लीं श्रीं बुद्धयाकर्षणी शक्ति " "
ह्लीं श्रीं अहंकारकर्षणी शक्ति " "
ह्लीं श्रीं शब्दाकर्षणी शक्ति " "
ह्लीं श्रीं स्पर्शाकर्षणी शक्ति " "
ह्लीं श्रीं रूपाकर्षणी शक्ति " "

"ह्लीं श्रीं रसाकर्षणी शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि ।
ह्लीं श्रीं गन्धाकर्षणी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं चित्ताकर्षणी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं धैर्य्याकर्षणी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं नामाकर्षणी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं बीजाकर्षणी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं अमृताकर्षणी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं स्मृत्याकर्षणी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं शरीराकर्षणी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं आत्माकर्षणी शक्ति ,, ,,

उक्त प्रकार से 'द्वितीय-आवरण' का पूजन करे—

"सर्वाशापूरके चक्रे एताः षोडश गुप्त योगिन्यः पूजितास्तर्पिता सन्तु ।"

यह प्रार्थना कर मूल मन्त्र से पुष्पांजलि समर्पित करें, तदुपरान्त 'द्रावणी-मुद्रा' प्रदर्शित करें ।

'द्रावणी मुद्रा' का लक्षण निम्नानुसार बताया गया है ।

'द्रावणी-मुद्रा' लक्षण

"क्षोभाभिधानमुद्रायाः मध्यये सरले यदा ।
क्रियते परमेशानि तदा विद्राविणी मता ॥"

(इति द्वितीयावरण पूजा)

अथतृतीयावरणपूजा

फिर, कवर्ग आदि ८ वर्गों से युक्त अष्टदल में पूर्वादि दिशाओं में अनुलोम-क्रम से बन्धूक पुष्प के समान आभावाली तथा हाथों में पाश एवं अंकुश धारण करने वाली 'अनङ्ग कुसुमा' आदि ८ गुप्ततर योगिनियों का ध्यान करके, उनकी पूजा करनी चाहिए ।

ध्यान का मन्त्र इस प्रकार है—

"सर्व संक्षोभणे चक्रे बंधूक कुसुम प्रभाः।
अनंग कुसुमाद्यष्टौ पाशांकुशलसत्कराः ॥"

पूजन-मन्त्र निम्नानुसार हैं—

"ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं अनङ्ग कुसुमा श्रीपादुकां पूजयामि पूर्वे।
ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं अनङ्ग मेखला श्रीपादुकां पूजयामि आग्नेये।
ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं अनङ्गमदना श्री पादुकां पूजयामि दक्षिणे।
ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं अनङ्गमदनातुरा श्रीपादुकां पूजयामि नैर्ऋत्ये।
ह्रीं श्रीं पं फं बं भं मं अनङ्ग रेखा श्रीपादुकां पूजयामि पश्चिमे।
ह्रीं श्रीं यं रं लं वं अनङ्गवेगा श्रीपादुकां पूजयामि वायव्ये।
ह्रीं श्रीं शं षं सं हं अनङ्गांकुशा श्रीपादुकां पूजयामि उत्तरे।
ह्रीं श्रीं ळं क्षं अनङ्गमालिनी श्रीपादुकां पूजयामि ईशान्ये।

उक्त विधि से 'तृतीय-आवरण' का पूजन करें।

"सर्वसंक्षोभणे चक्रे एता अष्टौ गुप्ततर योगिन्यः पूजिता सन्तुः।"

इस प्रकार प्रार्थना कर, मूल-मन्त्र से पुष्पांजलि देकर, आकर्षणी-मुद्रा' प्रदर्शित करें।

आकर्षणी-मुद्रा का लक्षण इस प्रकार कहा है—

आकर्षणी-मुद्रा लक्षण

"मध्यमातर्जनीभ्यां तु कनिष्ठानामिके समे।
अंकुशाकार रूपाभ्यां मध्यमे परमेश्वरि ॥
इयमाकर्षणी मुद्रा त्रैलोक्याकर्षणे क्षमा ॥"

(इति तृतीयावरण-पूजा)

अथ चतुर्थावरणपूजा

ककार से ठकार तक के वर्णों से सुशोभित चतुर्दशदल में पश्चिम दिशा से प्रारम्भ कर, विलोमक्रम से, इन्द्रगोपतुल्य आभावाली, मदोन्मत, आभूषणों से अलंकृत एवं हाथों में क्रमशः दर्पण, पानपात्र, पाश तथा अंकुश धारण करने वाली १४ शक्तियों का ध्यान करने के पश्चात् पूजा करें।

ध्यान का मन्त्र इस प्रकार है—

"इन्द्रगोपनिभारभ्या मदोन्मताः सभूषणाः ।
विभ्रत्यो दर्पणां पानपात्रं पाशांकुशावपि ।।"

उक्त प्रकार से ध्यान करने के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्रों से पूजन करें—

"ह्लीं श्रीं कं सर्वसंक्षोभिणी शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि ।
ह्लीं श्रीं खं सर्वविद्राविणी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं गं सर्वाकिर्षणी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं घं सर्वाह्लादकरी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं ङं सर्वसम्मोहिनी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं चं सर्वस्तम्भनकरी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं छं सर्वजृम्भिणी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं जं सर्ववशंकरी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं झं सर्वरंजिनी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं ञं सर्वोन्मादिनी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं टं सर्वार्थसाधिनी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं ठं सर्वसम्पत्तिपूरिणी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं डं सर्वमन्त्रमयी शक्ति ,, ,,
ह्लीं श्रीं ढं सर्वद्वन्द्वक्षयंकरी शक्ति ,, ,, ।"

उक्त प्रकार से पूजन कर,

"सर्व सौभाग्यदे चक्रे इमाश्चतुर्दशसम्प्रदाय योगिन्यः पूजिता सन्तुः ।"

ऐसी प्रार्थना कर, मूल-मन्त्र से पुष्पांजलि चढ़ाऐं, तदुपरान्त 'वश्य मुद्रा' प्रदर्शित करें। 'वश्यमुद्रा' का लक्षण इस प्रकार कहा गया है—

'वश्य मुद्रा' लक्षण

"पुटाकारौ करौ कृत्वा तर्जन्यावंकुशाकृती ।
परिवर्त्य क्रमेणैव मध्यमे तदधोगते ।।

क्रमेण देवि तेनैव कनिष्ठानामिकादयः ।
संयोज्य निविद्राः सर्वा अंगुष्ठावग्रदेशतः ।।
मुद्रेयं परमेशानि सर्ववश्यकरी मताः ।।"

(इति चतुर्थावरण पूजा)

अथ पञ्चमावरण-पूजा

'ण' कार से 'अ' कार तक के वर्णों से सुशोभित दशदल में जपाकुसुम के समान आभावाली, चमकीले आभूषणों से अलंकृत तथा हाथों में पाश एवं अंकुश धारण करने वाली कुल १० योगिनियों का ध्यान करके पश्चिम से प्रारंभ कर विलोम-क्रम से पूजन करें।

ध्यान का मन्त्र इस प्रकार है—

"सिद्धिदा दशयोगिन्यो जपापुष्पसमप्रभाः ।
स्फुरन्मणि विभूषाद्याः पाशांकुशलासत्कराः ।।"

उक्त प्रकार से ध्यान करने के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्रों से पूजन करें—

"ह्लीं श्रीं णं सर्वसिद्धिप्रदा देवी श्रीपादुकां पूजयामि ।
ह्लीं श्रीं तं सर्वं संपत्प्रदा देवी ,, ,,
ह्लीं श्रीं थं सर्वं प्रियंकरी देवी ,, ,,
ह्लीं श्रीं दं सर्वं मङ्गलकरी देवी ,, ,,
ह्लीं श्रीं धं सर्वकामप्रदा देवी ,, ,,
ह्लीं श्रीं नं सर्वं दुःखविमोचिनीदेवी ,, ,,
ह्लीं श्रीं पं सर्वमृत्युप्रशयनी देवी ,, ,,
ह्लीं श्रीं फं सर्वविघ्ननिवारिणीदेवी ,, ,,
ह्लीं श्रीं बं सर्वाङ्ग सुन्दरी देवी ,, ,,
ह्लीं श्रीं भं सर्वं सौभाग्यदायिनी देवी ,, ,, ।"

उक्त प्रकार से पूजन कर—

"सर्वार्थसाधके चक्रे इमा दश कुलयोगिन्यः पूजिता सन्तुः ।"

ऐसी प्रार्थना कर, मूल-मन्त्र से पुष्पांजलि चढ़ायें। फिर 'उन्माद-मुद्रा' प्रदर्शित करें।

'उन्माद-मुद्रा' का लक्षण निम्नानुसार कहा गया है—

उन्माद-मुद्रा लक्षण

"सम्मुखौ तु करौ कृत्वा मध्यमामध्यमेनुजे।
अनामिके तु सरले तदधस्तर्जनी ह्वयम्॥
दण्डाकारौ ततोऽङ्गुष्ठौ मध्यमानस्व देशगौ।
मुद्रैषौन्मादिनी नाम क्लेदिनी सर्वपोषिताम्॥"

(इति पञ्चमावरण-पूजा)

अथ षष्ठावरण-पूजा

'म' कार से 'क्ष' कार के १० वर्णों से सुशोभित द्वितीय दशदल में उदीयमान सूर्य जैसी आभावाली तथा हाथों में ज्ञानमुद्रा, टक, पाश तथा वरमुद्रा धारण करने वाली 'सर्वज्ञा' आदि १० योगिनियों का ध्यान कर, पश्चिम से प्रारंभ कर, विलोम-क्रम से पूजा करनी चाहिए।

ध्यान का मन्त्र इस प्रकार है—

"सर्वरक्षाकरे चक्रे उद्यद्भास्कर सन्निभाः।
ज्ञानमुद्राटंकपाशवरधारि कराम्बुजाः॥"

उक्त प्रकार से ध्यान करने के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्रों से पूजन करें—

"ह्रीं श्रीं मं सर्वज्ञा देवी श्रीपादुकांपूजयामि।
ह्रीं श्रीं यं सर्वशक्ति देवी ,, ,,
ह्रीं श्रीं रं सर्वैश्वर्यफलप्रदा देवी ,, ,,
ह्रीं श्रीं लं सर्वज्ञानमयी देवी ,, ,,
ह्रीं श्रीं वं सर्वव्याधि विनाशिनीदेवी ,, ,,
ह्रीं श्रीं शं सर्वाधार स्वरूपा देवी ,, ,,
ह्रीं श्रीं षं सर्वपापहरा देवी ,, ,,
ह्रीं श्रीं सं सर्वानन्दमयी देवी ,, ,,

ह्लीं श्रीं हं सर्वरक्षा स्वरूपिणी देवी श्रीपादुकांपूजयामि ।

ह्लीं श्रीं क्षं सर्वेप्सितार्थफलप्रदा देवी " " ।"

उक्त प्रकार से पूजन कर,

"सर्वरक्षाकरे चक्रे इमा दशनिगर्भ योगिन्य: पूजिता: सन्तु ।"

ऐसी प्रार्थना कर मूल-मन्त्र से पुष्पांजलि चढ़ायें। फिर 'महांकुशा मुद्रा' प्रदर्शित करें।

'महांकुशा मुद्रा' का लक्षण निम्नानुसार कहा गया है—

महांकुशा मुद्रा लक्षण

"अस्यास्त्वनामिका युग्ममध: कृत्वांकुशाकृति ।
तर्जन्यावपि तेनैव क्रमेण विनियोजयेत् ।।
इयं महांकुशा मुद्रा सर्वकामार्थ साधिनी ।।"

(इति षष्ठावरण-पूजा)

अथ सप्तमावरण-पूजा

फिर, अष्टदल मे दाडिम-पुष्प जैसी आभावाली, लालरंग के वस्त्रों से अलंकृत तथा हाथों में धनुष, वाण, विद्या एवं वर धारण करने वाली, न्यासोक्त 'वशिनी' आदि देवियों का ध्यान कर, अकार आदि वर्गों में तथा पूर्वोक्त बीजों के साथ, पश्चिम से प्रारम्भ कर विलोम-क्रम से पूजन करना चाहिए।

ध्यान का मन्त्र इस प्रकार है—

"सर्वरोग हरे चक्रे दाडिमी पुष्पसन्निभा ।
रक्तांशुकाधनुर्बाण विद्या वरलसत्करा: ।।"

उक्त प्रकार से ध्यान करने के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्रों से पूजन करें—

"ह्लीं श्रीं अं आं वशिनी वाग्देवता श्रीपादुकां पूजयामि ।
ह्लीं श्रीं इं ईं कौमारी वाग्देवता " "
ह्लीं श्रीं उं ऊं मोहिनी वाग्देवता " "
ह्लीं श्रीं ऋं ॠं विमला वाग्देवता " "
ह्लीं श्रीं लृं लॄं अरुणा वाग्देवता " "
ह्लीं श्रीं एं ऐं जयिनी वाग्देवता " "

ह्लीं श्रीं ओं औं सर्वेशी वाग्देवता " " .
ह्लीं श्रीं अं अः कौलिनी वाग्देवता " " ।"

उक्त प्रकार से पूजन कर, मूलमन्त्र से पुष्पांजलि चढ़ाकर,

"सर्वरोग हरेचक्रे अष्टारे इमा रहस्ययोगिन्यः पूजिता सन्तु ।"

ऐसी प्रार्थनाकर,' खेचरी-मुद्रा' प्रदर्शित्त करें ।
'खेचरी मुद्रा' का लक्षण निम्नानुसार कहा गया है—

खेचरी-मुद्रा लक्षण

"सव्यं दक्षिण हस्तेतु सव्यहस्ते तु दक्षिणम् ।
बाहू कृत्वा महादेवि हस्तौ संपरिवर्त्यंच ।।
कनिष्ठानामिके देवि युक्ता तेनक्रमेण तु ।
तर्जनीभ्यां समाक्रान्ते सर्वोर्ध्वमपि मध्यमे ।।
अंगुष्ठौ तु महादेवि सरलावपि कारयेत् ।
इयं सा खेचरी नाम मुद्रा सर्वोत्तमोत्तमा ।।"

(इति सप्तमावरण-पूजा)

अथ अष्टमावरण-पूजा

फिर, अ क थ वर्णों से रचित त्रिकोण के चारों ओर पश्चिम से प्रारम्भ कर, अनुलोम-क्रम से अपने-अपने बीजों के साथ जंभ, मोह, वश एवं स्तंभ संज्ञक कामेश्वर तथा कामेश्वरी के वाण, धनु, पाश एवं अंकुशों का पूजन करें ।

फिर, अनेक रत्नों से सुशोभित, अपने आयुधों सहित बिजली के समान कान्तिमान् अंगों वाली तथा यौवनोन्माद के कारण मन्थर-गति से चलने वाली आयुध-देवियों का स्मरण करें ।

फिर आग्नेय आदि तीन कोणों में कूटत्रय सहित कामेश्वरी, वज्रेशी एवं भगमालिनी का पूजन करें ।

सर्वप्रथम निम्नलिखित मन्त्र से ध्यान करें—

"नानारत्न विभूषाढ्या स्वस्वायुध समन्विताः ।
विद्युद्दामसमानांग्यो यौवनोन्मद मन्थराः ।।"

उक्त प्रकार से ध्यान करने के उपरान्त त्रिकोण के चारों ओर पश्चिम से

प्रारम्भ कर अनुलोम क्रम से निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा कामेश्वर तथा कामेश्वरी के वाण आदि का पूजन करें। यथा—

"यां रां लां वां शां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः कामेश्वर कामेश्वरी जंभन बाण श्रीपादुकां पूजयामि—पश्चिमे।

धं थं कामेश्व कामेश्वरी मोहन धनु श्रीपादुकां पूजयामि—उत्तरे।

आं ह्रीं कामेश्वर कामेश्वरी वशीकरणपाश श्रीपादुकां पूजयामि—पूर्वे।

क्रों कामेश्वर कामेश्वरी स्तंभनांकुश श्रीपादुकां पूजयामि—दक्षिणे।"

फिर त्रिकोण के आग्नेय आदि कोणों में कामेश्वरी आदि का निम्नानुसार ध्यान करें—

"कामेश्वरी रुद्रशक्तिः शरच्चन्द्रशतप्रभा।
स्मर्तव्यादधतीहस्तैः पुस्तका ऽमीवरस्रजः॥
वज्रेश्वरी विष्णुशक्तिरुद्यन्मार्तण्डसप्रभा।
इक्षुचापवराभीति पुष्प वाणलसत्करा॥
भगमाला ब्रह्मशक्ति स्तप्त हाटकसप्रभा।
ज्ञानमुद्रां प्रदर्श्याथ प्रार्थयेत्सुन्दरीमिदम्॥"

उक्त प्रकार से ध्यान करके, निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा कामेश्वरी आदि शक्तियों का पूजन करें। यथा—

"कएईल ह्रीं कामरूपपीठे कामेश्वरी रुद्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि।

हसकहल ह्रीं पूर्णं गिरिपीठे वज्रेश्वरी विष्णु शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि।

सकल ह्रीं जालन्धर पीठे भगमालिनी ब्रह्मशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि।"

उक्त प्रकार से पूजन करने के बाद मूल-मन्त्र से पुष्पांजलि चढ़ाकर,

"सर्वसिद्धि प्रदेचक्रे इमा अतिरहस्य योगिन्यः पूजिता निरन्तरं मे मङ्गलं दिशन्तु ।"

ऐसी प्रार्थना कर, 'बीज-मुद्रा' प्रदर्शित करें ।

'बीज-मुद्रा' का लक्षण निम्नानुसार कहा गया है—

बीज-मुद्रा लक्षण

"परिवर्त्यकरौ स्पष्टावर्द्धचन्द्राकृती प्रिये ।
तर्जन्यंगुष्ठयुगलं युगपत्कारयेत्ततः ।।
अधः कनिष्ठावष्टब्धे मध्यमे विनियोजयेत् ।
तथैव कुटिले योज्ये सर्वाधस्तादनामिके ।।
वीजमुद्रेय मुदिता सर्वसिद्धि प्रदायिनी ।।"

(इति अष्टमावरण-पूजा)

अथ नवमावरण-पूजा

फिर विन्दु के ऊपर पूर्वोक्त "बालार्कायुत तेजसं त्रिनया०........" के अनुसार भगवती के स्वरूप का ध्यान कर, मूल-मन्त्र के साथ—

"श्रीमत्त्रिपुर सुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि ।"

कहकर श्री विद्या का पूजन करें । फिर—

"सर्वानन्दमये चक्रे सर्वाभीष्ट दायिनी परापररहस्य योगिनी श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी पूजितास्तु ।"

यह कहकर 'महायोनिमुद्रा' प्रदर्शित करें ।

'महायोनि मुद्रा' का लक्षण निम्नानुसार कहा गया है—

'महायोनि मुद्रा' लक्षण

"मध्यमे कुटिले कृत्वा तर्जन्युपरि संस्थिते ।
अनामिकामध्यगते तथैव हि कनिष्ठके ।।
सर्वा एकत्र संयोज्या अंगुष्ठ परिपीडिताः ।
एषा तु प्रथमामुद्रा महायोन्याभिधा मता ।।"

इसके बाद मूल-मन्त्र से ३ बार तर्पण करके, धूप-दीप आदि उपचारों से देवी का विधिवत् पूजन कर, अनेक प्रकार के भोज्य-पदार्थों को नैवेद्य के रूप में निवेदित करना चाहिए।

हवन

फिर अग्नि का पूजन कर, उसमें त्रिपुर सुन्दरी का आवाहन कर, हव्य द्रव्य से २५ आहुतियाँ दें।

बलिदान-विधि

फिर श्री चक्र के ईशान, आग्नेय, नैर्ऋत्य तथा वायव्य कोण में हुतशेष द्रव्य द्वारा अपने-अपने मन्त्रों तथा मुद्राओं से बटुक, योगिनी, क्षेत्रफल तथा गणपति को पूर्वोक्त रीति से बलि दें। फिर प्रदक्षिणा एवं नमस्कार कर, मूल-विद्या का जप करना चाहिए।

बलिदान की विधि निम्नानुसार है—

"एह्येहि देवीपुत्र वटुकनाथ कपिल जटाधारभासुरत्रिनेत्र-ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचार सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा।"

उक्त मन्त्र से तर्जनी एवं अँगूठा मिलाकर हुत-शेष (होम करने से बचा हुआ) द्रव्य से ईशानकोण में 'बटुक' को बलि प्रदान करें।

फिर—

"ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा, पाताले वातले वा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा। क्षेत्रे वीणेप पठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन, प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलि विधिना पातु वीरेन्द्रबन्धाः।।" यां योगिनीभ्यो नमः।"

उक्त मन्त्र से अनामिका, कनिष्ठा तथा अंगुष्ठ को मिलाने से निर्मित मुद्रा द्वारा हुत शेषद्रव्य से आग्नेयकोण में योगिनियों को बलि देनी चाहिए।

फिर—

"क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः हुं स्थान क्षेत्रपालेश सर्वकामं पूरय स्वाहा।"

उक्त मन्त्र द्वारा बाँये हाथ के अँगूठा तथा अनामिका को मिलाने से निर्मित

मुद्रा द्वारा हुतशेष द्रव्य से श्रीचक्र के नैऋत्यकोण में क्षेत्रपाल को बलि प्रदान करें।

फिर—

"गां गीं गूं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय सर्वोपचार सहितं बलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा।"

इस मन्त्र द्वारा किंचित् वक्र (टेढ़ी) की हुई मध्यमा अँगुली से हुतशेष-द्रव्य द्वारा श्रीचक्र से वायव्यकोण में स्थापित गणपति को बलिप्रदान करें।

इसके पश्चात् प्रदिक्षणा एवं नमस्कारकर, मूल-मन्त्र का जप करना चाहिए।

जो जितेन्द्रिय साधक उक्त विधि से प्रतिदिन ९ आवरणों के साथ भगवती त्रिपुर सुन्दरी का पूजन करता है। वह समस्त मनोरथों को प्राप्त कर लेता है।

काम्य-प्रयोग

अब भगवती त्रिपुर सुन्दरी के साधक को अभीष्ट-सिद्धि देने वाले प्रयोगों के विषय में बताया जाता है।

१. इस मन्त्र का ९,००,००० (नौ लाख) की संख्या में जप करने वाला रुद्रत्व को प्राप्त करता है।

२. मल्लिका (बेला) तथा मालती के फूलों से होम करने पर वागीशता (वाणी पर प्रभुत्व) प्राप्त होती है तथा कनेर एवं जवाकुसुम के होम से साधक संसार को मोहित कर लेता है।

३. चम्पा एवं गुलाब पुष्पों के होम से साधक संसार को अपने वश में कर सकता है।

४. कपूर, कुंकुम तथा कस्तूरी के होम से जातक कामदेव से भी अधिक सुन्दर बन जाता है।

५. लाजा (धान की खीलें) के होम से राज्य प्राप्त होता है।

६. मधु के होम से उपद्रव नष्ट हो जाते हैं।

७. रात्रि के समय छाग-मांस के होम से शत्रु की सेना नष्ट हो जाती है।

८. दही के होम से आरोग्य, घृत के होम से सम्पत्ति, दूध के होम से गाँव तथा मधु के होम से धन की उपलब्धि होती है।

९. कमलों के होम से धन सम्पत्ति मिलती है तथा अनार के होम से राजा वशीभूत हो जाता है।

१०. बिरोजा के होम से क्षत्रिय, नारंगी के होम से वैश्य तथा पेठा के होम से शूद्र शीघ्र ही वश में हो जाते हैं।

११. कटहल से १ लाख आहुतियां देकर होम करने से चक्रवती राजा वश में हो जाते हैं। केला के होम से मन्त्री वश में होते हैं।

१२. अंगूर के होम से इष्ट-सिद्धि मिलती है। नारियल के होम से सम्पत्ति मिलती है। तिल के होम से सभी कामनाऐं पूर्ण होती हैं। गुग्गुल के होम से दुःख नष्ट होते हैं तथा चकवर और गुड़ के होम से समस्त मनोरथ पूरे होते हैं।

१३. खीर के होम से धन-धान्य मिलते हैं।

१४. बन्धूक (दुपहरिया) के फूलों के होम से प्राणी वश में होते हैं।

१५. पके हुए आमों की १ लाख आहुतियाँ देने से पृथ्वी पर रहने वाले सभी जीव वश में हो जाते हैं।

१६. राई मिला लवण का होम करने से दुष्टों का नाश होता है।

१७. कपूर के होम से कवित्व की शीघ्र प्राप्ति होती है।

१८. करंजपाल के होम से भूत-प्रेत वश में हो जाते हैं।

१९ बेलाफल के होम से अतुल लक्ष्मी तथा ईख के टुकड़ों के होम से सुख की उपलब्धि होती है।

२०. घृत के होम से इच्छित-वस्तु की प्राप्ति होती है।

२१. तन्दुल (चावल) के होम से शान्ति मिलती हैं।

यह मन्त्र सभी अभीष्टों को सिद्ध कर सकता है।

●●

४ | षोडशी-भेद मन्त्र

आगम शास्त्र में षोडशी विद्या के कुछ अन्य भेद भी बताये गये हैं, उनके सम्बन्ध में यहाँ लिखा जा रहा है।

पारिभाषिकी षोडशी मन्त्र

(१) कामराज विद्या, (२) अगस्त्य पूजिता लोपामुद्रा, (३) मनुपूजिता, (४) चन्द्र पूजिता, (५) कुबेर पूजिता, (६) अगस्त्य पूजिता द्वितीया लोपामुद्रा, (७) नन्दि पूजिता, (८) इन्द्र पूजिता, (९) सूर्य पूजिता, (१०) शंकर पूजिता (चतुष्कूटा) (११) विष्णु पूजिता (षड्कूटा)' एवं (१२) दुर्वासा पूजिता—इन १२ मन्त्रों के प्रारम्भ में 'ह्रीं श्रीं'—इन दो वीजों को लगाने से जो मन्त्र बनते हैं, वे 'पारिभाषिक षोडशी मन्त्र' कहे जाते हैं।

'ज्ञानार्णव तन्त्र' के अनुसार—उक्त १२ मन्त्रों के आदि में "ॐ ह्रीं श्रीं"—इन तीन वीजों को लगाने से षोडशी मन्त्र बनते हैं। ऐसा करने से 'त्रिकूट' मन्त्र 'षड्कूट', 'षड्कूट' वैष्णव मन्त्र 'नवकूट' तथा 'चतुष्कूट' शिव-मन्त्र 'सप्तकूट' बन जाते हैं। ये सभी मन्त्र शिव-शक्ति मय माने गये हैं।

उक्त विद्याओं के मन्त्र इस प्रकार हैं—

(१) कामराज विद्या—

"कएलई ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं।"

(२) अगस्त्य पूजिता—

(प्रथम लोपामुद्रा)

"हसकल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं।"

(३) मनुपूजिता—

"कहएईल ह्रीं, हकएईल ह्रीं, सकएईल ह्रीं।"

(४) चन्द्रापूजिता—

"सहकएलईल ह्लीं, सहकहईल ह्लीं सहकएईल ह्लीं।"

(५) कुबेर पूजिता—

"हसकएईल ह्लीं, हसकहएईल ह्लीं, हसकएईल ह्लीं।"

(६) अगस्त्य पूजिता—
(द्वितीया लोपामुद्रा)

"कएईल ह्लीं, हसकहल ह्लीं, सहसकल ह्लीं।"

(७) नन्दि पूजिता—

"सएईल ह्लीं, सहकहल ह्लीं, सकल ह्लीं।"

(८) इन्द्र पूजिता—

"कएईल ह्लीं, हसकहल ह्लीं, सकल ह्लीं।"

(९) सूर्य पूजिता—

"कएईल ह्ली, सहकल ह्लीं, सहकसकल ह्लीं।"

(१०) शकर पूजिता—

"कएईल ह्लीं, हसकल ह्लीं, सहसकल ह्लीं, कएईल हसकहलसक सकल ह्लीं।"

(११) विष्णु पूजिता—

"कएईल ह्लीं, हसकल ह्लीं, सहसकल ह्लीं, सएईल ह्लीं, सहकहल ह्लीं, सकल ह्लीं।"

(१२) दुर्वासा पूजिता—

"कएईल ह्लीं, हसकहल ह्लीं, सकल ह्लीं।"

उक्त १२ मन्त्रों के आदि में "ॐ ह्रीं श्रीं"—इन तीन बीजों को लगाने से 'षोडशी मन्त्र' बन जाते हैं।

बीजावली षोडशीमन्त्र

'रुद्रयामल' के अनुसार—क्रमशः श्री, माया, बाला, श्री, माया, काम वाग्, माया, श्री, परा, काम, वाग्, माया तथा श्री—इन बीजों का उच्चारण करने से "बीजावली षोडशी मन्त्र' बनता है।

'ब्रह्मयामल' के अनुसार—क्रमशः श्री, माया, बाला, श्री, माया, काम, वाग्, विलोम बाला, श्री, माया, फिर माया एवं श्रीबीजों का उच्चारण करने से 'षोडशी मन्त्र' बनता है।

गुह्य षोडशी मन्त्र

"गुह्य षोडशी मन्त्र' इस प्रकार है—

"ॐ ह्रीं ॐ श्रीं ह्रीं सौः क्लीं ऐं हसकल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ श्रीं ह्रीं।"

महाषोडशी मन्त्र

प्रारम्भ में ह्रीं श्रीं—ये दो बीज विपरीत-क्रम में और फिर बाला के मध्य बीज को प्रारंभ में करके लिखने से 'श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः—ये पाँच बीज होते हैं। इन पाँच बीजों द्वारा अनुलो .-विलोम क्रम से षट्कूट मन्त्र को पुटित करने से 'षोडशाक्षर मन्त्र' बनता है।

उक्त पांच बीजों से सप्तकूट को पुटित करने पर 'सप्तदशाक्षर मन्त्र' तथा नवकूट को पुटित करने में 'ऊनविंश अक्षर मन्त्र' बनता है। इस प्रकार षट्कूट षोडशाक्षर, शैवमन्त्र सप्तदशाक्षर तथा वैष्णव मन्त्र ऊन विंशाक्षर होता है।

'श्रीक्रम संहिता' के अनुसार—श्रीबीज, मायाबीज, कामबीज, वाग्भव बीज तथा पराबीज को पहले रख कर फिर प्रणव, भुवनेश्वरी बीज, लक्ष्मी बीज एवं त्रिकूट—इस प्रकार बने षड्कूट को उक्त पांच बीजों से पुटित करने पर 'महाषोडशी मन्त्र' बनता है।

ऐसा ही उल्लेख 'मायातन्त्र' 'कुलामृत' तथा मामल ग्रंथों में भी पाया जाता है।

'कुब्जिका तन्त्र' में महाषोडशी का मन्त्र निम्नानुसार बताया गया है—

"ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएलई ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं सौः ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं।"

इसे 'भुवन सुन्दरी मन्त्र' भी कहते हैं। इस मन्त्र को भुक्ति एवं मुक्ति दायक माना गया है।

उक्त मन्त्र के प्रारम्भ में 'श्री बीज' लगाने से यह 'कमल सुन्दरी' मन्त्र बनता है।

इसी प्रकार उक्त मन्त्र के आदि में क्रमशः कामबीज, वाग्बीज, शक्ति बीज तथा प्रणव लगाने पर ये मन्त्र क्रमशः काम सुन्दरी, वाक् सुन्दरी, शक्तिसुन्दरी एवं तार सुन्दरो मन्त्र कहे जाते हैं।

'सिद्धयामल' में महाषोडशी मन्त्र इस प्रकार बताया गया है—

"ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सहल ह्रीं स्त्रीं ऐं क्रों क्रीं ईं हूं।"

विशेष—इस विद्या के सम्बन्ध में कहा गया है कि इस अभीष्ट फलदायिनी विद्या को अपने पुत्र तथा सुपरीक्षित शिष्य के अतिरिक्त अन्य किसी को नहीं देना चाहिए।

उक्त मन्त्रों की साधन-विधि पूर्वोक्त 'षोडशी मन्त्र' की भांति ही समझनी चाहिए।

●●

५ | बाला-साधन

षोडशीं भगवती त्रिपुर सुन्दरी के ही एक अन्य भेद 'बाला' के मन्त्र तथा उसकी साधन-पूजन विधि का यहाँ उल्लेख किया जा रहा है। यह मन्त्र समस्त मनोभिलाषाओं का पूरक है।

मन्त्र

"ऐं क्लीं सौः।"

विनियोग

"अस्य श्री बाला मन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः पंक्तिश्छन्दः त्रिपुरा-बाला देवता क्लौं शक्तिः सौः बीजं ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।"

न्यास

विनियोग के पश्चात् शरीर में नाभि से पाँवों तक प्रथम बीज, हृदय से नाभि तक द्वितीय बीज तथा शिर से हृदय तक तृतीय बीज का न्यास करना चाहिए।

फिर, बाँयें हाथ में प्रथम बीज, दाँये हाथ में द्वितीय बीज तथा दोनों हाथों में तृतीय बीज का न्यास करें।

फिर क्रमशः शिर, गुप्ताङ्ग तथा वक्षःस्थल में क्रमशः तीनों बीजों का न्यास करें। यथा—

"ऐं नमः—नाभे पादान्तम्।
क्लीं नमः—हृदयान्नाभ्यन्तम्।
सौः नमः—मूर्ध्नि हृदन्तम्।"

फिर—

"ऐं नमः—वाम करे ।

क्लीं नमः—दक्षिण करे ।

सौः नमः—करयोरुभयोः ।"

फिर

"ऐं नमः—मूर्ध्नि ।

क्लीं नमः—गुह्ये ।

सौः नमः—वक्षे ।"

नवयोनि न्यास

इसके वाद 'नवयोनि' संज्ञक न्यास में ९ वार मन्त्र का न्यास करें । यथा—

"ऐं नमः—वाम कर्णे ।

क्लीं नमः—दक्षिण कर्णे ।

सौः नमः—चितुके ।

ऐं नमः—वामगण्डे ।

क्लीं नमः—दक्षिण गण्डे ।

सौः नमः—मुखे ।

ऐं नमः—वामनेत्रे ।

क्लीं नमः—दक्षिण नेत्रे ।

सौः नमः—नासिकायाम् ।

ऐं नमः—वाम स्कन्धे ।

क्लीं नमः—दक्षिण स्कन्धे ।

सौः नमः—उदरे ।

ऐं नमः—वाम कूर्परे ।

क्लीं नमः—दक्षिण कूर्परे ।

सौः नमः—नाभौ ।

ऐं नमः—वाम जानौ ।

क्लीं नमः—दक्षिण जानौ ।
सौः नमः—लिङ्गोपरि ।
ऐं नमः—वामपादे ।
क्लीं नमः—दक्षिण पादे ।
सौः नमः—गुह्ये ।
ऐं नमः—वाम पार्श्वे ।
क्लीं नमः—दक्षिण पार्श्वे ।
सौः नमः—हृदि ।
ऐं नमः—वामस्तने ।
क्लीं नमः—दक्षिण स्तने ।
सौः नमः—कण्ठे ।

रत्यादि न्यास

इसके बाद निम्नानुसार 'रत्यादि न्यास' करें—

"ऐं रत्यै नमः—गुह्ये ।
सौः प्रीत्यै नमः—हृदि ।
क्लीं मनोभवायै नमः—भ्रूमध्ये ।
सौः अमृतेश्यैनमः—गुह्ये ।
क्लीं योगेश्यै नमः—हृदि ।
ऐं विश्वयोन्यै नमः—भ्रू मध्ये ।"

मूर्तिन्यास

इसके बाद निम्नानुसार 'मूर्ति न्यास' करें—

"ह्लीं मनोभव्यय नमः—शिरसि ।
क्लीं मकरध्वजाय नमः—मुखे ।
ऐं कन्दर्पाय नमः—हृदि ।
ब्लूं मन्मथाय नमः—गुह्ये ।
स्त्रीं कामदेवाय नमः—चरणयोः ।"

बाणन्यासः

इसके बाद निम्नानुसार 'बाण न्यास' करें—

"द्रां द्राविण्यै नमः—शिरसि ।
द्रीं क्षोभिण्यै नमः—पादयोः ।
क्लीं वशीकरण्यै नमः—मुखे ।
ब्लूं आकर्षण्यै नमः—गुह्ये ।
सः सम्मोहन्यै नमः—हृदि ।"

षडङ्ग न्यास

इसके बाद निम्नानुसार 'षडङ्गन्यास' करें—

"सौः क्लां ऐं—हृदयायनमः ।
सौः क्लीं ऐं—शिरसे स्वाहा ।
सौः क्लूं ऐं—शिखायै वषट् ।
सौः क्लैं ऐं—कवचाय हुम् ।
सौः क्लौं ऐं—नेत्रत्रयाय वौषट् ।
सौः क्लः ऐं—अस्त्राय फट् ।"

ध्यान

इसके बाद निम्नानुसार देवी का 'ध्यान' करें—

"रक्ताम्बरां चन्द्रकलावतंसां समुद्यदादित्यनिभां त्रिनेत्राम् ।
विद्याक्षमालाभयदामहस्तां ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम् ।।"

भावार्थ—"लालवस्त्र धारण करनेवाली, चन्द्रकला से सुशोभित मस्तक वाली, उदीयमान सूर्य जैसी आभावाली, तीन नेत्रों वाली, अपने चारों हाथों में क्रमशः पुस्तक, अक्षमाला, अभय एवं वरद-मुद्रा वाली, रक्त कमल पर विराजमान बाला का मैं ध्यान करता हूँ ।"

जप संख्या तथा हवन

इस मन्त्र का ३,००,००० (तीन लाख) की संख्या में जप करना चाहिए तथा मधु (शहद) सहित टेसू के फूलों से दशांश (तीस हजार) होम करना चाहिए ।

पूजन-यन्त्र

बाला-पूजन यन्त्र का स्वरूप नीचे प्रदर्शित है—
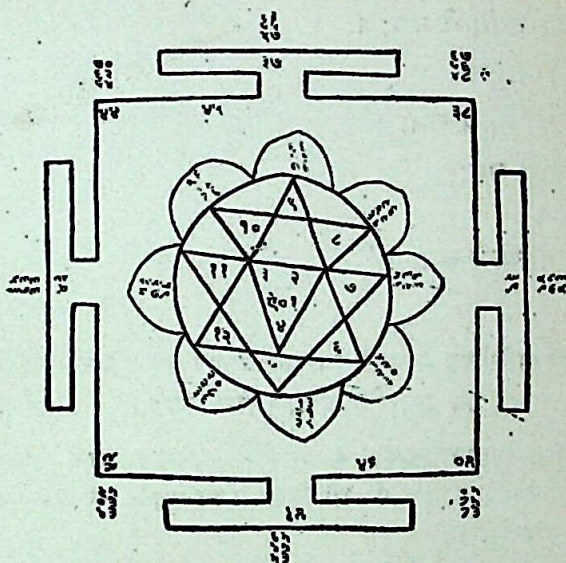
चित्र संख्या ५

(बाला-पूजन यन्त्र)

उक्त यन्त्र पर (१) इच्छा, (२) ज्ञान, (३) क्रिया, (४) कामिनी, (५) कामदायिनी, (६) रति, (७) रतिप्रिया, (८) नन्दा एवं (९) मनोन्मनी—इन पीठ शक्तियों का पूजन कर पीठ-मन्त्र से देवी को आसन प्रदान करें। यथा—

पीठ-पूजा विधि

पीठ-पूजा की सामान्य-पद्धति के अनुसार—

'ॐ आधार शक्तये नमः' से ह्लीं ज्ञानात्मने नमः'—

तक पीठ-पूजा कर, केसरों में तथा मध्य में निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा 'इच्छा' आदि पीठ शक्तियों का पूजन करना चाहिए। यथा—

पूर्वादि क्रम से—(केशरों में)

''ॐ इच्छायै नमः।

ॐ ज्ञानायै नमः।

ॐ क्रियायै नमः ।

ॐ कामिन्यै नमः ।

ॐ काम दायिन्यै नमः ।

ॐ रत्यै नमः ।

ॐ रति प्रियायै नमः ।

ॐ नन्दायै नमः । ”

मध्य में—

“ॐ मनोन्मन्यै नमः ।”

आसन मन्त्र

फिर, निम्नलिखित मन्त्र से देवो को आसन प्रदान करें—

“ह्सौः सदाशिव महाप्रेत पद्मासनाय नमः ।”

[टिप्पणी—‘शारदा तिलक’ के अनुसार—आसन प्रदान करने के बाद पूर्व योनि तथा मध्य योनि के बीच में श्री विद्या पूजन-पद्धति के अनुसार गुरु पंक्ति का पूजन करना चाहिए।

फिर, मूल-मन्त्र द्वारा कल्पित-मूर्ति में देवी का आवाहन कर, पाद्य आदि उपचारों से देवी का विधिवत् पूजन करें तथा पूजित-पीठ पर विधिवत् ध्यान, आवाहन आदि उपचारों से पञ्च पुष्पाञ्जलि प्रदान पर्यन्त देवी का पूजन करके आगे लिखी विधि से ‘आवरण-पूजा’ करें—

आवरण-पूजा विधि

सर्वप्रथम मध्य योनि के त्रिकोण में रति आदि देवियों का निम्नलिखित मन्त्रों से पूजन करें—

“ऐं रत्यै नमः—वामकोणे ।

क्लीं प्रीत्यै नमः—दक्षिण कोणे ।

सौः मनोभवायै नमः—अग्रे ।”

फिर, आग्नेय आदि चारों कोणों, मध्य में तथा सब दिशाओं में निम्नलिखित मन्त्रों से षडङ्ग-पूजा करें—

“सौः क्लीं ऐं—हृदयाय नमः

सौः क्लीं ऐं—शिरसे स्वाहा

सौः क्लू ऐं–शिखायै वषट्

सौः क्लें ऐं–कवचाय हुम् ।

सौं: क्लौं ऐं–नेत्रत्रयाय वौषट् ।

सौः क्लः ऐं–अस्त्राय फट् ।"

फिर, मध्ययोनि के बाहर पूर्व आदि दिशाओं में तथा अग्रभाग में निम्न-लिखित मन्त्रों से पञ्च कामों का पूजन करें—

"ह्लीं कामाय नमः ।

क्लीं मन्त्रथाय नमः ।

ऐं कन्दर्पाय नमः ।

ब्लूं मकरध्वजाय नमः ।

स्त्रीं मीनकेतवे नमः ।"

फिर, इन्हीं स्थानों से तथा इसी रीति से 'द्राविणी' आदि वाण-देवियों का निम्नलिखित मन्त्रों से पूजन करें—

"द्रां द्राविण्यै नमः !

द्रीं क्षोभिण्यै नमः ।

क्लीं वशीकरण्यै नमः ।

ब्लूं आकर्षण्यै नमः ।

सः सम्मोहिन्यै नमः ।"

फिर 'अष्ट योनियों में सुभग्न आदि आठ शक्तियों का निम्नलिखित मन्त्रों से पूजन करें—

"ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः सुभगायै नमः ।

" " भगायै नमः ।

" " भगसर्पिण्यै नमः ।

" " भगमालिन्यै नमः ।

" " अनङ्गायै नमः ।

" " अनङ्ग कुसुमायै नमः ।

ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः अनङ्ग मेखलायै नमः ।
" " अनङ्ग मदनायै नमः ।"

फिर, पद्म केसरों में यथाक्रमेण पूर्व आदि दिशाओं में ब्राह्मी आदि मातृकाओं का निम्नलिखित मन्त्रों से पूजन करें—

"आं ब्राह्म्यै नमः ।
ईं माहेश्वर्यै नमः ।
ऊं कौमार्यै नमः ।
ॠं वैष्णव्यै नमः ।
ॡं वाराह्यै नमः ।
ऐं इन्द्राण्यै नमः ।
औं चामुण्डायै नमः ।
अः महालक्ष्म्यै नमः ।"

फिर, दलों में पूर्व आदि क्रम से असिताङ्ग आदि अष्ट भैरवों का निम्नलिखित मन्त्रों से पूजन करें—

"अं असिताङ्ग भैरवाय नमः ।
इं रुरु भैरवाय नमः ।
उं चण्ड भैरवाय नमः ।
ऋं क्रोध भैरवाय नमः ।
लृं उन्मत्त भैरवाय नमः ।
एं कापली भैरवाय नमः ।
ओं भीषण भैरवाय नमः ।
अं संहार भैरवाय नमः ।"

फिर, दलों के अग्रभाग में पूर्वादि क्रम से निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा आठ पीठों का पूजन करें—

"ॐ कामरूप पीठाय नमः ।
ॐ मलयगिरि पीठाय नमः ।

ॐ कोल्लगिरि पीठाय नमः ।

ॐ चौहार पीठाय नमः ।

ॐ कुलान्तक पीठाय नमः ।

ॐ जालन्धर पीठाय नमः ।

ॐ उड्यान पीठाय नमः ।

ॐ कोट्ट पीठाय नमः ।"

फिर, भूपुर में पूर्व आदि १० दिशाओं में हैतुक आदि गणों का निम्नलिखित मन्त्रों से पूजन करें—

"ॐ हैतुकाय नमः ।

ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः ।

ॐ वेतालाय नमः ।

ॐ अग्नि जिह्वाय नमः ।

ॐ कालान्तकाय नमः ।

ॐ कपालिने नमः ।

ॐ एकपादाय नमः ।

ॐ भीमरूपाय नमः ।

ॐ मलयाय नमः ।

ॐ हाटकेश्वराय नमः ।"

फिर, पूर्व आदि दिशाओं में अपने वज्र आदि आयुधों के साथ इन्द्र आदि दिक्पालों का निम्नलिखित मन्त्रों से पूजन करें—

"ॐ वज्र सहिताय इन्द्राय नमः—पूर्वे ।

ॐ शक्ति सहिताय अग्नये नमः—आग्नेये ।

ॐ दण्ड सहिताय यज्ञाय नमः—दक्षिणे ।

ॐ खड्ग सहिताय निर्ऋतये नमः—नैर्ऋत्ये ।

ॐ पाश सहिताय वरुणाय नमः—पश्चिमे ।

ॐ अंकुश सहिताय वायवे नमः—वायव्ये ।

ॐ गदा सहिताम सोमाय नमः—उत्तरे ।

ॐ शूल सहिताय ईशानाय नमः—ईशान्ये ।

ॐ पद्म सहिताय ब्रह्मणे नमः—पूर्वेशानयोर्मध्ये ।

ॐ चक्र सहिताय अनन्ताय नमः—निऋँति पश्चिमयोर्मध्ये ।"

अन्त में, भूपुर के बाहर पूर्व आदि दिशाओं में बटुक आदि का तथा आग्नेय आदि कोणों में वस्तु आदि का निम्नलिखित मन्त्रों से पूजन करें—

पूर्वादि दिशाओं में—

"वं बटुकाय नमः ।
यं योगिनीभ्यो नमः ।
क्षं क्षेत्रपालाय नमः ।
गं गणपतये नमः ।"

आग्नेयादि कोणों में—

"ॐ वसुभ्यो नमः ।
ॐ आदितेभ्यो नमः ।
ॐ शिवाभ्यो नमः ।
ॐ भूतेभ्यो नमः ।"

उक्त प्रकार से आवरण-पूजा कर, पुष्पांजलि समर्पित करें तथा धूप-दीप आदि उपचारों से विसर्जन तक विधिवत् देवी का पूजन करें । पूजन में विशेषता यह है कि नैवेद्य समर्पित करने के बाद श्रीविद्या पद्धति के अनुसार चारों बलि उसी समय समर्पित करनी चाहिए ।

उक्त विधि से पूजन करके, यथाशक्ति जप करना चाहिए ।

काम्य-प्रयोग

१. लालकमलों द्वारा होम करने से स्त्रियाँ वश में हो जाती हैं ।

२. सरसों के होम से राजा वश में हो जाता है ।

३. तगर, राजवृक्ष, कुन्द, गुलाब अथवा चम्पा के पुष्प अथवा बेल फल के होम से लक्ष्मी स्थिर हो जाती है ।

४. दूध वाली गुडूची साथ दूध सहित दूर्वा के होम से मान्त्रिक अपमृत्यु को जीत लेता है तथा आजीवन नीरोग बना रहता है ।

५. चन्दन, अगरु एवं गुग्गुल के होम से ज्ञान तथा कवित्व-शक्ति की प्राप्ति होती हैं।

६. अपराजिता नामक लता के पुष्पों के होम से श्रेष्ठ ब्राह्मण वश में हो जाते हैं।

७. कह्लार पुष्पों के होम से क्षत्रिय, तथा कर्णिक-रज के होम से क्षत्रियों की स्त्रियाँ वश में हो जाती हैं।

८ कोरण्ट-पुष्पों के होम से वैश्य तथा गुलाव पुष्पों के होम से शूद्र वश में हो जाते हैं।

९. पलाश पुष्पों के होम से वाक्सिद्धि प्राप्त होती है।

१०. भात के होम से अन्न-प्राप्ति होती है।

११. मधु, दूध एवं दही मिश्रित लाजाओं के होम से रोग दूर हो जाते हैं।

वशीकरण-तिलक

१ भाग लाल चन्दन, १ भाग कपूर, १ भाग कचूर, ९ भाग अगर, ४ भाग गोरोचन, १० भाग चन्दन, ७ भाग केशर तथा ४ भाग जटामांसी —इन सबको मिला लें। फिर कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को श्मशान अथवा चौराहे पर क्वारी-कन्या के हाथ से उक्त वस्तुओं को पिसवाकर, उसे उक्त सिद्ध-मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, उसको अपने मस्तक पर तिलक लगायें तो उस तिलक को देखने मात्र से ही मनुष्य, हाथी, सिंह, भूत, राक्षस एवं शाकिनी आदि वश में हो जाते हैं।

देवी के विविध ध्यान

विविध प्रयोगों में सिद्धि के लिए देवी के विभिन्न-ध्यानों को बताया गया है, उनके विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

१. लक्ष्मी-प्राप्ति हेतु—दोनों हाथों में बीजपूर तथा कमल धारण करने वाली, स्वर्ण जैसी आभा सम्पन्न, पद्मासन पर विराजमान बाला देवी का ध्यान करना चाहिए।

२. ज्ञान-प्राप्ति हेतु—चारों हाथों में वरदमुद्रा, अमृत-कलश, पुस्तक तथा अभय-मुद्रा धारण करने वाली एवं अमृतधारा को बिखराने वाली बाला देवी का ब्रह्मरन्ध्र में ध्यान करना चाहिए।

३. रोग-नाशहेतु—चारों हाथों में वरद मुद्रा आदि धारण करने वाली, श्वेतवस्त्रों 'वाली' चन्द्रमा के समान आभा वाली तथा अकार से सकार तक समस्त वर्णों के अवयव धारण करने वाली बाला का ध्यान करना चाहिए।

४. वशीकरण हेतु—दोनों हाथों में अंकुश एवं पाशधारण करने वाली,

रत्न तथा आभूषणों से अलंकृत, प्रसन्नवदना एवं अरुण आभावाली देवी का ध्यान करना चाहिए।

अब प्रत्येक बीज के जप, ध्यान की विधि शापोद्धार की रीति तथा बीजों की दीपिनी की विधि को बताते हैं।

वाग्बीज का ध्यान

पुस्तक, अक्षमाला, सुकपाल एवं ज्ञानमुद्रा से सुशोभित चार हाथों वाली, कुन्दपुष्प के समान कान्ति वाली एवं मोतियों के आभूषणों से सुशोभित अङ्गों वाली बाला का ध्यान 'वाङ्मय सिद्धि' के लिए करना चाहिए।

श्वेत वस्त्र पहिन कर, श्वेत चन्दन लगाकर तथा मोतियों के आभूषण धारण करके जो साधक उक्त रीति से ध्यान कर, वाग्भव बीज का ३,००,००० (तीन लाख) की संख्या में जप करता है तथा जप के बाद मधु-मिश्रित पलाश-पुष्पों से होम करता है, वह श्रेष्ठ कवि तथा युवतियों का प्रिय बन जाता है।

कामबीज का ध्यान

कल्पवृक्ष के नीचे कान्तिमान रत्नसिंहासन पर विराजित, मदाघूर्णित नेत्रों वाली, चारों हाथों में क्रमशः बीजापूर, कपाल, धनुष-वाण तथा अंकुश को धारण करने वाली रक्तवर्णा देवी का ध्यान 'वशीकरण हेतु, करना चाहिए।

लाल वस्त्र एवं आभूषण पहिनकर तथा लालचन्दन लगाकर, देवी के उक्त स्वरूप का ध्यान करते हुए जो साधक कामबीज का ८ लाख की संख्या में जप करता है तथा कपूर एवं लालचंदन मिश्रित मालती के फूलों से दशांश होम करता है, तीनों लोकों के जीव उसके शीघ्र वशीभूत हो जाते हैं।

तृतीय बीज का ध्यान

चारों हाथों में क्रमशः व्याख्यान मुद्रा, अमृतकलश, पुस्तक एवं अक्षमाला धारण करने वाली चैतन्य रुपिणी, शरदचन्द्र के समान कान्तिवाली तथा मोती के आभूषणों से सुशोभित अङ्गोवाली बाला देवी का ध्यान लक्ष्मी, विद्या एवं यश प्राप्ति के लिए करना चाहिए।

श्वेतवस्त्र धारण कर, श्वेत चन्दन लगाकर, देवी के उक्त स्वरूप का ध्यान करते हुए जो साधक तृतीय बीज का ३ लाख की संख्या में जप करता है तथा चन्दन मिश्रित मालती के फूलों से दशांश होम करता है, वह शीघ्र ही लक्ष्मी, विद्या एवं कीर्ति को प्राप्त कर लेता है।

शापोद्धार-विधि

यह विद्या देवी द्वारा शाप ग्रस्त एवं कीलित होने के कारण सामान्यतः

निष्फल र ती है, अतः सिद्धि प्राप्त करने हेतु इसका शापोद्धार एवं उत्कीलन कर लेने के बाद ही जप करना चाहिए।

शापोद्धार के मन्त्र इस प्रकार हैं—

(१) "ह् सौं ह् स्क्ल्रीं हसौः।"

उक्त मन्त्र का १०० वार जप करने से बाला मन्त्र का शाप दूर हो जाता है।

(२) "ऐं ऐं सौः क्लीं क्लीं ऐं सौः सौः क्लीं।"

उक्त नवार्ण मन्त्र का १०० बार जप करने से भी बाला-मन्त्र का शाप नष्ट हो जाता है।

उत्कीलन-विधि

निम्नलिखित 'चेतनी' एवं 'आह्लादिनी' मन्त्रों का जप करने से यह विद्या (बाला-मन्त्र) उत्कीलित हो जाती है—

(१) चेतनी मन्त्र

"ऐं ई औ।"

(२) आह्लादिनी मन्त्र

"ॐ क्लीं नमः।"

दीपन-विधि

जप से पूर्व निम्नलिखित तीन दीपन-मन्त्रों द्वारा तीनों बीजों का 'दीपन' करने के बाद ही अभीष्ट सिद्धि हेतु इनका जप करना चाहिए। इन दीपन मन्त्रों की आराधना के बिना बाला सिद्ध नहीं होती है।

वाग्भव बीज का दीपिनी-मन्त्र

"वदवदवाग्वादिनि ऐं।"

कामबीज का दीपिनी-मन्त्र

"क्लिन्ने क्लेदिनि महाक्षोभं कुरु।"

तृतीय बीज का दीपिनी-मन्त्र

"ॐ मोक्षं कुरु।"

विधि—बाला मन्त्र के तीनों बीजों के साथ उनके अपने दीपनी मन्त्रों को लगाकर जप करने से बाला-मन्त्र दीप्त हो जाता है। इस प्रकार निर्मित समस्त मन्त्रों का नाम 'दीपिनी-विद्या' है और यही विद्या बाला की प्राण स्वरूपा है।

इस दीपिनी-मन्त्र का जप से पूर्व तथा बाद में भी ७-७ बार जप कर लेना चाहिए, अन्यथा बाला-मन्त्र कभी सिद्ध नहीं हो पाता है।

कृतघ्न, धूर्त एवं शठ को यह रहस्य नहीं बताना चाहिए। केवल परीक्षित-शिष्य को ही इसे बतायें अन्यथा बताने वाला ही दोष का भागी होता है।

कामना-भेद से विभिन्न मन्त्र

शत्रु-नाश हेतु वाग्भव, तार्तीय (तृतीय) एवं कामबीजों का जप करना चाहिए। तीनों लोकों को वश में करने के लिए काम बीज, वाग्भव तथा तार्तीय का जप करना चाहिए। मुक्ति के लिए काम बीज, तार्तीय तथा वाग्भव का जप करना चाहिए। इन मन्त्रों का स्वरूप निम्नानुसार होगा—

शत्रु-नाशक मन्त्र—

"ऐं सौः क्लीं।"

वशीकरण मन्त्र—

"क्लीं ऐं सौः।"

मोक्षदायक मन्त्र—

"क्लीं सौः ऐं।"

गुरु-पूजा विधि

'शारदा तिलक' के अनुसार बाला-पूजन में त्रिविध गुरुओं का पूजन करना चाहिए। (१) दिव्यौघ, (२) सिद्धौघ तथा (३) मानवौघ—ये तीन प्रकार के गुरु होते हैं।

पर प्रकाशानन्द, परमेशानन्द; परशिवानन्द, कामेश्वरानन्द, मोक्षानन्द, कामानन्द तथा अमृतानन्द—ये सात 'दिव्यौघ' गुरु हैं।

ईशान, तत्पुरुष, घोर, वामदेव तथा सद्योजात—ये पाँच 'सिद्धौघ' गुरु हैं।

मानवौघ गुरुओं के विषय में नियम यह है कि उन्हें अपने गुरु-सम्प्रदाय के अनुसार जान लेना चाहिए।

गुरुओं के चतुर्थ्यन्त नामों के बाद 'नमः' लगाने से उनकी पूजा के मन्त्र बन जाते हैं। यथा—

"परप्रकाशानन्दाय नमः ।

परमेशानन्दाय नमः ।

परशिवानन्दाय नमः ।

कामेश्वरानन्दाय नमः ।

मोक्षानन्दाय नमः ।

कामानन्दाय नमः ।

अमृतानन्दया नमः ।

ईशानाय नमः ।

तत्पुरुषाय नमः ।

घोराय नमः ।

वामदेवाय नमः ।

सद्योजाताय नमः ।"

(इत्यादि)

त्रिपुरा गायत्री

"क्लीं त्रिपुरा देवि विद्महे कामेश्वरी धीमहि । तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात् ।"

यह सुरसेवित त्रिपुरा गायत्री-मन्त्र सर्व सिद्धिदायक है ।

बालाधारण यन्त्र

नवयोन्यात्मक यन्त्र में, मध्य योनि से प्रारम्भ कर, प्रदक्षिण क्रम से तीन आवृत्तियों में बीजों को लिखें । फिर अष्टदल में 'त्रिपुरा गायत्री' के तीन-तीन अक्षरों को लिखें । तदुपरान्त अष्टदल को बाहर वर्ण माला से वेष्टित कर, परस्पर व्यतिभिन्न रूप में दो चतुरस्र बनायें तथा उनके कोणों में काम बीज लिखें ।

उक्त विधि से जो यन्त्र बनेगा, उसके स्वरूप को नीचे प्रदर्शित किया जा रहा है—
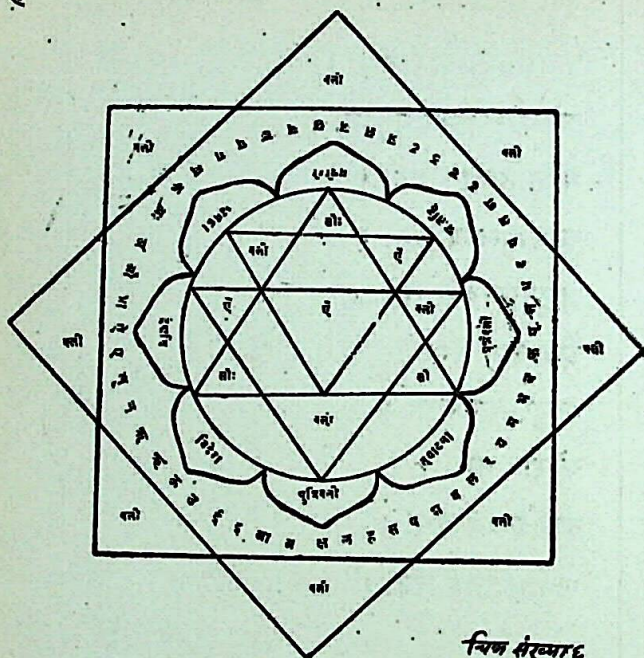
चित्र संख्या ६

(बाला धारण यन्त्र)

उक्त त्रिपुरा संज्ञक (बालाधारण यन्त्र) यन्त्र जप तथा आहुति-शेष घृत से बनाकर भुजा में धारण करने से धन, कीर्ति, सुख एवं पुत्र प्रदान करता है।

६ | बाला-भेद मन्त्र

आगम शास्त्र में अत्यन्त गोपनीय बाला-मन्त्र के १४ भेदों का उल्लेख मिलता है, वे निम्नानुसार हैं—

विविध-मन्त्र

त्र्यक्षर-मन्त्र

"ह्रीं क्लीं ह्सौः ।

षडक्षर मन्त्र

"ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं ।"

नवार्ण मन्त्र

"श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः ह्रीं क्लीं श्रीं ।"

दशार्ण मन्त्र

"ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे स्वाहा ।"

चतुर्दशाक्षर मन्त्र

"ऐं क्लीं ह्सौः बाला त्रिपुरे सिद्धि देहि नमः ।"

षोडशाक्षर मन्त्र

"ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिपुरा भारती कवित्वं देहि स्वाहा ।"

सप्तदशाक्षर मन्त्र

"श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिपुरा मालिनी मह्यं सुखं देहि स्वाहा ।"

सप्तदशार्णः

"स्क्लरीं क्ष्म्ब्रौं ऐं त्रिपुरे सर्ववांछितं देहि नमः स्वाहा ।"

अष्टादक्षाक्षर मन्त्र

"ह्लीं ह्लीं ह्लीं प्रौढत्रिपुरे आरोग्य मैश्वर्यं देहि स्वाहा ।"

अष्टादशार्णः

"ह्लीं श्रीं क्लीं त्रिपुरामदने सर्वशुभं साधय स्वाहा ।"

विंशत्यक्षर मन्त्रः

"ह्लीं श्रीं क्लीं बाला त्रिपुरे मदायत्तां विद्यां कुरु नमः स्वाहा ।"

विंशत्यर्णः

"ह्लीं श्रीं क्लीं परापरे त्रिपुरे सर्वमीप्सितं साधय स्वाहा ।"

अष्टाविंशत्यक्षर मन्त्रः

"क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं ह्लीं ह्लीं त्रिपुरा ललिते मदीप्सितां योषितं देहि वांछितं कुरु स्वाहा ।"

पञ्चत्रिंशदक्षर मन्त्रः

"क्लीं क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं श्रीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं त्रिपुर सुन्दरी सर्व-जगन्मम वशं कुरु कुरु मह्यं बलं देहि स्वाहा ।"

विनियोग एवं न्यास

उक्त १४ मन्त्रों के दक्षिणामूर्ति ऋषि हैं, गायत्री छन्द है तथा त्रिपुरा बाला देवता है ।

[टिप्पणी—'शारदा तिलक तन्त्र' के अनुसार इनका बीज वाग्भव, शक्ति तार्तीय एवं कीलक कामबीज है]

यथा—

"अस्य श्री बालामन्त्रस्य दक्षिणा मूर्तिऋंषिः गायत्री छन्दः त्रिपुराबाला देवता (ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं) ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।"

विनियोग के बाद निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यान

"पाशांकुशौपुस्तकमक्षसूत्रं करैर्दधानासकलामरार्च्या ।
रक्तां त्रिनेत्रा शशि शेखरेयं ध्येयाखिलर्द्धयै त्रिपुरात्र बाला ॥"

भावार्थ—अपने चारों हाथों में पाश, अंकुश, पुस्तक तथा अक्षसूत्र को धारण करने वाली, लाल कमल के समान तीन नेत्रों वाली एवं चन्द्रकला से सुशोभित मस्तक वाली भगवती त्रिपुरा बाला का समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिए ध्यान करता हूँ।"

जप-संख्या, हवन-पूजन आदि

उक्त मन्त्रों का १ लाख की संख्या में जप करना चाहिए तथा लाल कनेर के फूलों से जप का दशांश होम करना चाहिए ।

पूर्वोक्त पीठ पर षडङ्गपूजा, रति आदि की पूजा, वाण देवता, मातृका, दिक्पाल एवं उनके अस्त्रों के साथ देवी का पूजन कर, पूर्वोक्त रीति से काम्य-प्रयोग करने चाहिए ।

७ | गोपाल सुन्दरी मन्त्र

भोग मोक्षदायिनी 'गोपाल सुन्दरी' को भी भगवती 'त्रिपुर सुन्दरी' जैसा ही माना गया है। इस प्रकरण में इसी मन्त्र की साधन-विधि का उल्लेख किया जा रहा है।

मन्त्र

"ह्रीं श्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन बल्लभाय स्वाहा।"

विनियोग

"अस्य गोपाल सुन्दरी मन्त्रस्य विधात्रानन्द भैरवो ऋषिः देवी गायत्री छन्दः, गोपाल सुन्दरी देवता, क्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।"

षडङ्गन्यासः

"ह्रीं श्रीं क्लीं हृदयाय नमः
कृष्णाय शिरसे स्वाहा।
गोविन्दाय शिखायै वषट्।
गोपीजन कवचाय हुम्।
बल्लभाय नेत्रात्रयाय वौषट्।
स्वाहा अस्त्राय फट्।"

सृष्टि न्यास

'श्रीविद्या भास्कर' कार के अनुसार इस मन्त्र का सृष्टि न्यास निम्नानुसार बताया गया है—

"ह्रीं नमः—मूर्ध्नि।
श्रीं नमः—ललाटे।

क्लीं नमः—भ्रुवोः ।
कृं नमः—नेत्रयोः ।
ष्णां नमः—कर्णयोः ।
यं नमः—नसोः ।
गों 'नमः—मुखे ।
विं नमः—चिबुके ।
न्दां नमः—कण्ठे ।
यं नमः—बाहुमूले ।
गों नमः—हृदि ।
पीं नमः—उदरे ।
जं नमः—नाभौ ।
नं नमः—लिङ्गे ।
वं नमः—गुदे ।
ल्लं नमः—कट्यां ।
भां नमः—जान्वोः ।
यं नमः—जंघयोः ।
स्वां नमः—गुल्फयोः ।
हां नमः—पादयोः ।"

स्थिति न्यास

सृष्टि न्यास के बाद निम्नानुसार 'स्थिति-न्यास' करें—

"ह्रीं नमः—हृदि ।
श्रीं नमः—उदरे ।
क्लीं नमः—नाभौः ।
कृं नमः—लिङ्गे ।
ष्णां नमः—आधारे ।
यं नमः—कट्यां ।

गों नमः—जान्वो ।

विं नमः—जंघयो ।

न्दां नमः—गुल्फयोः ।

यं नमः—पादयोः ।

गों नमः—मूर्ध्नि ।

पीं नमः—ललाटे ।

जं नमः—मुखे ।

नं नमः—नेत्रयोः ।

वं नमः—कर्णयोः ।

ल्लं नमः—नसोः ।

मां नमः—मुखे ।

यं नमः—चिबुके ।

स्वा नमः—कण्ठे ।

हां नमः—बाहुमूले ।"

संहार-न्यास

'स्थिति-न्यास' के बाद निम्नानुसार 'संहार-न्यास' करें—

"ह्रीं नमः—पादयोः ।

श्रीं नमः—गुल्फायो ।

क्लीं नमः—जंघयोः ।

कृं नमः—जान्वोः ।

ष्णा नमः—कट्यो ।

यं नमः—गुदे ।

गों नमः—लिङ्गे ।

विं नमः—नाभौ ।

न्दां नमः—उदरे ।

यं नमः—हृदि ।

गों नमः--बाहुमूले ।

पीं नमः--कण्ठे ।

जं नमः--चिबुके ।

नं नमः--मुखे ।

वं नमः--नसोः ।

ल्लं नमः--कर्णयोः ।

भां नमः--नेत्रयोः ।

यं नमः--भ्रुवोः ।

स्वां नमः--ललाटे ।

हां नमः--मूर्ध्नि ।"

उक्त रीति से सृष्टि, स्थिति एवं संहार न्यास करने के बाद पुनः 'सृष्टि न्यास' करें।

कुछ आचार्यों का मत है कि इसके बाद 'विभूति पञ्जर न्यास' करना चाहिए। इस न्यास के करने से भूति-ऐश्वर्य की वृद्धि होती है। इस न्यास का क्रम निम्नानुसार है—

विभूति पञ्जर न्यास

"गों नमः—आधारे ।

पीं नमः—लिङ्गे ।

जं नमः—नाभौ ।

नं नमः—हृदि ।

वं नमः—कण्ठे ।

ल्लं नमः—मुखे ।

भां नमः—दक्षिणांसे ।

यं नमः—वामांसे ।

स्वां नमः—दक्षिणोरौ ।

हां नमः—वामोरौ ।

गो नमः—कन्धरायाम् ।

पीं नमः—नाभौ ।

जं नमः—कुक्षौ ।

नं नमः—हृदि ।

वं नमः—दक्षिणस्तने ।

ल्लं नमः—वाम स्तने ।

भो नमः—दक्षिण पार्श्वे ।

यं नमः—वाम पार्श्वे ।

स्वां नमः—दक्षिणश्रोण्याम् ।

हां नमः—वाम श्रोण्याम् ।

गों नमः—शिरसि ।

पीं नमः—मुखे ।

जं नमः—दक्षिण नेत्रे ।

नं नमः—वाम नेत्रे ।

वं नमः—दक्षिण कर्णे ।

ल्लं नमः—वाम कर्णे ।

भां नमः—दक्षिण नासापुटे ।

यं नमः—वाम नासापुटे ।

स्वां नमः—दक्षिण कपोले ।

हां नमः—वाम कपोले ।

गों नमः—दक्षिण हस्तमूले ।

पीं नमः—दक्षिण कूर्परे ।

जं नमः—दक्षिण मणिबन्धे ।

नं नमः—दक्षांगुलिमूले ।

वं नमः—दक्षांगुल्यग्रे ।

ल्लं नमः—अंगुष्ठे ।

भां नमः—तर्जन्याम् ।

यं नमः—मध्यमायाम् ।

स्वां नमः—अनामिकायाम् ।

हां नमः—कनिष्ठकायाम् ।

गों नमः—वामहस्तमूले ।

पीं नमः—वाम कूर्परे ।

जं नमः—वाम मणि बन्धे ।

नं नमः—वामाङ्गुलि मूले ।

वं नमः—वामांगुल्यग्रे ।

ल्लं नमः—वाम अंगुष्ठे ।

भां नमः—वाम तर्जन्याम् ।

यं नमः—वाम मध्यमायाम् ।

स्वां नमः—वाम अनामिकायाम् ।

हां नमः—वाम कनिष्ठकायाम् ।

गों नमः—दक्ष पाद मूले ।

पीं नमः—दक्ष गुल्फे ।

जं नमः—दक्ष जंघायाम् ।

नं नमः—दक्ष पादांगुलिमूले ।

वं नमः—दक्ष पादांगुल्यग्रे ।

ल्लं नमः—दक्ष पादांगुष्ठे ।

भां नमः—दक्ष तर्जन्याम् ।

यं नमः—दक्ष मध्यमायाम् ।

स्वां नमः—दक्ष अनामिकायाम् ।

हां नमः—दक्ष कनिष्ठकायाम् ।

गो नमः—वाम पादमूले ।

पीं नमः—वाम गुल्फे ।

जं नमः—वाम जंघायाम् ।

नं नमः—वाम पादांगुलि मूले ।

वं नमः—वाम पादांगुल्यग्रे ।

ल्लं नमः—वामपादांगुष्ठे ।

भो नमः—वाम तर्जन्याम् ।

यं नमः—वाम मध्यमायाम् ।

स्वं नमः—वाम अनामिकायाम् ।

हां नमः—वाम कनिष्ठकायाम् ।

गों नमः—दक्षपादमूले ।

पीं नमः—दक्षगुल्फे ।

जं नमः—दक्ष जंघायाम् ।

नं नमः—दक्ष पादांगुलिमूले ।

वं नमः—दक्ष पादांगुल्यग्रे ।

ल्लं नमः—दक्ष पादांगुष्ठे ।

भां नमः—दक्ष तर्जन्याम् ।

यं नमः—दक्ष मध्यमायाम् ।

स्वो नमः—दक्ष अनामिकायाम् ।

हां नमः—दक्ष कनिष्ठकायाम् ।

गों नमः—वाम पादमूले ।

पीं नमः—वाम गुल्फे ।

जं नमः—वाम जंघायाम् ।

नं नमः—वाम पादांगुलिमूले ।

वं नमः—वाम पादांगुल्यग्रे ।

ल्लं नमः—वाम पादांगुष्ठे ।

भां नमः—वाम तर्जन्याम् ।

यं नमः—वाम मध्यमायाम् ।

स्वं नमः—वाम अनामिकायाम् ।

हां नमः—वाम कनिष्ठकायाम् ।

गों नमः—मूर्ध्नि ।

पीं नमः—तत्पूर्वे ।

जं नमः—तद्दक्षिणे ।

नं नमः—तत्पश्चिमे ।

वं नमः—तदुत्तरे ।

ल्लं नमः—मूर्ध्नि ।

भां नमः—दक्षिणभुजे ।

थं नमः—वाम भुजे ।

स्वां नमः—दक्षिणोरौ ।

हां नमः—वामोरौ ।

गों नमः—शिरसि ।

पीं नमः—नेत्रयोः ।

जं नमः—मुखे ।

नं नमः—कण्ठे ।

वं नमः—हृदि ।

ल्लं नमः—जठरे ।

भां नमः—मूलाधारे ।

यं नमः—लिङ्गे ।

स्वां नमः—जानुनोः ।

हां नमः—पादयोः ।

गों नमः—श्रोत्रयोः ।

पीं नमः—गण्डयो ।

जं नमः--अंसयोः ।

नं नमः—स्तनयो ।

वं नमः--पार्श्वयोः ।

ल्लं नमः--लिङ्गे ।

भौ नमः--ऊर्वो ।

यं नमः--जानुनोः ।

स्वां नमः--जंघयोः ।

हां नमः--पादयोः ।"

इसके बाद त्रिपुर सुन्दरी षोडशी मन्त्र में बताई गई रीति से (१) कर-शुद्धि न्यास, (२) आसन-न्यास तथा (३) वाग्देवता न्यास करके, तीनों कूटों का शिर, मुख तथा हृदय में न्यास करें।

फिर तीनों कूटों की दो आवृत्तियों से पुनः षडङ्गन्यास करें। तत्पश्चात् कमला एवं वसुधा के साथ श्रीचक्र में स्थित हरि का ध्यान करें।

शिर, मुख तथा हृदय में न्यास इस प्रकार करें—

"कृष्णाय नमः—मूर्ध्नि ।

गोविन्दाय नमः—मुखे ।

गोपीजनवल्लभाय नमः—हृदये ।"

षडङ्गन्यास

"कृष्णाय हृदयाय नमः ।

गोविन्दाय शिरसे स्वाहा ।

गोपीजन वल्लभाय शिखायै वषट् ।

कृष्णाय कवचाय हुम् ।

गोविन्दाय नेत्रत्रयाय वौषट् ।

गोपीजन वल्लभाय अस्त्राय फट् ।"

ध्यान-मन्त्र

इसके बाद निम्नानुसार ध्यान करें—

"क्षीरांभोधिस्थकल्पद्रुमवन विलसद्रत्नयुङ् मण्डपान्तः

प्रोद्यच्छ्रीपीठ संस्थं करधृत जलजारी क्षुचापांकुशेषुम् ।

पाशं वीणां सुवेणुं दधतभर्वानमाशोभितं रक्तकांति
ध्यायेद् गोपालमीशं विधिमुखविषुधैरीड्यमानं समतात् ॥"

भावार्थ—"क्षीर सागर के कल्पवृक्ष वाले वन में सुशोभित रत्न मण्डप के भीतर श्रीपीठ पर स्थिर आठ भुजाओं में क्रमशः पद्म, चक्र, इक्षुचाय, वाण, अंकुश, पाश, वीणा तथा वेणु धारण करने वाले धरा (पृथ्वी) तथा लक्ष्मी से सुशोभित एवं ब्रह्मा आदि देवताओं से स्तुति किये जाने वाले भगवान् गोपाल जी का मैं ध्यान करता हूँ।"

जप संख्या तथा हवन

उक्त प्रकार से ध्यान करके १,००,००० (एक लाख) की संख्या मे मन्त्र का जप करें। फिर खीर से दशांश होम करें तथा वैष्णव पीठ पर गोपाल सुन्दरी का पूजन करें।

आवरण-पूजा

फिर वृत्ताकार कर्णिका, अष्टदल तथा भूपुर सहित निर्मित यन्त्र पर सामान्य पूजा-पद्धति के अनुसार पीठ-देवताओं तथा विमला आदि वैष्णवी पीठ-शक्तियों का पूजन कर ध्यान, आवाहन आदि उपचारों से पञ्चपुष्पांजलिदान पर्यन्त पूजन कर, 'आवरण पूजा' करनी चाहिए।

'गोपाल सुन्दरी पूजन यन्त्र' का स्वरूप नीचे प्रदर्शित है—
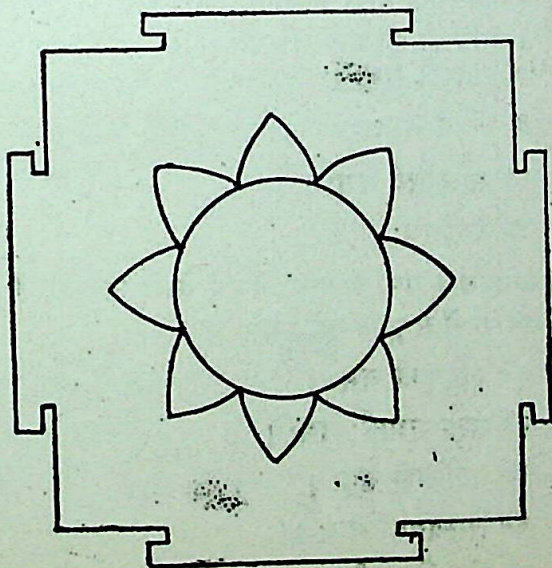
(गोपाल सुन्दरी पूजन यन्त्र)

सर्वप्रथम आग्नेय आदि कोणों में 'षडङ्गपूजा' करें। यथा—

"ह्रीं श्रीं क्लीं हृदयाय नमः।
कृष्णाय शिरसे स्वाहा।
गोविन्दाय शिखायै वषट्।
गोपीजन कवचाय हुम्।
वल्लभाय नेत्रत्रयाय वौषट्।
स्वाहा अस्त्राय फट्!"

फिर, पूर्व आदि चारों दिशाओं से चारों पत्रों के मूल में निम्नलिखित मन्त्रों से वासुदेव आदि का पूजन करें। यथा—

"ॐ वासुदेवाय नमः।
ॐ संकर्षणाय नमः।
ॐ प्रद्युम्नाय नमः।
ॐ अनिरुद्धाय नमः।"

फिर, आग्नेय आदि चारों कोणों के चारों पत्रों के मूल में निम्नलिखित मन्त्रों से शान्ति आदि का पूजन करें। यथा—

"ॐ शान्त्यै नमः।
ॐ श्रियै नमः।
ॐ सरस्वत्यै नमः।
ॐ रत्यैनमः।"

फिर, अष्टदल के पत्रों के मध्य में पूर्व आदि दिशाओं में रुक्मिणी आदि का निर्म्नलिखित मन्त्रों से पूजन करें। यथा—

"ॐ रुक्मिण्यै नमः।
ॐ सत्यभामायै: नमः।
ॐ कालिन्द्यै नमः।
ॐ जाम्बवत्यै नमः।
ॐ मित्रविन्दायै नमः।

ॐ सुनन्दायै नमः ।

ॐ सुलक्षणायै नमः ।

ॐ नाग्निजित्यै नमः ।"

फिर, दलों के बहिर्भाग में पूर्व आदि दिशाओं में तथा मध्य में निम्न-लिखित मन्त्रों द्वारा नौ विधियों का पूजन करें । यथा—

"ॐ महापद्माय नमः ।

ॐ पद्माय नमः ।

ॐ शंखाय नमः ।

ॐ मकराय नमः ।

ॐ कच्छपाय नमः ।

ॐ मुकुन्दाय नमः ।

ॐ कुन्दाय नमः ।

ॐ नीलाय नमः ।

ॐ खर्वाय नमः ।"

'त्रिपुर सुन्दरी-पूजा' में वर्णित रीति के अनुसार ६ आवरणों का पूजन करें तथा आवरण-पूजा के बाद धूप, दीप आदि उपचारों से पूजन करें ।

उक्त विधि से जो व्यक्ति प्रतिदिन 'गोपालसुन्दरी' को उपासना करता है, उसकी समस्त कामनाएँ पूर्ण होती हैं । और अन्त में उसे ब्रह्मस्वरूप की प्राप्ति होती है ।

●●

८ | कवच, हृदय, स्तोत्र आदि

अब भगवती षोडशी, त्रिपुर सुन्दरी बाला के कवच, हृदय तथा स्तोत्रादि का उल्लेख किया जाता है। नित्यप्रति मन्त्र जप के बाद इनका पाठ करते रहना चाहिए।

बिना मन्त्र जप के सामान्यतः पाठ करते रहने से भी ये स्तोत्रादि मनो-वांछित फल प्रदान करते हैं।

अथ सर्वार्थसाधन

त्रिपुर (त्रिशक्ति रूपा) लक्ष्मी कवच

श्री देव्युवाच

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्रार्थ पारग।
त्रिशक्तिरूपा लक्ष्माश्च कवचं यत्प्रकाशितम् ॥१॥
सर्वार्थसाधनं नाम कथयस्व कृपाम्बुधे॥

ईश्वर उवाच

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं परमाद्भुतम् ॥२॥
सर्वार्थं साधनंनाम त्रैलोक्ये चातिदुर्लभम्।
सर्वं सिद्धिमयं देवि सर्वैश्वर्यं प्रदायकम् ॥३॥
पठनाद्धारणान्मर्त्यस्त्रैलोक्यै श्वर्यभाग्यवेत्।

विनियोगः

सर्वार्थ साधनस्यास्य कवचस्य ऋषिः शिवः ॥४॥

छन्दोविराट् त्रिः शक्तिरूपा जगद्धात्री च देवता ।
धमार्थकाम मोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥५॥
श्रीबीजं मे शिरः पातु लक्ष्मीरूपा ललाटकम् ।
ह्रीं पातु दक्षिणं नेत्रं वामनेत्रं सुरेश्वरी ॥६॥
क्लीं पातु दक्षकर्णं मे वामं कामेश्वरी तथा ।
लक्ष्मीर्घ्राणं सदा पातु वदनं पातु केशवः ॥७॥
गौरी तु रसनां पातु कंठं पातु महेश्वरी ।
स्कंधदेशं रतिः पातु भुजौ तु मकरध्वजः ॥८॥
शंखनिधिः करौ पातु वक्षः पद्मनिधिः सदा ।
ब्राह्मी मध्यं सदा पातु नाभिं पातु महेश्वरी ॥९॥
कुमारी पृष्ठदेशं मे गुह्यं रक्षतु वैष्णवी ।
वाराही सक्थिनी पातु ऐं ह्रीं पातु पदद्वयम् ॥१०॥
भार्यां रक्षतु चामुंडा लक्ष्मी रक्षतु पुत्रकान् ।
इन्द्रः पूर्वे सदा पातु आग्नेयामग्निदेवता ॥११॥
याम्ये यमः सदा पातु नैर्ऋत्ये निर्ऋतिश्च माम् ।
पश्चिमे वरुणः पातु वायव्यां वायुदेवता ॥१२॥
सौम्ये सोमः सदा पातु ऐशान्गामीश्वरोऽवतु ।
उर्ध्वं प्रजापतिः पातु अधश्चानन्तदेवता ॥१३॥
राजद्वारे श्मशाने च अरण्ये प्रान्तरे तथा ।
जले स्थले चान्तरिक्षे शत्रूणा विग्रहे तथा ॥१४॥
एताभिः सहिता देवी त्रिबीजात्मा महेश्वरी ।
त्रिशक्तिश्च महालक्ष्मीः सर्वत्र मां सदाऽवतु ॥१५॥
इति ते कथितं देवि सारात्सारतरं परम् ।
सर्वार्थसाधनं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥१६॥
अस्यापि पठनात्सद्यः कुबेरोपि धनेश्वरः ।
इन्द्राद्याः सकला देवा धारणात्पठनाद्यतः ॥१७॥

सर्वसिद्धीश्वराः संतः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ।
पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्वा मूलेनैव पठेत्सकृत् ॥१८॥
संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात् ।
प्रीतिमन्योन्यतः कृत्वा कमला निश्चला गृहे ॥१९॥
वाणी च निवसेद्वक्त्रे सत्यं न संशयः ।
यो धारयति पुण्यात्मा सर्वार्थसाधनाभिधम् ॥२०॥
कवचं परमं पुण्यं सोपि पुण्यवतां वरः ।
सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥२१॥
पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा ।
बहुपुत्रवती भूत्वा वंध्यापि लभते सुतम् ॥२२॥
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तं जनम् ।
एतत्कवचमज्ञात्वा यो जपेत्परमेश्वरीम् ।
दारिद्र्य परमं प्राप्य सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥२३॥

इति रुद्रयामले त्रिशक्त्याः सर्वार्थसाधननामकं कवचं समाप्तम् ।

श्रीविद्या कवच

देव्युवाच ।

देवदेव महादेव भक्तनां प्रीतिवर्धनम् ।
सूचितं यन्महादेव्याः कवचं कथयस्व मे ॥१॥

महादेव उवाच ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं देवदुर्लभम् ।
न प्रकाश्यं परं गुह्यं साधकाभीष्टसिद्धिदम् ॥२॥

विनियोगः

कवचस्य ऋषिर्देवि दक्षिणामूर्तिरव्ययः ।
छंदः पंक्तिः समुद्दिष्टं देवी त्रिपुरसुन्दरी ॥३॥
धर्मार्थकाममोक्षाणं विनियोगस्तु साधने ।
वाग्भवः कामराजश्व शक्तिर्बीजं सुरेश्वरी ॥४॥

(ऐं) वाग्भवः पातु शीर्षे मां (क्लीं) कामराजस्तथा हृदि ।
(सौः) शक्तिवीजं सदा पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः ॥५॥
ऐं श्रीं सौः बदने पातु बाला मां सर्वसिद्धये ।
हसैं हसकलरीं हसौः पातु भैरवी कण्ठदेशतः ॥६॥
सुन्दरी नाभिदेशे च शीर्षे कामकलासदा ।
भ्रू नासयोरंतराले महात्रिपुरसुन्दरी ॥७॥
ललाटे सुभगा पातु भगा मां कण्ठदेशतः ।
भगोदया च हृदये उदरे भगसर्पिणी ॥८॥
भागमाला नाभिदेशे लिंगे पातु मनोभवा ।
गुह्ये पातु महादेवो राजराजेश्वरी शिवा ॥९॥
चैतन्यरूपिणी पातु पादयोर्जगदम्बिका ।
नारायणी सर्वगात्रे सर्वकार्ये शुभंकरी ॥१०॥
ब्रह्माणी पातु मां पूर्वे दक्षिणे वैष्णवी तथा ।
पश्चिमे पातु वाराही उत्तरे तु महेश्वरी ॥११॥
आग्नेयां पातु कौमारी महालक्ष्मीस्तु नैर्ऋते ।
वायव्यां पातु चामुंडा इन्द्राणी पातु ईशके ॥१२॥
जले पातु महामाया पृथिव्यां सर्वमंगला ।
अकाशे पातु वरदा सर्वत्र भुवनेश्वरी ॥१३॥
इदं तु कवचं देव्या देवानामपि दुर्लभम् ।
पठेत्प्रातः समुत्थाय शुचिः प्रयत मानसः ॥१४॥

नाधयो व्याधयस्तस्य न भयं च क्वचिद्भवेत् ।
न च मारी भयं तस्य पातकानां भयं तथा ।।१५।।
न दारिद्र्यवशं गच्छेत्तिष्ठेन्मृत्युवशे न च ।
गच्छेच्छिवपुरं देवि सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।।१६।।
इदं कवचमज्ञात्वा श्रीविद्यां यो जपेत्सदा ।
स नाप्नोति फलं तस्य प्राप्नुयाच्छस्त्रघातनम् ।।१७।।

इति सिद्धयामले श्रीविद्याकवचं समाप्तम् ।

षोडशीस्तोत्र

कल्याण वृष्टिभिरिवामृत पूरिताभि-
लक्ष्मीस्वयंवरण मङ्गल दीपिकाभिः ।
सेवाभिरम्ब तव पादसरोज मूले
नाकारि किं मनसि भक्तिमतां जनानाम् ।।१।।
एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते
त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थसरोजनेत्रे ।
सन्निध्यमुद्यदरुणाम्बुजसोदरस्य
त्वद्विग्रहस्य सुधया परयाऽऽप्लुतस्य ।।२।।
ईषत्प्रभावकलुषाः कति नाम संति
ब्रह्मादयः प्रतिदिनं प्रलयाभिभूताः ।
एकस्स एव जननि स्थिरसिद्धिरास्ते
यः पादयोस्तव सकृत्प्रणतिं करोति ।।३।।
लब्ध्वा सकृत् त्रिपुरसुन्दरि तावकीनं
कारुण्यकन्द लतिकातिभरं कटाक्षम् ।
कन्दर्प्प भावसुभगास्त्वयि भक्तिभाजः
सम्मोहयन्ति तरुणीं भुवनत्रयेऽपि ।।४।।

ह्रींकारमेव तव नाम गृणन्ति ये वा
मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनेत्रे ।
त्वत्संमृतौ यमभटाभिभवं विहाय
दीव्यन्ति नन्दनवने सह लोकपालैः ॥५॥

हन्तुः पुरामधिगलं परिपूर्णमानः
क्रूरः कथन्न भविता गरलस्य वेगः ।
नाश्वासनाय यदि मातरिदं
तवार्द्धदेहस्य शश्वदमृताप्लुतशीतलस्य ॥६॥

सर्वज्ञतां सदसि वाक्पटुतां प्रसूते
देवि त्वदंघ्रिसरसीरुहयोः प्रणामः ।
किञ्च स्फुरन्मुज्ज्वल मातपत्रं द्वे
चामरे च महतीं वसुधां दधाति ॥७॥

कल्पद्रुमैरभिमतप्रतिपादनेषु
कारुण्यवारिधिभिरम्ब भवत्कटाक्षैः ।
आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मामनाथं
त्वयेव भक्तिभरितं त्वयि बद्धदृष्टिम् ॥८॥

हन्तेतरेष्वपि निधाय मनांसि चान्ये
भक्तिं वहंति किल सापरदैवतेषु ।
त्वामेव देवि मनसा ह्नुमस्मरामि
त्वामेव नौमि शरणं जननि त्वमेव ॥९॥

लक्षेषु सत्स्वपि तवाक्षिविलोकना-
नामालोकय त्रिपुरसुन्दरि मां कथंचित् ।
नूनं मया च सदृशं करुणैकपात्रं
जातो जनिष्यति जनो न च जायते वा ॥१०॥

ह्रीं ह्रीमिति प्रतिदिनं जपतां तवाख्यां
किन्नाम दुर्लभमिह त्रिपुराभिधाने ।
मालाकिरीटमदवारणमाननीयांस्तान्सेवते
मधुमती स्वययेव लक्ष्मीः ॥११॥
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानकुशलानि सरोरुहाणि ।
त्वद्वंदनानि दुरितोद्धरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम् ॥१२॥

कल्पोप संहरण कल्पितताण्डवस्य
देवस्य खण्डपरशोः परभैरवस्य ।
पाशांकुशैक्षवशरासनपुष्पबाणाः सा
साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरेका ॥१३॥
लग्नं सदा भवतु मातरिदं त्वदीयं
तेजः परं बहुल कुंकुमपङ्कशोणम् ।
भास्वत्किरीटममृतंकुशलावतंसं रूपं
त्रिकोणमुदितं परमामृताक्तम् ॥१४॥

ह्रींकारत्रयसम्पुटेन महता मंत्रेण संदीपितं स्तोत्रं
यः प्रतिवासरं तव पुरो मातर्जपेन्मंत्रवित् ।
तस्य क्षोणिभुजो भवन्ति वशगा लक्ष्मीश्चिरं
स्थायिनी वाणी निर्मलसूक्तिभावभरिता जागर्ति दीर्घयशः ॥१५॥

इति ब्रह्मविरचितं षोडशीकल्याणीस्तोत्रं समाप्तम् ।

●●

षोडश्यष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र

भृगुरुवाच।

चतुर्वक्त्र जगन्नाथ स्तोत्रं वद मम प्रभो।
यस्यानुष्ठानमात्रेण नरोभक्तिमवाप्नुयात् ॥१॥

भृगु बोले : हे चतुर्मुख, जगन्नाथ ! हे प्रभो ! आप मुझे ऐसा स्तोत्र बतावें जिसके अनुष्ठान मात्र से मनुष्य भक्ति को प्राप्त करता है।

ब्रह्मोवाच:

सहस्रनाम्नामाकृष्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
गुह्याद् गुह्यतरं गुह्यं सुन्दर्याः परिकीर्तितम् ॥२॥

ब्रह्मा बोले : सुन्दरी के सहस्रनामों में से सार लेकर यह एक सौ आठ नामों का स्तोत्र बनाया गया है, जो अत्यन्त गुह्य है।

विनियोग:

अस्य श्रीषोडश्यष्टोत्तर शतनामस्तोत्रस्य शंभुर्ऋषिरनुष्टुप्छंदः श्रीषोडसी देवता धर्मार्थकाममोक्षसिद्धये पाठे विनियोगः।

ॐ त्रिपुरा षोडशी माता त्र्यक्षरा त्रितया त्रयी।
सुन्दरी सुमुखी सेव्या सामवेदपरायणा ॥३॥
शारदा शब्दनिलया सागरा सरिदम्बरा।
शुद्धा शुद्धतनुस्साध्वी शिवध्यानपरायणा ॥४॥
स्वामिनी शंभुवनिता शाम्भवी च सरस्वती।
समुद्रमथिनी शीघ्रगामिनी शीघ्रसिद्धिदा ॥५॥
साधुसेव्या साधुगम्या साधुसन्तुष्टमानसा।
खट्वाङ्गधारिणी खर्वा खड्ग खर्परधारिणी ॥६॥
षड्वर्गभावरहिता षड्वर्गपरिचारिका।
षड्वर्गा च षडङ्गा च षोढा षोडश वार्षिकी ॥७॥
क्रतुरूपा क्रतुमती ऋभुक्षकतुमण्डिता।
कवर्गादिपवर्गान्ता अन्तस्था अन्तरूपिणी ॥८॥

अकाराकाररहिता कालमृत्युजरापहा ।
तन्वी तत्त्वेश्वरी तारा त्रिवर्षा ज्ञानरूपिणी ॥९॥
काली कराली कामेशीच्छायासंज्ञाप्यरुन्धती ।
निर्विकल्पा महावेगा महोत्साहा महोदरी ॥१०॥
मेधा बलाका विमला विमलज्ञानदायिनी ।
गौरी वसुन्धरागोपूत्री गवांपतिनिषेविता ॥११॥
भगाङ्गा भगरूपा च भक्तिभावपरायणा ।
छिन्नमस्ता महाधूमा तथा धूम्रविभूषणा ॥१२॥
धर्मकर्मादिरहिता धर्मकर्मपरायणा ।
सीता मातङ्गिनी मेधा मधुदैत्यविनाशिनी ॥१३॥
भैरवी भुवना माताऽभयदा भवसुन्दरी ।
भावुका बगला कृत्या बाला त्रिपुरसुन्दरी ॥१४॥
रोहिणी रेवती रम्या रम्भा रावणवन्दिता ।
शतयज्ञमयी सत्त्वा शतक्रतुवरप्रदा ॥१५॥
शतचन्द्रानना देवी सहस्रादि त्यसन्निभा ।
सोमसूर्याग्निनयना व्याघ्रचर्माम्बिरावृता ॥१६॥
अर्द्धेन्दुधारिणी मत्ता मदिरा मदिरेक्षणा ।
इति ते कथितं गोप्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥१७॥
सुन्दर्याः सर्वदं सेव्यं महापातकनाशनम् ।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं कलौयुगे ॥१८॥
सहस्रनामपाठस्य फलं यद्वै प्रकीर्तितम् ।
तस्मात्कोटिगुणं पुण्यं स्तवस्यास्य प्रकीर्तनात् ॥१९॥
पठेत्सदा भक्तियुतो नरो यो
निशीथकालेऽप्यरुणोदये वा ।
प्रदोषकाले नवमीदिनेऽथ वा लभेत्
भोगांन् परमाद्भुतान् प्रियान् ॥२०॥

इति ब्रह्मयामले पूर्वखण्डे षोडश्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

षोडशीसहस्रनामस्तोत्र

कैलासशिखरे रम्ये नानारत्नोपशोभिते ।
कल्प पादपमध्यस्थे नानापुष्पोपशोभिते ।।१।।

मणिमण्डपमध्यस्थे मुनिगन्धर्वसेविते ।
कदाचि त्सुखमासीनं भगवन्तं जगत्गुरुम् ।।२।।

कपालखट्वाङ्गधरं चन्द्रार्धकृतशेखरम् ।
हस्तत्रिशूलडमरुं महावृषभवाहनम् ।।३।।

जटाजूटधरं देवं कण्ठभूषणवासुकिम् ।
विभूतिभूषणं देव नीलकण्ठं त्रिलोचनम् ।।४।।

द्वीपिचर्म्मपरीधानं शुद्धस्फटिकसन्निभम् ।
सहस्रादित्यसङ्काशं गिरिजार्द्धाङ्गभूषणम् ।।५।।

प्रणम्य शिरसानाथं कारणं विश्वरूपिणम् ।
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा प्राहैनं शिखिवाहनः ।।६।।

कार्तिकेय उवाचः

देवदेव जगन्नाथ सृष्टिस्थितिलयात्मक ।
त्वमेव परमात्मा च त्वं गतिस्सर्वदेहिनाम् ।।७।।

त्वं गतिस्सर्वलोकानां दीनानां च त्वमेव हि ।
त्वमेव जगदाधारस्त्वमेव विश्वकारणम् ।।८।।

त्वमेवपूज्यस्सर्वेषां त्वदन्यो नास्ति मे गतिः ।
किं गुह्यं परमं लोके किमेकं सर्वसिद्धिदम् ।।९।।

किमेकं परमं श्रेष्ठं को योगः स्वर्गमोक्षदः ।
बिना तीर्थेन तपसा विना दानैर्विना मखैः ।।१०।।

विना लयेन ध्यानेन नरः सिद्धिमवाप्नुयात् ।
कस्मादुत्पद्यते सृष्टिः कस्मिश्च प्रलयो भवेत् ।।११।।

कस्मादुत्तीर्यते देव संसारार्णवसङ्कटात् ।
तदहं श्रोतुमिच्छामि कथयस्व महेश्वर ।।१२।।

ईश्वर उवाच :

साधु साधु त्वया पृष्टं पार्वतीप्रियनन्दन ।
अस्ति गुह्यतमं पुत्र कथयिष्याम्यसंशयम् ।।१३।।

सत्त्वं रजस्तमश्चैव ये चान्ये महदादयः ।
ये चान्ये बहवो भूताः सर्वे प्रकृतिसम्भवाः ।।१४।।

सैव देवी पराशक्तिर्महात्रिपुरसुन्दरी ।
सैव प्रसूयते विश्वं विश्वं सैव प्रपास्यति ।।१५।।

सैव संहरते विश्वं जगदेतच्चराचरम् ।
आधारः सर्वभूतानां सैव रोगार्तिहारिणी ।।१६।।

इच्छाज्ञानक्रियाशक्तिर्ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका ।
त्रिधा शक्तिस्वरूपेण सृष्टिस्थितिविनाशिनी ।।१७।।

सृज्यते ब्रह्मरूपेण विष्णुरूपेण पाल्यते ।
ह्रियते रुद्ररूपेण जगदेतच्चराचरम् ।।१८।।

यस्या योनौ जगत्सर्वमद्यापि परिवर्तते ।
यस्यां प्रलीयते चान्ते यस्यां च जायते पुनः ।।१९।।

यां समाराध्य त्रैलोक्ये सम्प्राप्तं यदमुत्तमम् ।
तस्या नाम सहस्रं तु कथयामि शृणुष्व तत् ।।२०।।

विनियोग :

ॐ अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीभगवान् दक्षिणामूर्तिऋर्षिः जगतीच्छन्दः समस्तप्रकटगुप्तसम्प्रदायकुलकौलोत्तीर्ण-निर्गर्भरहस्याचिन्त्यप्रभावती देवता ॐ बीजं माया शक्तिः कामराजेति कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थं जपे विनियोगः ।

अथ ध्यानं:

ॐ आधारे तरुणार्कबिम्बरुचिरं हेमप्रभं वाग्भवं
बीजं मन्मथमिन्द्रगोपसदृशं हृत्पङ्कजे संस्थिताम् ।
विष्णु ब्रह्मपदस्थशक्तिकलितं सोमप्रभाभासुरं ये
ध्यायन्ति पदत्रयं तव शिवे ते यान्ति सौख्यं पदम् ।।२१।।

कल्याणी कमला काली कराली कामरूपिणी ।
कामाख्या कामदा काम्या कामचारिणी ।।२२।।

कालरात्रिर्महारात्रिः कपाली कालरूपिणी ।
कौमारी करुणा मुक्तिः कलिकल्मषनाशिना ।।२३।।

कात्त्यायनी कराधारा कौमुदी कमलप्रिया ।
कीर्तिदा बुद्धिदा मेधा नीतिज्ञा नीतिवत्सला ।।२४।।

माहेश्वरी महामाया महातेजा महेश्वरी ।
महाजिह्वा महाघोरा महादंष्ट्रा महाभुजा ।।२५।।

महामोहान्धकारघ्नी महामोक्षप्रदायिनी ।
महादारिद्र्यनाशा च महाशत्रुविमर्द्दिनी ।।२६।।

महामाया महावीर्या महापातकनाशिनी ।
महामखा मन्त्रमयो मणिपूरकवासिनी ।।२७।।

मानसी मानदा मान्या मनश्चक्षू रणेचरा ।
गणमाता च गायत्री गणगन्धर्वसेविता ।।२८।।

गिरिजा गिरिशा साध्वी गिरिस्था गिरिवल्लभा ।
चण्डेश्वरी चण्डरूपा प्रचण्डा चण्डमालिनी ।।२९।।

चर्विका चर्चिकाकारा चण्डिका चारुरूपिणी ।
यज्ञेश्वरी यज्ञरूपा जपयज्ञपरायणा ।।३०।।

यज्ञमाता यज्ञभोक्त्री यज्ञेशी यज्ञसंभवा ।
सिद्धयज्ञक्रियासिद्धिर्यज्ञाङ्गी यज्ञरक्षिका ।।३१।।

यज्ञक्रिया यज्ञरूपा यज्ञाङ्गी यज्ञरक्षिका ।
यज्ञक्रिया च यज्ञा च यज्ञायज्ञ क्रियालया ॥३२॥
जालन्धरी जगन्माता जातवेदा जगत्प्रिया ।
जितेन्द्रिया जितक्रोधा जननी जन्मदायिनी ॥३३॥
गङ्गा गोदावरी चैव गोमती च शतद्रुका ।
घर्घरा वेदगर्भा च रेचिका समवासिनी ॥३४॥
सिन्धुर्मन्दाकिनी क्षिप्रा यमुना च सरस्वती ।
भद्रा रागविपाशा च गण्डकी विन्ध्यवासिनी ॥३५॥
नर्मदा सिन्धुकावेरी वेत्रवत्या सुकौशिकी ।
महेन्द्रतनया चैव अहल्या चर्मकावती ॥३६॥
अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका ।
पुरी द्वारावती तीर्था महाकिल्विषनाशिनी ॥३७॥
पद्मिनी पद्ममध्यस्था पद्मकिञ्जल्कवासिनी ।
पद्मवक्त्रा चकोराक्षी पद्मस्था पद्मसम्भवा ॥३८॥
ह्रींकारा कुण्डलाधारा हृत्पद्मस्था सुलोचना ।
श्रींकारी भूषणा लक्ष्मी: क्लींकारी क्लेशनाशिनी ॥३९॥
हरिवक्त्रोद्भवा शांता हरिवक्त्रकृतालया ।
हरिवक्त्रोद्भवा शांता हरिवक्षस्स्थलस्थिता ॥४०॥
वैष्णवी विष्णुरूपा च विष्णुमातृस्वरूपिणी ।
विष्णुमाया विशालाक्षी विशालनयनोज्ज्वला ॥४१॥
विश्वेश्वरी च विश्वात्मा विश्वेशी विश्वरूपिणी ।
विश्वेश्वरी शिवाराध्या शिवनाथा शिवप्रिया ॥४२॥
शिवमाता शिवाख्या च शिवदा शिवरूपिणी ।
भवेश्वरी भवाराध्या भवेशी भवनायिक ॥४३॥

भवमाता भवागम्या भवकण्टकनाशिनी ।
भवप्रिया भवानन्दा भवानी भवमोहिनी ।।४४।।
गायत्री चैव सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मरूपिणी ।
ब्रह्मेशी ब्रह्मदा ब्रह्मा ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ।।४५।।
दुर्गस्था दुर्गरूपा च दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी ।
सुगमा दुर्गमा दान्ता दयादोग्ध्री दुरापहा ।।४६।।
दुरितघ्नी दुराध्यक्षा दुरा दुष्कृतनाशिनी ।
पंचास्या पंचमी पूर्णा पूर्ण पीठनिवासिनी ।।४७।।
सत्त्वस्था सत्त्वरूपा च सत्त्वस्था सत्त्वसम्भवा ।
रजस्था च रजोरूपा रजोगुणसमुद्भवा ।।४८।।
तमस्था च तमोरूपा तामसी तामसप्रिया ।
तमोगुणसमुद्भूता सात्त्विकी राजसी कला ।।४९।।
काष्ठा मुहूर्ता निमिषा अनिमेषा ततः परम् ।
अर्द्धमासा च मासा च सम्वत्सरस्वरूपिणी ।।५०।।
योगस्था योगरूपा च कल्पस्था च कल्परूपिणी ।
नानारत्नविचित्राङ्गी नानाभरणमण्डिता ।।५१।।
विश्वात्मिका विश्वमाता विश्वपाशविनाशिनी ।
विश्वासकारिणी विश्वा विश्वशक्तिविचक्षणा ।।५२।।
यवा कुसुमसङ्काशा दाडिमीकुसुमोपमा ।
चतुरंगी चतुर्बाहुश्च तुराचारवासिनी ।।५३।।
सर्वेशी सर्वदा सर्वा सर्वदा सर्वदायिनी ।
माहेश्वरी च सर्वाद्या शर्वाणी सर्वमंगला ।।५४।।
नलिनी नन्दिनी नन्दा आनन्दानन्दवर्द्धिनी ।
व्यापिनी सर्वभूतेषु भवभारविनाशिनी ।।५५।।
सर्वश्रृंगारवेषाढ्या पाशांकुशकरोद्यता ।
सूर्यकोटिसहस्राभा चन्द्रकोटिनिभानना ।।५६।।

गणेशकोटिलावण्या विष्णुकोट्यरिमर्दिनी ।
दावाग्नीकोटिदलिनी रुद्रकोढ्यग्ररूपिणी ।।५७।।
समुद्रकोटिगम्भीरा वायुकोटिमहाबला ।
आकाशकोटिविस्तारा यमकोटिभयंकरी ।।५८।।

मेरुकोटि समुच्छाया गणकोटि समृदिद्धा ।
निष्कस्तोका निराधारा निर्गुणा गुणवर्जिता ।।५९।।
अशोका शोकरहिता तापत्रयविवर्जिता ।
वशिष्ठा विश्वजननी विश्वाख्या विश्ववर्दिनी ।।६०।।

चित्रा विचित्रचित्रांगी हेतुगर्भा कुलेश्वरी ।
इच्छाशक्तिर्ज्ञानशक्तिः क्रियाशक्तिः शुचिस्मिता ।।६१।।
शुचिः स्मृतिमयी सत्या श्रुतिरूपा श्रुतिप्रिया ।
महासत्त्वमयी सत्वा पंचतत्त्वोपरि स्तिथा ।।६२।।
पार्वती हिमवत्पुत्री पारस्था पाररूपिणी ।
जयंती भद्रकाली च अहल्या कुलनायिका ।।६३।।

भूतधात्री च भूतेशी भूतस्था भूतभावना ।
महाकुण्डलिनी शक्तिर्महाविभववर्द्धिनी ।।६४।।
हंसाक्षी हंसरूपा च हंसस्था हंसरूपिणी ।
सोमसूर्याग्निमध्यस्था मणिमण्डल वासिनी ।।६५।।
द्वादशारसरोजस्था सूर्यमण्डलवासिनी ।
अकलंका शशांकाभा षोडशारनिवासिनीं ।।६६।।

डाकिनी राकिनी चैव लाकिनी काकिनी तथा ।
शाकिनी हाकिनी चैव षट्चक्रेषु निवासिनी ।।६७।।
सृष्टिस्थितिविनाशाय सृष्टि स्थित्यंतकारिणी ।
श्रीकण्ठप्रियहृत्कण्ठा नन्दाख्या बिन्दुमालिनी ।।६८।।
चतुष्षष्टिकलाधारा देहदण्डसमाश्रिता ।
माया काली धृतिर्मेधा क्षुधा तुर्ष्टिर्महाद्युतिः ।।६९।।

हिंगुला मंगला सीता सुषुम्ना मध्यगामिनी ।
परघोरा करालाक्षी विजया जयदायिनी ॥७०॥
हृत्पद्मनिलया भीमा महाभैरवनादिनी ।
आकाशलिंगसम्भूता भुवनोद्यानवासिनी ॥७१॥
महत्सूक्ष्मा च कंकाली भीमरूपा महाबला ।
मेनकागर्भसम्भूता तप्तकाञ्चनसन्निभा ॥७२॥
अन्तरस्था कूटबीजा त्रिकूटाचलवासिनी ।
वर्णाख्या वर्णरहिता पञ्चाशद्वर्णभेदिनी ॥७३॥
विद्याधरी लोकधात्री अप्सरा अप्सरःप्रिया ।
दीक्षा दाक्षायणी दक्षा दक्षयज्ञविनाशिनी ॥७४॥
यशःपूर्णा यशोदा च यशोदागर्भसम्भवा ।
देवकी देवमाता च राधिका कृष्णवल्लभा ॥७५॥
अरुन्धती शचीन्द्राणी गान्धारी गन्धमालिनी ।
ध्यानातीता ध्यानगम्या ध्यानज्ञा ध्यानधारिणी ॥७६॥
लम्बोदरी च लम्बोष्टी जाम्बवन्ती जलोदरी ।
महोदरी मुक्तकेशी मुक्तकामार्थसिद्धिदा ॥७७॥
तपस्विनी तपोनिष्ठा सुपर्णा धर्मवासिनी ।
वाणचापधरा धीरा पाञ्चाली पञ्चमप्रिया ॥७८॥
गुह्यांगी च सुभीमा च गुह्यतत्त्वा निरंजना ।
अशरीरा शरीरस्था संसारार्णवतारिणी ॥७९॥
अमृता निष्कला भद्रा सकला कृष्णपिंगला ।
चक्रपिया च चक्राह्वा पंचचक्रादिदारिणी ॥८०॥
पद्मरागप्रतीकाशा निर्मलाकाशसन्निभा ।
अधःस्था ऊर्ध्वरूपा च ऊर्ध्वपद्मनिवासिनी ॥८१॥
कार्यकारणकर्तृत्वे शश्वद्रूपेषु संस्थिता ।
रसज्ञा रसमध्यस्था गन्धस्था गन्धरूपिणी ॥८२॥

परब्रह्मास्वरूपा च परब्रह्मनिवासिनी ।
शब्दब्रह्मस्वरूपा च शब्दस्था शब्दवर्जिता ।।८३।।
सिद्धिर्बुद्धिः पराबुद्धिः सन्दीप्तिर्मध्यसंस्थिता ।
स्वगुह्या शाम्भवी शक्तिस्तत्त्वस्था तत्त्वरूपिणी ।।८४।।
शाश्वती भूतमाता च महाभूताधिपप्रिया ।
शुचिप्रेता धर्मसिद्धिर्धर्मवृद्धिः पराजिता ।।८५।।
कामसंदीपिनी कामा सदाकौतूहलप्रिया ।
जटाजूटधरा मुक्ता सक्ष्मा शक्तिविभूषणा ।।८६।।
द्वीपिचर्मपरीधाना चीरवल्कलधारिणी ।
त्रिशूलडमरुधरा नरमालाविभूषणा ।।८७।।
अत्युग्ररूपिणी चोग्रा कल्पांतदहनोपमा ।
त्रैलोक्यसाधिनी संध्या सिद्धिसाधकवत्सला ।।८८।।
सर्वविद्यामयी सारा चासुराणां विनाशिनी ।
दमनी दामनी दान्ता दयादोग्ध्री दुरापहा ।।८९।।
अग्निजिह्वोपमा घोरा घोरघोरतरानना ।
नारायणो नारसिंही नृसिंहहृदये स्थिता ।।९०।।
योगेश्वरी योगरूपा योगमाता च योगिनी ।
खेचरी खचरी खेला निर्वाणपदसंश्रया ।।९१।।
नागिनी नागकन्या च सुवेशा नागनायिका ।
विषज्वालावतीदीप्ता कलाशतविभूषणा ।।९२।।
तीव्रवक्त्रा महावक्त्रा नागकोटित्वधारिणी ।
महासत्त्वा च धर्मज्ञा धर्मातिसुखदायिनी ।।९३।।
कृष्णमूर्द्धा महामूर्द्धा घोरमूर्द्धा बरानना ।
सर्वेन्द्रियमनोन्मत्ता सर्वेन्द्रिय मनोमयी ।।९४।।
सर्वसंग्रामजयदा सर्वप्रहरणोद्यता ।
सर्वपीडोपशमनी सर्वारिष्टनिवारिणी ।।९५।।

सर्वैश्वर्यसमुत्पन्ना सर्वग्रहविनाशिनी ।
मातङ्गी मत्तमातङ्गी मातङ्गीप्रियमण्डला ॥९६॥
अमृतोदधिमध्यस्था कटिसूत्रैरलंकृता ।
अमृतोदधिमध्यस्था प्रवाल वसनाम्बुजा ॥९७॥
मणिमण्डलमध्यस्था ईषत्प्रहसितानना ।
कुमुदा ललिता लोला लाक्षालोहितलोचना ॥९८॥
दिग्वासा देवदूती च देवदेवाधिदेवता ।
सिंहोपरि समारूढा हिमाचलनिवासिनी ॥९९॥
अट्टाट्टहासिनी घोरा घोरदैत्यविनाशिनी ।
अत्युग्ररक्तवस्त्राभा नागकेयूरमण्डिता ॥१००॥
मुक्ताहारलतोपेता तुङ्गपीनपयोधरा ।
रक्तोत्पलदलाकारा मदाघूर्णितलोचना ॥१०१॥
समस्त देवतामूर्तिः सुरारिक्षयकारिणी ।
खड्गिनी शलहस्ता च चक्रिणी चक्रमालिनी ॥१०२॥
शङ्खिनी चापिनी बाणा वज्रिणी वज्रदण्डिनी ।
आनन्दोदधिमध्यस्था कटिसूत्रैरलंकृता ॥१०३॥
नानाभरणदीप्ताङ्गी नानामणिविभूषिता ।
जगदानन्दसम्भूता चिन्तामणिगुणान्विता ॥१०४॥
त्रैलोक्यनमिता तुर्यंचिन्मयानन्दरूपिणी ।
त्रैलोक्यनन्दिनी देवी दुःखदुस्स्वप्ननाशिनी ॥१०५॥
घोराग्निदाहशमनी राजदेवार्थसाधिनी ।
महापराधराशिघ्नी महाचौरभयापहा ॥१०६॥
रागादिदोषरहिता जरामरणवर्जिता ।
चन्द्रमण्डलमध्यस्था पीयूषार्णवसम्भवा ॥१०७॥
सर्वदेवैः स्तुता देवी सर्वसिद्धैर्नमस्कृता ।
अचिन्त्यशक्तिरूपा च मणिमन्त्रमहौषधिः ॥१०८॥

अस्तिस्वस्तिमयी बाला मलयाचलवासिनी ।
धात्री विधात्री संहारी रतिज्ञा रतिदायिनी ॥१०९॥
रुद्राणी रुद्ररूपा च रुद्ररौद्रार्तिनाशिनी ।
सर्वज्ञा चैव धर्मज्ञा रसज्ञा दीनवत्सला ॥११०॥
अनाहता त्रिनयना निर्भारा निर्वृतिः परा ।
परा घोरा करालाक्षी सुमतिश्रैष्ठ्यदायिनी ॥१११॥
मन्त्रालिका मन्त्रगम्या मन्त्रमाला सुमन्त्रिणी ।
श्रद्धानन्दा महाभद्रा निर्द्वन्द्वा निर्गुणात्मिका ॥११२॥
धरिणी धारिणी पृथ्वी धराधात्री वसुन्धरा ।
मेरुमन्दरमध्यस्था स्थितिः शङ्करवल्लभा ॥११३॥
श्रीमती श्रीमयी श्रेष्ठा श्रीकरी भावभाविनी ।
श्रीदा श्रीमा श्रीनिवासा श्रीमती श्रीमताङ्गतिः ॥११४॥
उमा सारङ्गिणी कृष्णा कुटिला कुटिलालका ।
त्रिलोचना त्रिलोकात्मा पुण्यपुण्या प्रकीर्तिता ॥११५॥
अमृता सत्यसङ्कल्पा सा सत्या ग्रन्थिभेदिनी ।
परेशी परमा साध्या परा विद्या परात्परा ॥११६॥
सुन्दराङ्गी सुवर्णाभा सुरासुरनमस्कृता ।
प्रजा प्रजावती धन्या धनधान्यसमृद्धिदा ॥११७॥
ईशानी भुवनेशानी भवानी भुवनेश्वरी ।
अनंतानंतमहिता जगत्सारा जगद्भवा ॥११८॥
अचिन्त्यात्मा चिन्त्यशक्तिश्चिन्ता चिन्त्यस्वरूपिणी ।
ज्ञानगम्या ज्ञानमूर्तिर्ज्ञानिनी ज्ञानशालिनी ॥११९॥
असिता घोररूपा च सुधाधारा सुधावहा ।
भास्करी भास्वती भीतिर्भास्वदक्षानुशायिनी ॥१२०॥
अनसूया क्षमा लज्जा दुर्लभाभरणात्मिका ।
विश्वघ्नी विश्ववीरा च विश्वघ्नी विश्वसंस्थिता ॥१२१॥

शीलस्था शीलरूपा च शीला शीलप्रदायिनी ।
बोधिनी बोधकुशला रोधिनी बोधिनी तथा ॥१२२॥
विद्योतिनी विचित्रात्मा विद्युत्पटलसन्निभा ।
विश्वयोनिर्महायोनिः कर्मयोनिः प्रियात्मिका ॥१२३॥
रोहिणी रोगशमनी महारोगज्वरापहा ।
रसदा पुष्टिदा पुष्टिर्मानदा मानवप्रिया ॥१२४॥
कृष्णाङ्गवाहिनी कृष्णा कृष्णा कृष्णसहोदरी ।
शाम्भवी शम्भुरूपा च शम्भुस्था शम्भुसम्भवा ॥१२५॥
विश्वोदरी योगमाता योगमुद्राघ्नयोगिनी ।
वागीश्वरी योगनिद्रा योगिनी कोटिसेविता ॥१२६॥
कौलिका मन्दकन्या च शृङ्गारपीठवासिनी ।
क्षमङ्करी सर्वरूपा दिव्यरूपा दिगम्बरा ॥१२७॥
धूम्रवक्त्रा धूम्रनेत्रा धूम्रकेशी च धूसरा ।
पिनाकी रुद्रवेताली महावेतालरूपिणी ॥१२८॥
तपिनी तापिनी दीक्षा विष्णु विद्यात्मना श्रिता ।
मन्थरा जठरा ताम्रा अग्निजिह्वा भयापहा ॥१२९॥
पशुघ्नि पशुरूपा च पशुहा पशुवाहिनी ।
पिता माता च धीरा च पशुपाशविनाशिनी ॥१३०॥
चन्द्रप्रभा चन्द्ररेखा चन्द्रकान्तिविभूषणा ।
कुंकुमाङ्कितसर्वाङ्गी सुधासद्गुरुलोचना ॥१३१॥
शुक्लाम्बरधरा देवी वीणापुस्तकधारिणी ।
ऐरावतपद्मधरा श्वेतपद्मासनस्थिता ॥१३२॥
रक्ताम्बरधरा देवी रक्त पद्मविलोचना ।
दुस्तरा तारिणी तारा तरुणी ताररूपिणी ॥१३३॥
सुधाधारा च धर्मज्ञा धर्मसङ्गीपदेशिनी ।
भगेश्वरी भगाराध्या भगिनी भगनायिका ॥१३४॥

भगबिम्बा भगक्लिन्ना भगयोनिर्भगप्रदा ।
भगेश्वरी भगाराध्या भगिनी भगनायिका ॥१३५॥
भगेशी भगरूपा च भगगुह्या भगावहा ।
भगोदरी भगानन्दा भगस्था भगशालिनी ॥१३६॥

सर्वसंक्षोभिणी शक्तिस्सर्वविद्राविणी तथा ।
मालिनी माधवी माध्वी मधुरूपा महोत्कटा ॥१३७॥
भरुण्डचन्द्रिका ज्योत्स्ना विश्वचक्षुस्तम पहा ।
सुप्रसन्ना महादूती यमदूति भयङ्करी ॥१३८॥
उन्मादिनी महारूपा दिव्यरूपा सुरार्चिता ।
चैतन्यरूपिणी नित्या क्लिन्ना काममदोद्धता ॥१३९॥

मदिरानन्दकैवल्या मदिराक्षी मदालसा ।
सिद्धेश्वरी सिद्धविद्या सिद्धाद्या सिद्धसम्भवा ॥१४०॥
सिद्धर्द्धिः सिद्धमाता च सिद्धिस्सर्वार्थसिद्धिदा ।
मनोमयी गुणातीता परज्योतिःस्वरूपिणी ॥१४१॥
परेशी परगा पारापरा सिद्धिः परा गतिः ।
विमला मोहिनी चाद्या मधुपानपरायणा ॥१४२॥
वेदवेदाङ्गजननी सर्वशास्त्रविशारदा ।
सर्वदेवमयी विद्या सर्वशास्त्रमयी तथा ॥१४३॥

सर्वज्ञानमयी देवी सर्वधर्ममयीश्वरी ।
सर्वयज्ञमयी यज्ञा सर्वमन्त्राधिकारिणी ॥१४४॥
सर्वसम्पत्प्रतिष्ठात्री सर्वविद्राविणी परा ।
सर्वसंक्षोभिणी देवी सर्वमङ्गलकारिणी ॥१४५॥
त्रैलोक्याकर्षिणी देवी सर्वाह्लादनकारिणी ।
सर्वसंमोहिनी देवी सर्वस्तम्भनकारिणी ॥१४६॥
त्रैलोक्यजृम्भिणी देवी तथा सर्ववशङ्करी ।
त्रैलोक्यरंजिनी देवी सर्वसम्पत्तिदायिनी ॥१४७॥

सर्वमन्त्रमयी देवी सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करी ।
सर्वसम्पत्प्रदायिनी ॥१४८॥

सर्वप्रियकरी देवी सर्वं मङ्गलकारिणी ।
सर्वकामप्रदा देवी सर्वदुःखविमोचिनी ॥१४९॥

सर्वमृत्युप्रशमनी सर्वविघ्नविनाशिनी ।
सर्वाङ्ग सुन्दरी माता सर्वसौभाग्यदायिनी ॥१५०॥

सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च सर्वैश्वर्यफलप्रदा ।
सर्वज्ञानमयी देवी सर्वव्याधिविनाशिनी ॥१५१॥

सर्वाधारस्वरूपा च सर्वपापहरा तथा ।
सर्वानन्दमयी देवी सर्वेक्षायाः स्वरूपिणी ॥१५२॥

सर्वलक्ष्मीमयी विद्या सर्वेप्सितफलप्रदा ।
सवारिष्टप्रशमनी परमानन्ददायिनी ॥१५३॥

त्रिकोणनिलया त्रिस्था त्रिमात्रा त्रितनुस्थिता ।
त्रिवेणी त्रिपथा त्रिस्था त्रिमूर्तिस्त्रिपुरेश्वरी ॥१५४॥

त्रिधाम्नी त्रिदशाध्यक्षा त्रिवित् त्रिपुरवासिनी ।
त्रयीविद्या च त्रिशिरास्त्रैलोक्या च त्रिपुष्करा ॥१५५॥

त्रिकोटरस्था त्रिविधा त्रिपुरा त्रिपुरात्मिका ।
त्रिपुरश्रीस्त्रिजननी त्रिपुरा त्रिपुरसुन्दरी ॥१५६॥

फलश्रुति :

इदं त्रिपुरसुन्दर्याः स्तोत्रं नाम सहस्रकम् ।
गुह्याद्गुह्यतरं पुत्र तव प्रीत्यं प्रकीर्तितम् ॥१५७॥

गोपनीयं प्रयत्नेन पठनीयं प्रयत्नतः ।
नातः परतरं पुण्यं नातः परतरं तपः ॥१५८॥

नातः परतरं स्तोत्रं नातः परतरा गतिः ।
स्तोत्रं सहस्र नामाख्यं मम वक्त्राद्विनिर्गतम् ॥१५९॥

यः पठेत्प्रयतो भक्त्या शृणुयाद्वा समाहितः ।
मोक्षार्थी लभते मोक्षं स्वर्गार्थी स्वर्गमाप्नुयात् ॥१६०॥
कामांश्च प्राप्नुयात्कामी धनार्थी च लभेद्धनम् ।
विद्यार्थी लभते विद्यां यशोर्थी लभते यशः ॥१६१॥
कन्यार्थी लभते कन्यां सुतार्थी लभते सुतम् ।
गुर्विणी जनयेत्पुत्रं कन्या विन्दति सत्पतिम् ॥१६२॥
मूर्खोपि लभते शास्त्रं हीनोऽपि लभते गतिम् ।
संक्रांत्यां वार्क्यामावास्यामष्टम्योश्च विशेषतः ॥१६३॥
पौर्णमास्यां चतुर्दश्यां नवम्यां भौमवासरे ।
पठेद्वा पाठयेद्वापि शृणुयाद्वा समाहितः ॥१६४॥
स मुक्तस्सर्वपापेभ्यः कामेश्वरसमो भवेत् ।
लक्ष्मीवान्धनवांश्चैव वल्लभस्सर्वयोषिताम् ॥१६५॥
तस्य वश्यं भवेदाशु त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
रुद्रं दृष्ट्वा यथा देवा विष्णुं दृष्ट्वा च दानवाः ॥१६६॥
यथाहिर्गरुडं दृष्ट्वा सिंहं दृष्ट्वा यथा गजाः ।
कीटवत्प्रपलायन्ते तस्य वक्त्रावलोकनात् ॥१६७॥
अग्निचौरभयं तस्य कदाचिन्नैव संभवेत् ।
पाप्मानो विविधाः शांति मेरुपर्वतसन्निभाः ॥१६८॥
यस्मात्तच्छृणुयाद्विघ्नांस्तृणं वह्निहुतं ।
यथा एकदा पठनादेव सर्वपापक्षयो भवेत् ॥१६९॥
दशधा पठनादेव वाचां सिद्धः प्रजायते ।
शतधा पठनाद्वापि खेचरो जायते नरः ॥१७०॥
सहस्रदशसंख्यं वा यः पठेद्भक्तिमानसः ।
मातास्य जगतां धात्री प्रत्यक्षा भवति ध्रुवम् ॥१७१॥
लक्षं पूर्णं यथा पुत्र स्तोत्रराजं पठेत्सुधीः ।
भवपाशविनिर्मुक्तो मम तुल्यो न संशयः ॥१७२॥

सर्वतीर्थेषु यत्पुण्यं सकृज्जप्त्वा लभेन्नरः।
सर्ववेदेषु यत्प्रोक्तं तत्फलं परिकीर्तितम् ॥१७३॥
भूत्वा च वलवान् पुत्र धनवान् सर्वसम्पदः।
देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ॥१७४॥
स यास्यति न संदेहः स्तवराजस्य कीर्तनात् ॥१७५॥

इति श्रीवामकेश्वरतंत्रे हरकुमारसंवादे महात्रिपुरसुन्दर्याः
षोडश्याः सहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्।

● ●

शोडशीहृदय

कैलासे करुणाक्रांता परोपकृतिमानसा।
पप्रच्छ करुणासिन्धु सुप्रसन्नं महेश्वरम् ॥१॥

कैलाश के शिखर पर प्रसन्न वैठे हुए करुणासिन्धु शिव जी से परोपकार की भावना से करुणाद्र पार्वती जी ने पूछा।

श्रीपार्वत्युवाच :

आगामिनि कलौ ब्रह्मन् धर्मकर्मविवर्जिताः।
भविष्यन्ति जनास्तेषां कथं श्रेयो भविष्यति ॥२॥

श्रीशिव उवाच :

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि तव स्नेहान्महेश्वरि।
दुर्लभं त्रिषु लोकेषु सुन्दरीहृदयस्तवम् ॥३॥
ये नरा दुःखसंतप्ता दारिद्र्यहतमानसाः।
अस्यैव पाठमात्रेण तेषां श्रेयो भविष्यति ॥४॥

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीमहाषोडशीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य आनन्दभैरवऋषिर्देवी गायत्रीच्छंदः श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ आनन्दभैरवऋषये नमः शिरसि ॥१॥
देवीगायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे ॥२॥
श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै नमः हृदये ॥३॥
ऐं बीजाय नमः नाभौ ॥४॥
सौः शक्तये नमः स्वाधिष्ठाने ॥५॥
क्लीं कीलकाय नमः मूलाधारे ॥६॥
विनियोगाय नमः पादयोः ॥७॥

करन्यासः

ऐं ह्लीं क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥
क्लीं श्रीं सौः ऐं तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥
सौः ॐ ह्लीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥
ऐं कएलह्लीं अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥
क्लीं सकल कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥
सौः सौः ऐं क्लीं ह्लीं श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥
इतिकरन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यासः

ऐं ह्लीं क्लीं हृदयाय नमः ॥१॥
क्लीं श्रीं सौः ऐं शिरसे स्वाहा ॥२॥
सौः ॐ ह्लीं श्रीं शिखायै वषट् ॥३॥
ऐं कएल ह्लीं हसकल ह्लीं कवचाय हुं ॥४॥
क्लीं सकल नेत्रत्राय वौषट् ॥५॥
सौः सौः ऐं क्लीं ह्लीं श्रीं अस्त्राय फट् ॥६॥
इति हृदयादिषडंगन्यासः ।

अथ ध्यानं

बालव्यक्तविभाकरामितनिभां भव्यप्रदां
भारतीभीषत्फुल्लामुखाम्बुजस्मितकरैराशाभवान्धापहाम् ।
पाशं साभयमंकुश च वरदं संबिभ्रतीं भूतिदां
भ्राजंतीं चतुरंबुजाकृतकरैर्भक्त्या भजे षोडशीम् ।।५।।
सुन्दरी सकलकल्मषापहा कोटिकंजप्रियकाम्यकांतिका ।
कोटिकल्पकृतपुण्यकर्मणा पूजनीयपदपुण्यपुष्करा ।।६।।
शर्वरीशसमसुन्दरानना श्रींशशक्तिसुकृताश्रयाश्रिता ।
सज्जनानुशरणीयसत्पदा संकटे सुरगणैः सुवन्दिता ।।७।।
या सुरासुररणे जवान्विता आजघान जगदम्बिकाऽजिता ।
तां भजामि जगतां जनिं जयां युद्धयुक्तदितिजान्सुदुर्जयान् ।।८।।
योगिनां हृदयसंगतां शिवां योगयुक्तमनसां यतात्मनाम् ।
जाग्रतीं जगति यत्नो द्विजा यां जपंति हृदि ता भजाम्यहम् ।।९।।
कल्पकास्तु कलयन्ति कालिकां यत्कला कलिजनोपकारिका ।
कौलिकालिकलितांघ्रिकञ्जकां तां भजामि कलिकल्मषापहाम् ।।१०।।
बालार्कानन्तशोर्चिर्निजतनुकिरणैर्दीपयन्तीं
दिगन्तान् दीप्तैर्देदीप्तमानां दनुजदलवनानल्पदावानलाभाम् ।
दान्तोदन्तोग्रचित्तां दलितदितिसुतां दर्शनीयान्दुरं तान्देवीं
दीनार्द्रचित्तां हृदि मुदितमनाः षोडशीं संस्मरामि ।।११।।
धीरान्धन्यान्धरित्रीधवविधूतशिरो धूतधूल्यब्जपादां
घृष्टान्धाराधराधो विनिधूतचपलाचारुचन्दत्प्रभाभाम् ।
धर्म्यान्धूतोपहारान्धरणिसुरधवोद्धारिणीं ध्येयरूपां
धीमद्धन्यातिधन्यान्धनदधनवृतां सुन्दरीं चिन्तयामि ।।१२।।
जयतु जयतु जल्पा योगिनी योगयुक्ता जयतु
जयतु सौम्या सुन्दरी सुन्दरास्या ।

जयतु जयतु पद्मा पद्मिनी केशवस्य जयतु
जयतु काली क:लिनी कालकांता ।।१३।।

जयतु जयतु खर्वा षोडशी वेदहस्ता जयतु
जयतु धात्री धर्मिणी - धातृशांतिः ।

जयतु जयतु वाणी ब्रह्मणो ब्रह्मवन्द्या जयतु
जयतु दुर्गा दारिणी देवशत्रोः ।।१४।।

देवि त्वं सृष्टिकाले कमनभवभृता राजसी रक्तरूपा
रक्षाकाले त्वमम्बा हरिहृदयधृता सात्विकी श्वेतरूपा ।

भूरिक्रोधा भवान्ते भवभवनगता तामसी कृष्ण
रूपा एताश्चान्यास्त्वमेव क्षितमनुजमला सुन्दरी केवलाद्या ।।१५।।

सुमलशमनमेतद्देवि गोप्यं गुणज्ञे
ग्रहणमननयोग्यं षोडशीयंखलघ्नम् ।

सुरतरुसमशीलं संप्रदं पाठकानां प्रभवति
हृदयाख्यं स्तोत्रमत्यन्तमान्यम् ।।१६।।

इदं त्रिपुरसुन्दर्याः षोडश्याः परमाद्भुतम् ।
यः श्रृणोति नरः स्तोत्रं स सदा सुखमश्नुते ।।१७।।

न शूद्राय प्रदातव्यं शठाय समलात्मने ।
देयं दान्ताय भक्ताय ब्राह्मणाय विशेषतः ।।१८।।

इति श्रीत्रिपुरसुन्दरीतंत्रे शोडशीहृदयस्तोत्रं समाप्तम् ।

इति श्री मंत्रमहार्णवे द्वितीयखण्डे श्रीत्रिपुरसुन्दरी
षोडश्यास्तन्त्रे षष्ठस्तरंगः ।।६।।

श्री गणेशाय नमः

(१) श्री बाला कवचम्

श्री देव्युवाच

देवदेव महादेव भक्तानां प्रीतिवर्द्धनम् ।
सूचितं यन्मया देव्याः कवचं कथयस्व मे ॥१॥

श्री महादेव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं देवदुर्लभम् ।
अप्रकाश्यं परं गुह्यं साधकाभीष्टसिद्धये ॥२॥

कवचस्य ऋषिर्देवि दक्षिणामूर्तिरव्ययः ।
छन्दः पंक्तिः समुद्दिष्टो बालात्रिपुरसुन्दरी ॥३॥

धर्मार्थकाममोक्षाणां विनियोगस्तु साधने ।
वाग्भवं कामराजश्च शक्तिबीजमुदाहृतम् ॥४॥

वाग्भवं पातु शिरसि कामराजं सदा हृदि ।
शक्तिबीजं सदा पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः ॥५॥

ऐं क्लीं सौः वदने पातु बाला सर्वार्थसिद्धये ।
जिह्वां पातु महाहंसी स्कन्धदेशे तु भैरवी ॥६॥

सुन्दरी नाभिदेशं तु शिरसि कमला सदा ।
भ्रुवौ नासाद्वयं पातु महात्रिपुरसुन्दरी ॥७॥

ललाटे शुभगा पातु कण्ठदेशे तु मालिनी ।
वाग्भवं पातु हृदये उदरे भगसर्पिणी ॥८॥

भगमालिनी नाभिदेशे लिङ्गे पातु मनोभवा ।
गुह्ये पातु महादेवी राजराजेश्वरी शिवा ॥९॥

चैतन्यरूपिणी पातु पादयोर्जगदम्बिका ।
नारायणी सर्वगात्रे सर्वकाले शिवङ्करी ॥१०॥

ब्रह्माणी पातु मां पूर्वेदक्षिणे पातु वैष्णवी ।
पश्चिमे पातु वाराही उत्तरे तु महेश्वरी ॥११॥
आग्नेयां पातु कौमारी महालक्ष्मीस्तु नैऋते ।
वायव्यां पातु चामुण्डा इन्द्राणी पातु ईशके ॥१२॥
आकाशे च महामाया पृथिव्यां सर्वमङ्गला ।
आत्मानं पातु वरदा सर्वाङ्गे भुवनेश्वरी ॥१३॥
यदीदं कवचं देव्याः त्रैलोक्ये चापि दुर्लभम् ।
यः पठेत्प्रातरुत्थाय शुचिः प्रयतमानसः ॥१४॥
न रोगो नापदो व्याधिर्भयं क्वापि न जायते ।
न च मूर्खभयं तस्य पातकानां भयं कदा ॥१५॥
न दारिद्र्यवशं गच्छेत् मृत्युनाशं यथारयः ।
गच्छेच्छिवपुरं देवि सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥१६॥
यदीदं कवचं ज्ञात्वा श्रीबालां यो जपेत्प्रिये ।
स प्राप्नोति फलं सर्वं शिवसायुज्यसम्भवम् ॥१७॥

॥ इति श्रीसिद्धयामले श्री बालाकवचं सम्पूर्णं शुभमस्तु ॥

(२) श्री बाला त्रैलोक्यविजय कवचम्

श्रीभैरव उवाच

अधुना ते प्रवक्ष्यामि कवचं मन्त्रविग्रहं ।
त्रैलोक्यविजयं नाम रहस्यं देवदुर्लभं ॥१॥

श्री देव्युवाच

या देवी त्र्यक्षरी बाला चित्कला श्री सरस्वती ।
महाविद्येश्वरी नित्या महात्रिपुरसुन्दरी ॥२॥
तस्याः कवचमीशान मन्त्रगर्भं परात्मकं ।
त्रैलोक्यविजयं नाम श्रोतुमिच्छामि तत्वतः ॥३॥

श्रीभैरव उवाच

देवदेवि महादेवि बालाकवचमुत्तमं ।
मन्त्रगर्भं परं तत्त्व लक्ष्मीसंवर्धनं महत् ।।४।।

सर्वस्वं मे रहस्यं मे गुह्यं त्रिदशगोपितं ।
प्रवक्षयामि तव स्नेहान्नाख्येयं यस्य कस्यचित् ।।५।।

यं धृत्वा कवचं देव्या मातृकाक्षरमण्डितम् ।
नारायणोऽपि दैत्येन्द्रान् जघान रणमण्डले ।।६।।

त्र्यम्बकं कामदेवोऽपि बलं शक्रो जघान हि ।
कुमारस्तारकं दैत्यमन्धकं चन्द्रशेखरः ।।७।।

अवधीद्रावणं रामो वातापीं कुम्भसम्भवः ।
कवचस्यास्य देवेशि धारणत्पठनादपि ।।८।।

सृष्टा प्रजापतिर्ब्रह्मा विष्णुस्त्रैलोक्यपालकः ।
शिवोऽणिमादिसिद्धीशो मघवा देवनायकः ।।९।।

सूर्यस्तेजोनिधिर्देवि चन्द्रस्ताराधिपः स्थितः ।
वह्निर्महोर्मिनिलयो वरुणोऽपि दिशां पतिः ।।१०।।

समीरो बलवांल्लोके यमो धर्मनिधिः स्मृतः ।
कुवेरो निधिनाथोऽस्ति नैर्ऋतिः सर्वराक्षसां ।।११।।

ईश्वरः शङ्करो रुद्रो देवि रत्नाकरोऽम्बुधिः ।
अस्य स्मरणमात्रेण कौलिकस्य कुलेश्वरि ।।१२।।

आयुः कीर्तिप्रभा लक्ष्मीर्वृद्धिर्भवति संततं ।
कवचं सुभगं देवि बालायाः कौलिकेश्वरि ।।१३।।

ऋषिः स्याद्दक्षिणामूर्तिः पंक्तिश्छन्दरुदाहृतः ।
बाला सरस्वती देवि देवता त्र्यक्षरी स्मृता ।।१४।।

बीजं तु वाग्भवं प्रोक्तं शक्तिः शक्तिरुदाहृता ।
कीलकं कामराजं तु फडाशा बंधनं तथा ।।१५।।

भोगापवर्गसिद्ध्यर्थं विनियोगः प्रकीर्तितः ।
ऐं बीजं मे शिरः पातु ल्कीं बीजं भृकुटी मम ॥१६॥
सौः भालं पातु मे बाला ऐं क्लीं सौः नयने मम ।
अं आं इं ईं श्रुतौ पातु बाला पञ्चाक्षरी मम ॥१७॥
उं ऊं ऋं ॠं सदा पातु मम नासापुटद्वयं ।
लृं लॄं एं ऐं पातु गण्डौ ऐं क्लीं सौः त्रिपुरांबिका ॥१८॥
ओं औं अं अः मुखं पातु सौः क्लीं ऐं त्रिपुरेश्वरी ।
कं खं गं घं ङं मे पातु सौः क्लीं ऐं भगमालिनी ॥१६॥
चं छं जं झं ञं मे पातु बाहौ सौः सर्वसिद्धिदा ।
टं ठं डं ढं णं मे पातु वक्षौ क्लीं वीरनायिका ॥२०॥
तं थं दं धं नं मे पातु ऐं कुक्षौ कुलनायिका ।
पं फं बं भं मं मे पातु पार्श्वौ परमसुन्दरी ॥२१॥
यं रं लं वं पातु पृष्ठं सौः ल्कीं ऐं विश्वमातृका ।
शं षं सं हं पातु नाभि सौः सौः त्रिगुणात्मिका ॥२२॥
ळं क्षं कटिं सदा पातु क्लीं क्लीं क्लीं मातृकेश्वरी ।
ऐं ऐं ऐं पातु लिङ्गं मे भर्गलिगामृतेश्वरी ॥२३॥
ऐं क्लीं गुह्यं सदा पातु भर्गलिगस्वरूपिणी ।
सौः क्लीं उरू सदा पातु वेदमाताष्टसिद्धिदा ॥२४॥
सौः ऐं जानु सदा पातु महामुद्राभिमुद्रिता ।
सौः ऐं क्लीं पातु मे जंघौ बाला त्रिभुवनेश्वरी ॥२५॥
ऐं ऐं सौः सौः पातु गुल्फौ त्रैलोक्यविजयप्रदा ।
ऐं ऐं क्लीं क्लीं पातु पादौ बाला त्र्यक्षररूपिणी ॥२६॥
शिरसः पादपर्यन्तं सर्वावयवसंयुतम् ।
पायात्पादादि शीर्ष्यन्तं ऐं क्लीं सौः सकलं वपुः ॥२७॥
ब्राह्मी मां पूर्वतः पातु वह्नौ नारायणी तथा ।
माहेश्वरी दक्षिणेऽव्यान्नैरृत्ये चण्डिकावतु ॥२८॥

पश्चिमे पातु कौमारी वायव्ये चापराजिता ।
वाराही तूत्तरे पायादीशान्यां नारसिंहिका ॥२९॥
प्रभाते भैरवी पातु मध्याह्ने योगिनी क्रमात् ।
सायं मां वटुकः पायादर्द्धरात्रे शिवोऽवतु ॥३०॥
निशान्ते सर्वगः पातु सर्वदश्चक्रनायकः ।
रणे राजकुले द्यूते विवादे शत्रुसंकटे ॥३१॥
सर्वत्र सर्वतः पातु ऐं क्लीं सौः वीजभूषिता ।
इतीदं कवचं दिव्यं बालायाः सारमुत्तमम् ॥३२॥
मन्त्रविद्यामयं तत्त्वं मातृकाक्षरभूषितम् ।
ब्रह्मविद्यामयं ब्रह्मसाधनं मंत्रसाधनम् ॥३३॥
यः पठेत्सततं भक्त्या धारयेद्वा महेश्वरि ।
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्यात् साधकस्य न संशयः ॥३४॥
रवौ भूर्जे लिखित्वादौ स्वयंभूकुसुमैः परम् ।
वन्ध्यापि काकवन्ध्यापि मृतवत्सापि पार्वति ॥३५॥
लभेत्पुत्रो महावीरो मार्कण्डेयसमायुषः ।
वित्तं दरिद्रो लभते मतिमान यश स्त्रियम् ॥३६॥
ग एतद्धारयेद्धर्मे संग्रामे स रिपून् जयेत् ।
जित्वा वैरिकुलं घोरं कल्याणं गृहमाविशेत् ॥३७॥
बहुनोक्तेन किं देवि धारयेन्मूर्ध्नि संततम् ।
इहलोके धनारोग्यं परमायुर्यशः श्रियम् ॥३८॥
प्राप्य भक्त्या नरो भोगानन्ते याति परं पदं ।
इदं रहस्यं परमं सर्वतत्त्वेषु ह्युत्तमम् ॥३९॥
गुह्याद्गुह्यमिमं नित्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥४०॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले बालारहस्ये श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी
त्रैलोक्यविजय नाम कवचं सम्पूर्णम् ॥

(३) श्री बाला दुःस्वप्ननाशक कवचं

ॐ अस्य श्री बाला परमेश्वरी कवचमन्त्रस्य ह्लौं महादेव ऋषिः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लः पङ्क्तिश्छन्दः ऐं क्लीं सौं श्री बाला परमेश्वरी देवता मम चतुर्वर्गफलप्राप्त्यर्थं सर्वविघ्ननिवारणार्थे जपे विनियोगः ।

मूलेन षडङ्गन्यासः । ध्यानम्—

बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पाशांकुशवराभीति धारयन्तीं शिवां भजे ।।

प्राणायामं च विधाय । ॐ नमः—

पूर्वस्यां भैरवी पातु बाला मां पातु दक्षिणे ।
मालिनी पश्चिमे पातु वासिनी चोत्तरेऽवतु ।।

ऊर्ध्वं पातु महादेवी श्री बाला त्रिपुरेश्वरी ।
अधस्तात् पातु देवेशी पातालतलवासिनी ।।

आधारे वाग्भवं पातु कामराजस्तथा हृदि ।
महाविद्या भगवती पातु मां परमेश्वरी ।।

ऐं लं ललाटे मां पायात् ह्लौं ह्लीं हंसश्च नेत्रयोः ।
नासिका कर्णयोः पातु ह्लीं ह्लौं तु चिबुके तथा ।।

सौः पातु च गले मे हृदि ह्लीं ह्लः नाभिदेशके ।
सौः क्लीं श्रीं गुह्यदेशे तु ऐं ह्लीं पातु च पादयोः ।।

ह्लीं मां सर्वतः पातु सौः पायात् पदसन्धिषु ।
जले स्थले तथा कोशे देवराजगृहे तथा ।।

क्षें क्षें मां त्वरिता पातु मां चक्री सौः मनोभवा ।
हंसौः पायात् महादेवी परं निष्कलदेवता ।।

विजया मङ्गला दूती कल्पा मां भगमालिनी ।
ज्वालामालिनी नित्या सर्वदा पातु मां शिवा ।।

इतीदं कवचं देवि देवानामपि दुर्लभम् ।
तव प्रीत्या समाख्यातं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥
इदं रहस्यं परमं गुह्याद् गुह्यतरं प्रिये ।
धन्यं प्रशस्यमायुष्यं भोगमोक्षप्रदं शिवम् ॥
दुःस्वप्ननाशनं पुंसां नरनारीवशं करम् ।
आकर्षणकरं देवि स्तम्भमोहकरं शिवे ॥
इदं कवचमज्ञात्वा श्री बाला त्रिपुरेश्वरीम् ।
यो जपेत् योगिनीवृन्दैः स भक्ष्यो नात्र संशयः ॥
न तस्य मन्त्रसिद्धिःस्यात् कदाचिदपि शङ्करि ।
इह लोके स दारिद्र्यो दुःखरोगभयानि च ॥
निश्चयंनरकं गत्वा पशुयोनिमवाप्नुयात् ।
तस्मादेतत्सदाभ्यासादधिकारी भवेत्ततः ॥
मत्पूर्वं निर्मितमिदं कवचं स पुण्यं ।
पूजाविधेश्च पुरतो यदि वापरेण ॥
रात्रौ च भोग ललितानि सुखानि भुक्त्वा ।
देव्याः पदं व्रजति तत्पुनरन्तकाले ॥

॥ श्री बाला दुःस्वप्ननाशक कवचं समाप्तम् ॥

●●

(४) श्री बालोपनिषद्

ऐं नमः श्रीबालायै । श्रीबालोपनिषदं व्याख्यास्यामः शृणु प्रिये चक्रचक्रस्था, महात्मा, महागुह्या, गुह्यतरा, श्रेष्ठातिश्रेष्ठा, भव्या, भव्यतरा, त्रिगुणगा, गुणातीता, गुणस्वरूपा, गुंकारमध्यस्था, रेचकपूरककुम्भस्वरूपा, अष्टाङ्गरूपा चतुर्दशभुवनमालिनी, चतुर्दश-भुवनेश्वरी चत्वारिवेदवेदाङ्गपारगा, सांख्यासांख्यस्वरूपा, शान्ता,

शाक्तप्रिया, शाक्तधर्मपरायणा, सर्वभद्रा विभद्रा, सुभद्रा, भद्रभद्रान्तर्गता, वीरभद्रावतारिणी, शून्या शून्यतरा शून्यप्रभवा शून्यालया शून्यज्ञानप्रदा शून्यातीता शूलहस्ता महासुन्दरी सुरासुरारिविध्वंसिनी शूकरानना सुभगा शुभदा सुशुभा शस्त्रास्त्रधारिणी पराप्रासादवामाङ्गा परमेश्वरी परापरा परमात्मा पापघ्ना पञ्चेन्द्रियालया परब्रह्मावतारा पद्महस्ता पाञ्चजन्या पुण्डरीकाक्षा पशुपाशहारिणी पशूपपूज्या पाखण्डध्वंसिनी पवनेशी पवनस्वरूपा पद्यापद्यमयी पद्यज्ञानप्रदात्री पुस्तहस्ता पक्वबिम्बफलप्रभा प्रेतासना प्रजापाली प्रपञ्चहारिणी पृथिवीरूपा पीताम्बरा पिशाचगणसेविता पितृवनस्था हंसः स्वरूपा परमहंसी ऐंकारबीजा वाग्भवस्था वाग्भववीजाद्योनिनी वाग्भवेशी वाग्भवबीजमालिनी यः एवं वेद स वेदवित् । बालोपनिषदं यो पठति यो शृणोति तस्याघसर्वं नश्यति चतुर्वर्गफलं प्राप्नोति लयज्ञानं भवति ज्योतिर्मये प्रलीयति षट्कर्मविद्या सिद्ध्यति मनोरथं पूरयति सर्वारिष्टं नाशयति धनं एधति आयुर्वृद्धिर्भवति निर्वाणपदं गच्छति महाजनत्वं प्राप्नोति सर्वशास्त्रं ज्ञायति बहुतरसिद्धिं नयति डाकिन्यादिसर्वं पलायति ॐकारे प्रमीलति ।

॥ इत्यथर्ववेदोक्तं वालोपनिषत्समाप्तम् ॥

(५) श्री बाला पंचांगम्

श्रीभैरव उवाच—

अधुना देवि वक्ष्यामि रहस्यं स्तोत्ररूपकम् ।
येन साधक ईशानि साक्षात् श्रीभैरवायते ॥१॥

अंगं त्रिपुरसुन्दर्याः पञ्चमाख्यं महेश्वरि ।
पञ्चमी - रूपमानन्द - रूपमानन्द - वर्द्धनम् ॥२॥

तत्त्व श्रीत्रिपुरादेव्याः श्यामायाश्च रहस्यकम् ।
स्तोत्रराज - परादेव्याः परमानन्दकारणम् ॥३॥
स्तोत्रस्याऽस्य महादेवि ऋषिः प्रोक्तः सदाशिवः ।
पंक्तिश्छन्दः समाख्यातं देवता त्रिपुरा स्मृता ॥४॥
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ।

ध्यानम्—

सूर्यकोटिसमानाभां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
रक्तपद्मसमासीनां रक्तवस्त्राद्यलंकृताम् ॥
पुस्तकं चाक्षमालां च वरं चाभयमेव च ।
दधतीं च हृदम्भोजे श्रीबालात्रिपुरां भजे ॥

वाग्भवं भवमहार्णवप्रोक्तम् यो जपेन्मनसि मानवतीनाम् ।
कामकेलिषु भवेत्स साधकः कामदेव इव वैरिबाधकः ॥१॥
मदनं मदनाक्षरं जपेद् यो वदनाश्छादनवद्धमौनमुद्रः ।
स भवेद्भवसागरैकपोतो भवरूपो भुवनत्रयेश्वरः स्यात् ॥२॥
शक्तिबीजमनघं सुधाकरं साधको यदि जपेद् हृदि भक्त्या ।
तस्य देववनिताचरणाब्जौ रञ्जयन्ति मुकुटैर्मणियुक्तैः ॥३॥
बिन्दु त्रिकोणवसुनागदलाढ्य वेदगेहान्विते परमयन्त्रवरे निषण्णाम् ।
ध्यायन्ति येपरिकरेण समन्वितां त्वां
सम्प्राप्नुवन्ति तव देवि परं पदं तत् ॥४॥

इतीदं परमं गुह्यमङ्गभूतं हि पंचमम् ।
देवि त्रिपुरसुन्दर्याः श्रीबालायाः स्तवोत्तमम् ॥५॥
रहस्यमेतदखिलं न कस्य कथितं मया ।
तव भक्त्या मया ख्यातं न प्रकाश्यं महेश्वरि ॥६॥
इदं पंचाङ्गमनिशं बालायाः सारमुत्तमम् ।
गोप्यं गुह्यतरं गुह्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥७॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले श्रीबालापञ्चाङ्ग स्तोत्रम् ॥

(६) श्री बाला पञ्चरत्नस्तोत्रम्

आई आनन्दवल्ली अमृतकरतले आदिशक्तिः पराई। माई मायात्मरूपी स्फटिकमणिमयी मामतङ्गी षडंगी ।। ज्ञानी ज्ञानात्मरूपी दलितपरिमले नाद ओंकारमूर्त्तिभोगी योगासनस्था भुवनवशकरी सुंदरी ऐं नमस्ते ।।१।।

मालामन्त्री कटाक्षी मम हृदयसुखी मृत्युभाव प्रचण्डी । व्याला यज्ञोपवीता विकटकटितटा वीरशक्तिः प्रसन्ना ।। बाला बालेन्दुमौलिर्मंद-गजगमना साक्षिका स्वस्तिमन्त्री । काली कंकालरूपी कटिकटिकटिह्लीं-कारिणी क्लीं नमस्ते ।।२।।

मूलाधारा महात्मा हुतवहसलिला मूलमन्त्रा त्रिनेत्रा । हारा केयूरवल्ली अखिलत्रिपदका अंबिकायै प्रियायै ।। वेदा वेदाङ्गनादा विनतघनमुखी वीरतन्त्रीप्रचारी । सारी संसारवासी सकलदुरितहा सर्वतो ह्लीं नमस्ते ।।३।।

ऐं क्लीं ह्लीं मन्त्ररूपा सकलशशिधरा संप्रदायप्रधाना । क्लीं ह्लीं श्रीं बीजमुख्यैः हिमकरदिनकृत् ज्योतिरूपा सरूपा ।। सों क्लीं ऐं शक्तिरूपा प्रणवहरिसते विंदुनादात्मकोटि । क्षां क्षीं क्षूं कारनादे सकल-गुणमयी सुन्दरी ऐं नमस्ते ।।४।।

अध्यानाध्यानरूपा असुरभयकरी आत्मशक्तिप्ररूपा । प्रत्यक्षा पीठरूपी प्रलययुगधरा ब्रह्मविष्णुत्रिरूपी ।। शुद्धात्मा सिद्धरूपा हिम-किरणनिभा स्तोत्रसंक्षोभशक्तिः सृष्टिस्तिथ्ठित्रिमूर्त्ती त्रिपुरहरजयी सुन्दरी ऐं नमस्ते ।।५।।

।। इति श्री बाला पञ्चरत्नस्तोत्र सम्पूर्णम् ।।

(७) श्री बाला सूक्तम्

ॐ नमः श्रीबालायै । रुद्रोऽहं विष्णुरहं ब्रह्माहं अहंकारश्च दिगीशोऽहं पर्वतोहं समुद्रोहं च भूताहं भविष्योऽहं वर्तमानोऽहं च प्रातर्मध्याह्नसायंकालोऽहं प्रहरोऽहं च स्वर्गमर्त्यपातालचतुर्दश-भुवोऽहं ब्रह्माउश्च सोमसूर्याग्निपृथिवी अपवाय्वग्नितेजाकाशोऽहं । वैका-रिका अहंकारोऽहं तेजसाहंकारश्च भूताहंकारोऽहं महारण्यश्च कर्मेन्द्रिय-ज्ञानेन्द्रियोऽहं दोषदूष्यज्ञानेन्द्रियार्थे कर्मेन्द्रियार्थोऽहं विकृत्योऽहं प्रकृत्योऽहं विकारश्चकर्मेन्द्रियार्थोऽहं अन्तःकरणोऽहं हंसश्च । सुन्दरीत्रिपुराबालाहं दशमहाविद्याश्च गायत्री सावित्री सरस्वती त्रिसन्ध्याहं पद्माश्च द्वादश चतुर्दश त्रयस्त्रिंशत् शतसहस्त्रायुत लक्षकोटि चाम्नायोऽहं षडाम्नायश्च एकाक्षरादि अयुताक्षर मन्त्रोऽहं जगद्योनिश्च सृष्टिस्थितिप्रलयोऽहं सर्व-भूतांश्च चार्वाक् सिद्धान्त तन्त्र मेलक चार्वाकार्हन्ता नेत्रक सर्वाकाश्चाहं अजिनोहं व्योनोऽहं कौलोऽहं शैवश्च । सौरगाणपत्यवैष्णवशाक्तोऽहं नास्तिकश्च तपोऽहं योगोहं लयविद्याश्च ब्राह्मण दूरापदक्रम जटा चतुर्दशविद्याहं गंगादिनद्योहं सागराश्च अनुष्टुभादिछन्दोहं षट्शास्त्रं च अहं नारदादि ऋषयः । त्रयस्त्रिंशत् कोटिदेवताश्च । अहं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यं जगद्भोक्तारिति ऐं नमो बालायै । च ये ध्यायि-तव्यं स अहं सत्यं सत्यं ॐ ।

॥ इत्यथर्वदोक्तं श्रीबाला सूक्तम् ॥

(८) श्री बाला लघुस्तवराजः

ऐन्द्रस्येव शरासनस्य दधती मध्ये ललाटम्प्रभां ।
शौक्लीं कान्तिमनुष्णगोरिव शिरस्यातन्वती सर्वतः ॥
एषासौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्णांशोः सदाहस्थितां ।
छिद्यान्नः सहसा पदैस्त्रिभिरघं ज्योतिर्मयी वाङ्मयी ॥

या मात्रा त्रपुषीलतातनुलसत्तन्तूत्थितिस्पर्द्धिनी,
वाग्वीजे प्रथमे स्थिता तव सदा तां मन्महे ते वयम् ।
शक्तिः कुण्डलिनीति विश्वजननव्यापारबद्धोद्यमा,
ज्ञात्वेत्थं न पुनः स्पृशन्ति जननीगर्भेऽर्भकत्वं नराः ।।

दृष्ट्वा सम्भ्रमकारि वस्तु सहसा ऐ ऐ इति व्याहृतं,
येनाकूतवशादपीह वरदे बिन्दुं विनाप्यक्षरम् ।
तस्यापि ध्रुवमेव देवि तरसा जाते तवानुग्रहे,
वाचः सूक्तिसुधारस द्रवमुचो निर्यान्ति वक्त्राम्बुजात् ।।

यन्नित्ये तव कामराजमपरं मन्त्राक्षरं निष्कलं,
तत्सारस्वतमित्यवैति विरलः कश्चिद्बुधश्चेद् भुवि ।
आख्यानम्प्रतिपर्व-सत्यतपसो यत्कीर्त्तयन्तो द्विजाः,
प्रारम्भे प्रणवास्पदप्रणयितां नीत्वोच्चरन्ति स्फुटम् ।।

यत्सद्योवचसाम्प्रवृत्तिकरणे दृष्टप्रभावं बुधै—
स्तार्त्तीयं तदहं नमामि मनसा तद्बीजमिन्दुप्रभम् ।
अस्त्वौर्वोपि सरस्वतीमनुगतो जाड्याम्बुविच्छित्तये,
गौः शब्दो गिरि वर्त्तते सुनियतं योगं विना सिद्धिदः ।।

एकैकं तव देवि बीजमनघं सव्यञ्जनाव्यञ्जनं,
कूटस्थं यदि वा पृथक्क्रमगतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात् ।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफलीकरोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम् ।।

वामे पुस्तकधारिणीमभयदां साक्षस्रजं दक्षिणे,
भक्तेभ्यो वरदानपेशलकरां कर्प्पूरकुन्दोज्ज्वलाम् ।
उज्जृम्भाम्बुजपत्रकान्तनयनस्निग्धप्रभालोकिनीं,
ये त्वामम्ब न शीलयन्ति मनसा तेषां कवित्वं कुतः ।।

ये त्वाम्पाण्डुरपुण्डरीकपटलस्पष्टाभिरामप्रभां,
सिञ्चन्तीममृतद्रवैरिव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिताम् ।

अश्रान्तं विकटस्फुटाक्षरपदा निर्य्याति वक्त्राम्वुजा–
त्तेषाम्भारति भारती सुरसरित्कल्लोललोलोर्म्मिवत् ।।
ये सिन्दूरपरागपुञ्जपिहितां त्वत्तेजसा द्यामिमा
मुर्व्वीञ्चापि विलीनयावकरसप्रस्तारमग्नामिव ।
पश्यन्ति क्षणमप्यनन्यमनसस्तेषामनङ्गज्वर—
क्लान्तास्त्रस्तकुरङ्गशावकदृशो वश्या भवन्ति स्त्रियः ।।

चञ्चत्काञ्चनकुण्डलांगदधरामावद्धकाञ्चीस्रजं,
येत्वां चेतसि त्वद्‌गते क्षणमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थिराम्
तेषां वेश्मसु विभ्रमादहरहः स्फारीभवन्त्यश्चिरं,
माद्यत्कुञ्जरकर्णतालतरलाः स्थैर्य्यं भजन्ति श्रियः ।।
आर्भंट्या शशिखण्डमण्डितजटाजूटां नृमुण्डस्रजं,
बन्धूकप्रसवारुणाम्वरधरां प्रेतासनाध्यासिनीम् ।।
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां त्रिनयनामापीनतुङ्गस्तनीं,
मध्ये निम्नवलित्रयाङ्कितततनुं त्वद्‌पसंवित्तये ।।
जातोऽप्यल्पपरिच्छदे क्षितिभुजां सामान्यमात्रे कुले,
निश्शेषावनिचक्रवर्तिपदवीं लब्ध्वा प्रतापोन्नतः ।
यद्विद्याधरवृन्दवन्दितपदः श्रीवत्सराजोऽभव—
द्देवि त्वच्चरणाम्वुजप्रणतिजः सोऽयम्प्रसादोदयः ।।

चण्डि त्वच्चरणाम्बुजार्च्चनकृते बिल्वीदलोल्लुण्ठनात्
त्रुट्यत्कण्टककोटिभिः परिचयं येषां न जग्मुः कराः ।
ते दण्डांकुशचक्रचापकुलिशश्रीवत्समत्स्याङ्किते—
र्जायन्ते पृथिवीभुजः कथमिवाम्भोजप्रभैः पाणिभिः ।।
विप्राः क्षोणिभुजो विशस्तदितरे क्षीराज्यमध्वासवै-
स्त्वां देवि त्रिपुरे परापरकलां सन्तर्प्य पूजाविधौ ।
यां याम्प्रार्थयते नरः स्थिरधियां येषां त एव ध्रुवं,
तां तां सिद्धिमवाप्नुवन्ति तरसा विघ्नैरविघ्नीकृताः ।।

शब्दानां जननी त्वमत्र भुवने वाग्वादिनीत्युच्यसे,
त्वत्तः केशववासवप्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति ध्रुवम् ।
लीयन्ते खलु यत्र कल्पविरमे ब्रह्मादयस्तेऽप्यमी,
सा त्वं काचिदचिन्त्यरूपमहिमा शक्तिः परा गीयसे ।।

देवानां त्रितयी त्रयी हुतभुजां शक्तित्रयं त्रिस्वरा—
स्त्रैलोक्यं त्रिपदी त्रिपुष्करमथो त्रिब्रह्मवर्णास्त्रयः ।
यत्किञ्चिज्जगति त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गादिकं,
तत्सर्व्वं त्रिपुरेति नाम भगवत्यन्वेति ते तत्त्वतः ।।

लक्ष्मीं राजकुले जयां रणमुखे क्षेमङ्करीमध्वनि
क्रव्याद्द्विपसर्प्पभाजि शबरीं कान्तारदुर्गे गिरौ ।
भूतप्रेतपिशाचजम्भकभये स्मृत्वा महाभैरवीं,
व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपदस्ताराञ्च तोयप्लवे ।।

माया कुण्डलिनो क्रिया मधुमती काली कलामालिनी
मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी ।
शक्तिः शङ्करवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी,
ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारीत्यसि ।।

आईपल्लवितैः परस्परयुतैर्द्वित्रिक्रमादक्षरैः,
काद्यैः क्षान्तगतैः स्वरादिभिरथ क्षान्तैश्च तैः सस्वरैः
नामानि त्रिपुरे भवन्ति खलु यान्यत्यन्तगुह्यानि ते,
तेभ्यो भैरवपत्नि विंशतिसहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः ।।

वोद्धव्या निपुणं बुधैः स्तुतिरियं कृत्वा मनस्तद्गतं,
भारत्यास्त्रिपुरेत्यनन्यमनसो यत्राद्यवृत्ते स्फुटम् ।
एकद्वित्रिपदक्रमेण कथितस्तत्पादसंख्याक्षरै—
र्मन्त्रोद्धारविधिविशेषसहितः सत्सम्प्रदायान्वितः ।।

सावद्यं निरवद्यमस्तु यदि वा किं वानया चिन्तया,
नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति जनो यस्यास्ति भक्तिस्त्वयि ।
सञ्चिन्त्यापि लघुत्वमात्मनि दृढं सञ्जायमानं हठा—
त्त्वद्भक्त्या मुखरीकृतेन रचितं यस्मान्मयापि ध्रुवम् ।।

।। इति श्रीमल्लघ्वाचार्य्यविरचितः श्रीलघुस्तवराजः समाप्तः ।।

(६) श्री बाला मन्त्र गर्भाष्टकम्

ऐंकाररूपिणीं सत्यां ऐंकाराक्षरमालिनीम् ।
ऐंबीजरूपिणीं देवीं बालादेवीं नमाम्यहम् ।।१।।

वाग्भवां वारुणीपीतां वाचासिद्धिप्रदां शिवाम् ।
बलिप्रियां वरालाढ्यां वन्दे बालां शुभप्रदाम् ।।२।।

लाक्षारसनिभां त्र्येक्षां ललज्जिह्वां भवप्रियाम् ।
लम्बकेशीं लोकधात्रीं बालां द्रव्यप्रदां भजे ।।३।।

यैकारस्थां यज्ञरूपां यूं रूपां मन्त्ररूपिणीम् ।
युधिष्ठिरां महाबालां नमामि परमार्थदाम् ।।४।।

नमस्तेऽस्तु महाबालां नमस्ते शङ्करप्रियाम् ।
नमस्तेऽस्तु गुणातीतां नमस्तेऽस्तु नमो नमः ।।५।।

महामन्त्रां मन्त्ररूपां मोक्षदां मुक्तकेशिनीम् ।
मांसांशीं चन्द्रमौलिं च स्मरामि सततं शिवाम् ।।६।।

स्वयम्भुवां स्वधर्मस्थां स्वात्मबोधप्रकाशिकाम् ।
स्वर्णाभरणदीप्ताङ्गां बालां ज्ञानप्रदां भजे ।।७।।

हा हा हा शब्दनिरतां हास्यां हास्यप्रियां विभुम् ।
हुंकाराद्दैत्यखण्डाख्यां श्रीबालां प्रणमाम्यहम् ।।८।।

इत्यष्टकं महापुण्यं बालायाः सिद्धिदायकम् ।

ये पठन्ति सदा भक्त्या गच्छन्ति परमां गतिम् ॥९॥

अश्वमेधादियज्ञानां फलं कोटिगुणं लभेत् ।

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं न देयं यस्य कस्यचित् ॥१०॥

॥ इति कुलचूडामणितन्त्रे श्रीबालायाः मन्त्रगर्भाष्टकम् ॥

(१०) श्री बाला मालामन्त्र

प्रथमे मूलेन ऋष्यादिन्यासः । ध्यानम्—

ऐङ्कारानन‌गर्वितानलशिखां सौः क्लीं कलां बिभ्रतीं, सौवर्णाम्बरधारिणीं वरसुधाधौतानुरागां शिवां । वन्दे पुस्तकपाशमंकुशजपां स्रग्भूषितोद्यत्करां, तां बालां त्रिपुरां पदत्रयमयीं षट्चक्रसंचारिणीम् ।

ॐ नमो भगवति बालात्रिपुरसुन्दरि अयुतकोटिरुद्रगणसेविते लक्षकोटिविष्णुगणसेविते अनेककोटिब्रह्मगणसेविते प्रतापिनि ज्वलज्वल प्रज्वलप्रज्वलमम शत्रुमित्रकलत्रबंधूनां ध्वंसं कुरु कुरु चट चट प्रचट प्रचट तनु तनु पश्चिमदिशं ध्वंसय ध्वंसय उत्तरदिशं रोधय रोधय पूर्वदिशं संहारय संहारय दक्षिणदिशं बंधय बंधय भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मा-राक्षसादिसकलदेवताप्रयोगान् छेदय छेदय सकलमूषकादिप्रयोगान् मारय मारय छेदय छेदय सकलविष नाशय नाशय महात्रिपुरभैरवि चतुर्दशविद्याप्रबोधिनि अनेककोटि ऋषिगणसेविते लक्षकोटिरविगणसेविते अग्नितेजो रूपधारिणि नवकोटिशक्तिगणसेविते आनन्दरूपिणि ममाभयं देहि देहि सर्ववादिप्रतिवादीनां मम वश्यं कुरु कुरु मम पुत्र-मित्र-कलत्र-बंधूनां रक्षां कुरु कुरु सकलकामनां कुरु कुरु आं ह्रीं क्रों श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ह्रां

ह्रीं ह्रूं हुँ ऐं क्लीं सौः हुँ फट् ह्रींकारविजृम्भितमहाकुंडलिनीस्वरूपिणि सकलकामिनीनां मम वश्यं कुरु कुरु सकलदुराचारपुरुषान् हन हन भक्षय भक्षय सकलराज्ञो राजपुरुषान् मम वश्यं कुरु कुरु ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः फट् स्वाहा।

॥ इति श्रीवालात्रिपुरसुन्दर्याः मालामंत्रम् ॥

(११) श्री बाला स्तवराजः

श्री पार्वत्युवाच –

गुणाधीश महादेव रहस्यं वद सत्वरम्।
बालादेव्या परं श्रेष्ठं स्तवराजं कथं प्रभो ॥१॥

ईश्वर उवाच –

शृणु प्राणेश्वरि वक्ष्ये स्तवराजं महाफलम्।
यन्न कस्यचिदाख्यातं गोप्यं कुरु सदाऽनघे ॥२॥
तव भक्त्या महेशानि अकथ्यं कथ्यतेऽधुना।
गोपनं कुरु रुद्राणि गोपयेन्मातृजारवत् ॥३॥

ॐ अस्य श्री बालास्तवराजस्तोत्रस्य श्री मृत्युञ्जय ऋषिः। ककुप्छन्दः। श्री बाला देवता। क्लीं वीजं। सौः शक्तिः। ऐं कीलकम्। भोगमोक्षार्थे जपे विनियोगः।

त्रिवीजभाजायुक्तेन कराङ्गौ न्यासमाचरेत्।
ध्यानं ततो शृणुष्वाशु सर्वैश्वर्यप्रदायकम् ॥४॥
अक्षपुस्तधरां रक्तां वराभयकराम्वुजाम्।
चन्द्रमुण्डां त्रिनेत्रां च ध्यायेद्बालां फलप्रदाम् ॥५॥

ऐं त्रैलोक्यविजयायै हुँ फट्। क्लीं त्रिगुणरहितायै हुँ फट्। सौः सर्वैश्वर्यदायिन्यै हुँ फट् ॥६॥

नातः परतरा सिद्धिर्नातः परतरा गतिः ।
नातः परतरो मंत्रस्सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।।७।।

रक्तां रक्तच्छदां तीक्ष्णां रक्तपां रक्तवाससीम् ।
स्वरूपां रत्नभूषां च ललज्जिह्वां पराम्भजे ।।८।।

त्रैलोक्यजननीं सिद्धां त्रिकोणस्थां त्रिलोचनाम् ।
त्रिवर्गफलदां शान्तां वन्दे वीजत्रयात्मिकाम् ।।९।।

श्रीबालां वारुणीप्रीतां बालार्ककोटिद्योतिनीम् ।
वरदां बुद्धिदां श्रेष्ठां वामाचारप्रियां भजे ।।१०।।

चतुर्भुजां चारुनेत्रां चन्द्रमौलिं कपालिनीम् ।
चतुः षष्ठियोगिनीशां वीरवन्द्यां भजाम्यहम् ।।११।।

कौलिकां कलतत्वस्थां कौलाबारांकवाहनाम् ।
कौसुम्भवर्णां कौमारीं कवर्मधारिणीं भजे ।।१२।।

द्वादशस्वररूपायै नमस्तेऽस्तु नमो नमः ।
नमो नमस्ते बालायै कारुण्यायै नमो नमः ।।१३।।

विद्याविद्याद्यविद्यायै नमस्तेऽस्तु नमो नमः ।
विद्याराज्ञै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।।१४।।

ऐं बालायै विद्महे क्लीं त्रिभुवनेश्वर्यै धीमहि । सौः तन्नो देवी प्रचोदयात् । ऐं बालायै स्वाहा ।

द्वादशान्तालयां श्रेष्ठां षोडशाधारगां शिवाम् ।
पञ्चेन्द्रियस्वरूपाख्यां भूयो भूयो नमाम्यहम् ।।१५।।

ब्रह्मविद्यां ब्रह्मरूपां ब्रह्मज्ञानप्रदायिनीम् ।
वसुप्रदां वेदमातां वन्दे बालां शुभाननाम् ।।१६।।

अघोरां भीषणामाद्यामनन्तोपरिसंस्थिताम् ।
देवदेवेश्वरीं भद्रां श्रीबालां प्रणमाम्यहम् ।।१७।।

भवप्रियां भवाधारां भगरूपां भगप्रियाम् ।
भयानकां भूतमातां भूदेवपूजितां भजे ।।१८।।
अकारादिक्षकारान्तां क्लीवाक्षरात्मिकां पराम् ।
वन्दे वन्दे महामायां भवभव्यभयायहाम् ।।१९।।
नाडीरूप्यै नमस्तेऽस्तु धातुरूप्यै नमो नमः ।
जीवरूप्यै नमस्यामि ब्रह्मरूप्यै नमो नमः ।।२०।।
नमस्ते मन्त्ररूपायै पीठगायै नमो नमः ।
सिंहासनेश्वरि तुभ्यं सिद्धिरूप्यै नमो नमः ।।२१।।
नमस्ते मातृरूपिण्यै नमस्ते भैरवप्रिये ।
नमस्ते चोपपीठायै बालायै सततं नमः ।।२२।।
योगेश्वर्यै नमस्तेऽस्तु योगदायै नमो नमः ।
योगनिद्रास्वरूपिण्यै बालादेव्यै नमो नमः ।।२३।।
सुपुण्यायै नमस्तेऽस्तु सुशुद्धायै नमो नमः ।
सुगुह्यायै नमस्तेऽस्तु बालादेव्यै नमो नमः ।।२४।।
योनिप्रियायै योन्यै वै योनिरूप्यै नमो नमः ।
योनिसर्पि विलेपिन्यै योनिस्थायै नमो नमः ।।२५।।
इतीदं स्तवराजाख्यं सर्वस्तोत्रोत्तमोत्तमम् ।
ये पठन्ति महेशानि पुनर्जन्म न विद्यते ।।२६।।
महाकष्टे महारोगे त्रिधा वा पञ्चधा पठेत् ।
महाकष्टं महारोगं नश्यते नात्र संशयः ।।२७।।
सर्वपापहरं पुण्यं सर्वस्फोटविनाशकम् ।
सर्वसिद्धिप्रदं श्रेष्ठं भोगैश्वर्यप्रदायकम् ।।२८।।
यज्ञानां षोडशानां च कोटिकोटिगुणोत्तरम् ।
फलं प्राप्नोति पाठेन चैकवारेण सुन्दरि ।।२९।।
षोडशानां च दानानां कोट्यर्बुदफलं स्मृतम् ।
पाठमात्रेण लभते नात्र कार्या विचारणा ।।३०।।

पूजान्ते पठते स्तोत्रं मैथुने च विशेषतः ।
पठेच्च चक्रपूजायां फलं वक्तु न शक्यते ।।३१।।
विशेषतश्चार्धरात्रे ये पठन्ति महेश्वरि ।
सर्वारिष्टानि नश्यन्ति लभते वाञ्छितं फलम् ।।३२।।
धात्तृमूले बिल्वमूले वटधत्तूरमूलके ।
मुण्डोपरि शवपृष्टे श्मशाने च चतुष्पथे ।।३३।।
शिवागारे शून्यगेहे चैकलिङ्गे शिवाग्रके ।
दुर्गपवते चोद्याने वारुणीघटे चार्चने ।।३४।।
पठेत्स्तोत्रं सदा भक्त्या त्रैलोक्यविजयी भवेत् ।
रजस्वलाभगं स्पृष्ट्वा पठेदेकाग्रमानसः ।।३५।।
सत्यं सत्यं वरारोहे लभते परमं पदम् ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पठनीयं सदा बुधैः ।।३६।।

।। इति श्रीब्रह्मयामलतन्त्रे श्रीबालादेव्याः स्तवराजः ।।

(१२) श्री बाला मकरन्दस्तवम्

श्रीरुद्र उवाच—

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि मकरन्दस्तवं शुभम् ।
गोप्याद्गोप्यतरं गोप्यं महाकौतूहलं परम् ।।१।।
बालायाः परमेशान्याः स्तोत्रचूडामणिः शिवे ।
मकरन्दस्य स्तोत्रस्य ऋषिर्नारदसंज्ञकः ।।२।।
छन्दोऽनुष्टुपुदाख्यातं श्रीबाला देवता स्मृता ।
ऐं बीजं शक्तिः सौः प्रोक्तं कीलकं क्ली तथैव च ।।३।।
भोगमोक्षस्य सिद्ध्यर्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ।
नमस्तेऽस्तु परां शक्ति नमस्ते भक्तवत्सले ।।४।।

नमस्तेऽस्तु गुणातीतां वालां सिद्धिप्रदाम्बिकाम् ।
भवदुःखाब्धितारन्तीं परां निर्वाणदायिनीम् ॥५॥
धनदां ज्ञानदां सत्यां श्रीवालां प्रणमाम्यहम् ।
सिद्धिप्रदां ज्ञानरूपां चतुर्वर्गफलप्रदाम् ॥६॥
आधिव्याधिहरां वन्दे श्रीबालां परमेश्वरीम् ।
ऐंकाररूपिणीं भद्रां क्लींकारगुणसम्भवाम् ॥७॥
सौःकाररूपरूपेशीं बालां बालार्कसन्निभाम् ।
ऊर्ध्वाम्नायेश्वरीं देवीं रक्तां रक्तविलेपनाम् ॥८॥
रक्तवस्त्रधरां सौम्यां श्रीबालां प्रणमाम्यहम् ।
राजराजेश्वरीं देवीं रजोगुणात्मिकां भजे ॥९॥
ब्रह्मविद्यां महामायां त्रिगुणात्मकरूपिणीम् ।
पञ्चप्रेतासनस्थां च पञ्चमकारभक्षकाम् ॥१०॥
पञ्चभूतात्मिकां चैव नमस्ते करुणामयीम् ।
सर्वदुःखहरां दिव्यां सर्वसौख्यप्रदायिनीम् ॥११॥
सिद्धिदां मोक्षदां भद्रां श्रीबालां भावयाम्यहम् ।
नमस्तस्यै महादेव्यै देवदेवेश्वरि परे ॥१२॥
सर्वोपद्रवनाशिन्यै बालायै सततं नमः ।
गुह्याद्गुह्यतरां गुप्तां गुह्येशीं देवपूजिताम् ॥१३॥
हरमौलिस्थितां देवीं बालां वाक्सिद्धिदां शिवाम् ।
ब्रणहां सोमतिलकां सोमपानरतां पराम् ॥१४॥
सोमसूर्याग्निनेत्रां च वन्देऽहं हरवल्लभाम् ।
अचिन्त्याकाररूपाख्यां ॐकाराक्षररूपिणीम् ॥१५॥
त्रिकाल सन्ध्या रूपाख्यां भजामि भक्ततारिणीम् ।
कीर्तिदां योगदां रादां सौख्यनिर्वाणदां तथा ॥१६॥
मन्त्रसिद्धिप्रदामीडे सृष्टिस्थित्यन्तकारिणीम् ।
नमस्तुभ्यं जगद्धात्रे जगत्तारिणि चाम्बिके ॥१७॥

सर्ववृद्धिप्रदे देवि श्रीविद्यायै नमोऽस्तु ते ।
दयारूप्यै नमस्तेऽस्तु कृपारूप्यै नमोऽस्तु ते ॥१८॥
शान्तिरूप्यै नमस्तेऽस्तु धर्मरूप्यै नमो नमः ।
पूर्णब्रह्मस्वरूपिण्यै नमस्तेऽस्तु नमो नमः ॥१९॥
ज्ञानार्णवायै सर्वायै नमस्तेऽस्तु नमो नमः ।
पूतात्मायै परात्मायै महात्मायै नमो नमः ॥२०॥

आधारकुण्डलीदेव्यै भूयो भूयो नमाम्यहम् ।
षट्चक्रभेदिनी पूर्णा षडाम्नायेश्वरी परा ॥२१॥
परापरात्मिका सिद्धा श्रीबाला शरणं मम ।
इदं श्री मकरन्दाख्यं स्तोत्रं सर्वांगमोक्तकम् ॥२२॥
स्तोत्रराजमिदं देवि धारय त्वं कुलेश्वरि ।
भोजने मैथुने दुर्गे सुरापात्रे गुरोर्गृहे ॥२३॥

एकलिङ्गे शून्यगेहे नदीसंगमगोकुले ।
राजद्वारे चिप्तराघे देवालये चतुष्पथे ॥२४॥
पुण्यतीर्थे कौलिकाग्रे वेश्यागेहे सुरालये ।
पठेत्स्तोत्रं महेशानि चान्द्रायणशतं लभेत् ॥२५॥
अश्वमेधादियज्ञानां तुलादानादिकादिनाम् ।
गङ्गादिसर्वतीर्थानां पठनात्फलमाप्नुयात् ॥२६॥

न देय परनिन्देभ्यो गुरुद्वेषकराय च ।
पशुमार्गरतेभ्यश्च नैव देयं सदा प्रिये ॥२७॥
पुण्यं यशस्यमायुष्यं देवानामपि दुर्लभम् ।
पाठमात्रेण देवेशि सर्वारिष्टं विनश्यति ॥२८॥
डाकिनीभूतप्रेताना योगिनीराक्षसादीनाम् ।
कूष्माण्डभैरवादीनां पशुपक्षिमृगादिनाम् ॥२९॥
किन्नराणाञ्च नागानां वैरिणां दानवादिनाम् ।
यक्षाणां यक्षिणीनाञ्च ग्रहवेतालकादिनाम् ॥३०॥

डाकानां गाणपत्यानां प्रथमानां नरादिनाम् ।
राज्ञां मन्त्रिणां चैव प्रजानां च पिशाचिनाम् ॥३१॥
कबन्धानां पूतनानां अपस्मारग्रहादिनाम् ।
आकाशचारिणीनां च वालग्रहादिनां तथा ॥३२॥
पठनान्नश्यते कान्ते दोषान्नाशयते ध्रुवम् ।
गोप्यं कुरु कुलेशानि त्रिसत्यं मम भाषितम् ॥३३॥
गोप्यान्मोक्षप्रदं चैव प्रकाशान्मृत्युमाप्नुयात् ।
भक्तिहीनाय पुत्राय दत्वा नरकमाप्नुयात् ॥३४॥
सुशीलाय सुपुण्याय दत्वा शुभफलं लभेत् ।
॥ इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे शिव-पार्वतीसम्वादे श्रीवालादेव्या मकरन्दस्तवं ॥

(१३) श्री वाला मन्त्रसिद्धिस्तवम्

ब्राह्मीरूपधरे देवि ब्रह्मातमा ब्रह्मपालिका ।
विद्यामन्त्रादिकं सर्वं सिद्धि देहि परेश्वरि ॥१॥
महेश्वरी महामाया मानन्दा मोहहारिणी ।
मन्त्रसिद्धिफलं देहि महामन्त्रार्णवेश्वरी ॥२॥
गुह्येश्वरी गुणातीता गुह्यतत्वार्थदायिनी ।
गुणत्रयात्मिकां देवीं मन्त्रसिद्धि ददस्व माम् ॥३॥
नारायणी च नाकेशी नृमुण्डमालिनी परा ।
नानाननाना कुलेशी मन्त्रसिद्धि प्रदेहि मे ॥४॥
घृष्टिचक्रा महारौद्री घनोपसविवर्णका ।
घोरघोरतरा घोरा मन्त्रसिद्धिप्रदा भव ॥५॥
शक्राणी सर्वदैत्यघ्नी सहस्रलोचनी शुभा ।
सर्वारिष्टविनिर्मुक्ता सा देवी मन्त्रसिद्धिदा ॥६॥
चामुण्डारूपदेवेशी चलज्जिह्वा भयानका ।
चतुष्पीठेश्वरी देहि मन्त्रसिद्धि सदा मम ॥७॥

लक्ष्मीलावण्यवर्णा च रक्ता रक्तमहाप्रिया ।
लम्बकेशा रत्नभूषा मन्त्रसिद्धिं सदा दद ॥८॥
बाला वीरार्चिता विद्या विशालनयनानना ।
विभूतिदा विष्णुमाता मन्त्रसिद्धिं प्रयच्छ मे ॥९॥
मन्त्रसिद्धिस्तवं पुण्यं महामोक्षफलप्रदम् ।
महामोहहरं साक्षात् सत्यं मन्त्रस्य सिद्धिदं ॥१०॥
गोपनीयं महादेवि गोप्याद्गोप्यतरं प्रिये ।
पठनीयं सदा भक्त्या न देयं यस्य कस्यचित् ॥११॥

॥ इति श्री महाकालसंहितायां श्री बालादेव्या मन्त्रसिद्धिस्तवं ॥

(१४) श्री बाला पञ्चचामरस्तवम्

गिरीन्द्रराजबालिकां दिनेशतुल्यरूपिकां ।
प्रवालजाप्यमालिकां भजामि दैत्यमर्द्दिकाम् ॥१॥
निःशेषमौलिधारिकां नृमुण्डपंक्तिशोभिकां ।
नवीनयौवनाख्यकां स्मरामि पापनाशिकाम् ॥२॥
भवार्णवात्तु तारिकां भवेन सार्धखेलिकां ।
कुतर्कमर्मभंजिकां नमामि प्रौढरूपिकाम् ॥३॥
स्वरूपरूपकालिकां स्वयं स्वयम्भुस्वात्मिकां ।
खगेशराजदण्डिकां अईकरांसुबीजकाम् ॥४॥
श्मशानभूमिशायिकां विशालभीनि अम्बिकां ।
तुषारतुल्यवाचिकां सनिम्नतुङ्गनाभिकाम् ॥५॥
सुपट्टवस्त्रसाजिकां सुकिंकिणीविराजिकां ।
सुबुद्धिबुद्धिदायिकां सुरा सदा सुपीयकाम् ॥६॥
सक्लीं ससौं ससर्गकां सनातनेश चाम्बिकां ।
ससृष्टिपालनाशिकां प्रणौमि दीर्घकेशिकाम् ॥७॥

सहस्रमार्गपालिकां परापरात्मभव्यकाम् ।
सुचारुचारुवक्त्रकाम् शिवं ददातु भद्रिकाम् ।।८।।

इत्येतत्परमं गुह्यं पञ्चचामरसंज्ञकम् ।
यो पठति च बालाग्रे तस्य सिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ।।९।।

यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति साधकः ।
सिद्धिः करतले तस्य मृते मोक्षमवाप्नुयात् ।।१०।।

।। इति श्री चन्द्रद्वीपावतारे श्री कण्ठनाथविरचितं श्रीबालायाः पञ्चामरस्तवम् ।।

(१५) श्री बाला शान्तिस्तोत्रम्

श्री भैरव उवाच

जय देवि जगद्धात्रि जय पापौघहारिणि ।
जय दुःखप्रशमनि शान्तिर्भव ममार्चने ।।१।।

श्रीबाले परमेशानि जय कल्पान्तकारिणि ।
जय सर्वविपत्तिघ्ने शान्तिर्भव ममार्चने ।।२।।

जय बिन्दुनादरूपे जय कल्याणकारिणि ।
जय घोरे च शत्रुघ्ने शान्तिर्भव ममार्चने ।।३।।

मुण्डमाले विशालाक्षि स्वर्णवर्णे चतुर्भुजे ।
महापद्मवनान्तस्थे शान्तिर्भव ममार्चने ।।४।।

जगद्योनि महायोनि निर्णयातीतरूपिणि ।
पराप्रासादगृहिणि शान्तिर्भव ममार्चने ।।५।।

इन्दुचूडयुते चाक्षहस्ते परमेश्वरि ।
रुद्रसंस्थे महामाये शान्तिर्भव ममार्चने ।।६।।

सूक्ष्मे स्थूले विश्वरूपे जय सङ्कटतारिणि ।
यज्ञरूपे जाप्यरूपे शान्तिर्भव ममार्चने ।।७।।

दूतीप्रिये द्रव्यप्रिये शिवे पञ्चांकुशप्रिये ।
भक्तिभावप्रिये भद्रे शान्तिर्भव ममार्चने ।।८।।
भावप्रिये लासप्रिये कारणानन्दविग्रहे ।
श्मशानस्य देवमूले शान्तिर्भव ममार्चने ।।६।।
ज्ञानाज्ञानात्मिके चाद्ये भीतिनिर्मूलनक्षमे ।
वीरवंद्ये सिद्धिदात्रि शान्तिर्भव ममार्चने ।।१०।।
स्मरचन्दनसुप्रीते शोणितार्णवसंस्थिते ।
सर्वसौख्यप्रदे शुद्धे शान्तिर्भव ममार्चने ।।११।।
कापालिकि कलाधारे कोमलाङ्गि कुलेश्वरि ।
कुलमार्गरते सिद्धे शान्तिर्भव ममार्चने ।।१२।।
शान्तिस्तोत्रं सुखकरं बल्यन्ते पठते शिवे ।
देव्याः शान्तिर्भवेत्तस्य न्यूनाधिक्यादिकर्मणि ।।१३।।
श्मशाने च त्रिधा पाठात् महारोगो विनश्यति ।
पञ्चधा पठते भद्रे सर्वदुःखं पलायते ।।१४।।
मन्त्रसिद्धिकामनया दशावर्त्यं पठेद्यदि ।
मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्य नात्र कार्या विचारणा ।।१५।।
पञ्चमस्य समायोगे पठते स्तोत्रमुत्तमम् ।
सिध्यन्ति सकला विद्या खेचर्यादिकसत्वरम् ।।१६।।
चन्द्रसूर्योपरागे च पठेत्स्तोत्रमुत्तमम् ।
बाला सद्मनि सौख्येन बहुकालं वसेत्ततः ।।१७।।
सर्वभद्रमवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत् ।
तीर्थकोटिगुणं चैव दानकोटिफल तथा ।।१८।।
लभते नात्र सन्देहो सत्यं सत्यं मयोदितम् ।
।। इति श्री चिन्तामणितन्त्रे श्री बालायाः शान्तिस्तोत्रम् ।।

(१६) श्री दशमयी बाला स्तोत्रम्

श्री काली बगलामुखी च ललिता धूम्रावती भैरवी,
मातङ्गी भुवनेश्वरी च कमला श्री वज्रवैरोचनी।
तारा पूर्व महापदेन कथिता विद्या स्वयं शम्भुना,
लीला रूपमयी च देशदशधा बाला तु मां पातु सा॥

श्यामां श्यामघनावभासरुचिरां नीलालकालंकृतां,
बिम्बोष्ठीं बलिशत्रुवन्दितपदां बालार्ककोटिप्रभाम्।
त्रासत्रासकृपाणमुण्डदधतीं भक्ताय दानोद्यतां,
वन्दे सङ्कटनाशिनीं भगवतीं बालां स्वयं कालिकां॥
ब्रह्मास्त्रां सुमुखीं बकारविभवां बालां बलाकीनिभां,
हस्तन्यस्तसमस्त वैरिरसनामन्ये दधानां गदाम्।
पीतां भूषणगन्धमाल्यरुचिरां पीताम्बराङ्गां वरां,
वन्दे सङ्कटनाशिनीं भगवतीं बालां च बगलामुखीं॥
बालार्क द्युतिभास्करां त्रिनयनां मन्दस्मितां सन्मुखीं,
वामे पाशधनुर्धरां सुविभवां बाणं तथा दक्षिणे।
पारावारविहारिणीं परमयीं पद्मासने संस्थितां,
वन्दे सङ्कटनाशिनीं भगवतीं बालां स्वयं षोडशीम्॥
दीर्घां दीर्घकुचामुदग्रदशनां दुष्टच्छिदां देवतां,
क्रव्यादां कुटिलेक्षणां च कुटिलां काकध्वजां क्षुत्कृशां।
देवीं सूर्पकरां मलीनवसनां तां पिप्पलादार्चितां,
बालां सङ्कटनाशिनीं भगवतीं ध्यायामि धूमावतीं॥
उद्यत्कोटिदिवाकरप्रतिभटां बालार्कभाकर्पटां,
मालापुस्तकपाशमंकुशधरां दैत्येन्द्रमुण्डस्रजाम्।
पीनोत्तुङ्गपयोधरां त्रिनयनां ब्रह्मादिभिः संस्तुतां,
बालां सङ्कटनाशिनीं भगवतीं श्रीभैरवीं धीमहि॥

वीणावादनतत्परां त्रिनयनां मन्दस्मितां सन्मुखीं,
वामे पाशधनुर्धरां तु निकरे वाणं तथा दक्षिणे ।
पारावारविहारिणीं परमयीं ब्रह्मासने संस्थितां,
वन्दे सङ्कटनाशिनीं भगवतीं मातङ्गिनीं बालिकां ।।

उद्यत्सूर्यनिभां च इन्दुमुकुटामिन्दीवरे संस्थितां,
हस्ते चारुवराभयं च दधतीं पाशं तथा चांकुशं ।
चित्रालंकृतमस्तकां त्रिनयनां ब्रह्मादिभिः सेवितां ।
वन्दे सङ्कटनाशिनीं च भुवनेशीमादिबालां भजे ।।

देवीं काञ्चनसन्निभां त्रिनयनां फुल्लारविन्दस्थितां ।
बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां ।।
प्रालेयाचलसन्निभैश्च करिभिराषिञ्च्यमानां सदा ।
बालां सङ्कटनाशिनीं भगवतीं लक्ष्मीं भजे चेन्दिराम् ।।

सच्छिन्नांस्व-शिरोविकीर्णकुटिलां वामे करे बिभ्रतीं ।
तृप्तास्यस्वशरीरजैश्च रुधिरैः सन्तर्पयन्तीं सखीम् ।।
सद्भक्ताय वरप्रदाननिरतां प्रेतासनाध्यासिनीं ।
बालां संकटनाशिनीं भगवतीं श्रीछिन्नमस्तां भजे ।।

उग्रामेकजटामनन्तसुखदां दूर्वादलाभामजां ।
कर्त्रीखड्गकपालनीलकमलान् हस्तैर्वहन्तीं शिवाम् ।।
कण्ठे मुण्डस्रजां करालवदनां कञ्जासने संस्थितां ।
वन्दे संकटनाशिनीं भगवतीं बालां स्वयं तारिणीम् ।।

मुखे श्री मातङ्गी तदनु किल तारा च नयने ।
तदन्तङ्गा काली भृकुटिसदने भैरवि परा ।।
कटौ छिन्ना धूमावति जय कुचेन्दी कमलजा—
पदांशे ब्रह्मास्त्रा जयति किल बाला दशमयी ।।

विराजन्मन्दार द्रुम कुसुमहारस्तनतटी ।
परित्रासत्राणा स्फटिकगुटिका पुस्तकवरा ॥
गले रेखास्तिस्रो गमकगतिगीतैकनिपुणा ।
सदा पीता हाला जयति किल बाला दशमयी ॥
॥ इति मेरुतन्त्रे श्रीदशमयी बाला त्रिपुरसुन्दरी स्तोत्रम् ॥

(१७) श्रीबाला कर्पूरस्तोत्रं

कर्पूरामेन्दुगौरां शशिसकलधरां रक्तपद्मासनस्थां,
विद्यापात्राक्षमुद्राधृतकरकमलां त्वां स्मरन्सन् त्रिलक्षम् ।
जप्त्वा चन्द्रार्द्धभूषं सुरुचिरमधरं बीजमाद्यं तवेदं,
हुत्वा पश्चाद्पलाशैः स भवति कविराड् देवि बाले महेशि ॥१॥
हस्ताब्जैः पात्रपाशांकुशकुसुमधनुर्बीजपूरान्दधानां,
रक्तां त्वां संस्मरन्सन् प्रजापति मनुजो यस्त्रिलक्षं भवानि ।
वामाक्षी चन्द्रसंस्थं क्षितिसहितविधिं कामबीजं तवेदं,
चन्द्रैर्हुत्वा दशांशं स नयति सकलान् वश्यतां सर्वदैव ॥२॥
विद्याक्षाज्ञानमुद्राऽमृतकलशधरां त्वां मनोज्ञां किशोरीं,
स्मेरां ध्यायन्त्रिनेत्रां शशधरधवलां यो जपेद् वै त्रिलक्षम् ।
जीवं सङ्कर्षणाढ्यं तव सुरनमिते सर्गयुक्तं सुबीजं,
हुत्वान्ते मालतीभिर्भवति स ललिते श्रीयुतो भोगवाँश्च ॥३॥
ध्यायन् त्वां पुस्तकाक्षाभयवरदकरां लोहिताभां कुमारीं,
कश्चिद्यः साधकेन्द्रो जपति कुलविधौ प्रत्यहं षट्सहस्रम् ।
मातर्वाङ्मारशक्तिप्रयुतमनुमिमं त्र्यक्षरं त्रैपुरं ते,
भुक्त्वा भोगाननेकान् जननि स लभतेऽवश्यमेवाष्टसिद्धीः ॥४॥
आरक्तां कान्तदोर्भ्यां मणिचषकमथो रत्नपद्मं दधानां,
वाङ्मायाश्रीयुतान्यं मनुमयि ललिते तत्त्वलक्षं जपेद्यः ।

ध्यायन् रूपं त्वदीयं तदनु च हवनं पायसान्नैः,
प्रकुर्याद्योगीशो तत्त्ववेत्ता परशिवमहिलेभूतले जायते सः ।।५।।
वाणी चेटी रमा वाग्भवमथ मदनो शक्तिबीजं च,
षड्भिरेतैश्चन्द्रार्द्धचूडे भवति तव महामन्त्रराजो षडर्णः ।
जप्त्वैनं साधको यः स्मरहरदयिते भक्तितस्त्वामुपास्ते,
विद्यैश्वर्याणि भुक्त्वा तदनु स लभते दिव्यसायुज्यमुक्ति ।।६।।

महाविन्दुः शुद्धो जननि नवयौन्यन्तरगतो,
भवेदेतद्वाह्ये वसुछदनपद्मं सुरुचिरम् ।
ततो वेदद्वारं भवति तव यन्त्रं गिरिसुते,
तदस्मिन् त्वां ध्यायेत् क हरिहररुद्रेश्वरपदां ।।७।।
नवीनादित्याभां त्रिनयनयुतां स्मेरवदनाम्,
महाक्षस्रग्विद्याऽभयवरकरां रक्तवसनाम् ।
किशोरीं त्वां ध्यायन्निजहृदयपद्मे परशिवे,
जपेन्मोक्षाप्त्यर्थं तदनुजुहुयात् किंशुकुसुमैः ।।८।।
हृदम्भोजे ध्यायंन् कनकसदृशामिन्दुमुकुटां,
त्रिनेत्रां स्मेरास्यां कमलमधुलुङ्गाङ्कितकराम् ।
जपेद्दिग्लक्षं यस्तव मनुमयो देवि जुहुयात्,
सुपक्वैर्मालूरैरतुलधनवान् स प्रभवति ।।९।।
स्मरेद्धस्तैर्वेदाभयवरसुधाकुम्भ दधतीं,
स्रवन्ती पीयूषं धवलवसनामिन्दुसकलाम् ।
सुविद्याप्त्यैर्मन्त्रं नवहरनुते लक्षनवकं,
जपेत्वां कर्पूरैरगुरुसहितैरेव जुहुयात् ।।१०।।
सहस्रारे ध्यायन् शशधरनिभां शुभ्रवसना—
मकारादिक्षान्तावयवयुतरूपां शशिधराम् ।
जपेद् भक्त्या मन्त्रं तव रससहस्रं प्रतिदिनं,
तथारोग्याप्त्यर्थं भगवति गुडूच्यैः प्रजुहुयात् ।।११।।

कुलज्ञः कश्चिद्यो यजति कुलपुष्पैः कुलविधौ,
कुलागारे ध्यायन् कुलजननि ते मन्मथकलाम् ।
षडर्णं पूर्वोक्तं जपति कुलमन्त्रं तव शिवे,
स जीवन्मुक्त स्यादकुलकुलपङ्केरुहगते ॥१२॥
शिवे मद्यैर्मांसैश्चणकवटकैर्मीनसहितैः,
प्रकुर्वंश्चक्राचां सुकुलभगलिङ्गामृतरसैः ।
बलि शङ्कामोहादिकपशुगणान्यो विदधति,
त्रिकालज्ञो ज्ञानी स भवति महाभैरवसमः ॥१३॥
मनोवाचागम्यामकुलकुलगम्यां परशिवाम्,
स्तवीमि त्वां मातः कथमहमहो देवि जडधीः ।
तथापि त्वद्भक्तिर्मुखरयति मां तद्विरचितं,
स्तवं क्षन्तव्यं मे त्रिपुरललिते दोषमधुना ॥१४॥
अनुष्ठानध्यानार्चनमनु समुद्धारणयुतं,
शिवे ते कर्पूरस्तवमिति पटेदर्चनपरः ।
स योगी भोगी स्यात् स हि निखिलशास्त्रेषु निपुणः,
यमोऽन्यो वैरीणां विलसति सदा कल्पतरुवत् ॥१५॥
बालां बालदिवाकरद्युतिनिभां पद्मासने सस्थितां,
पञ्चप्रेतमयाम्बुजासनगतां वाग्वादिनीरूपिणीम्,
चन्द्रार्कानलभूषितत्रिनयनां चन्द्रावतंसान्विताम्,
विद्याक्षाभयविभ्रतीं वरकरां वंदे परामम्बिकां ॥१६॥

॥ इति श्रीपरातन्त्रे श्रीबाला त्रिपुरसुन्दरीकर्पूरस्तोत्रम् ॥

(१८) श्री बाला भुजङ्गस्तोत्रम्

श्री नीललोहित उवाच—

जगद्योनिरूपां सुवेशीं च रक्तां गुणातीतसंज्ञां महागुह्यगुह्याम् ।
महासर्पभूषां भवेशादिपूज्यां महात्युग्रबालां भजेऽहं हि नित्याम् ॥१॥

महास्त्रर्णवर्णां शिवपृष्ठसंस्थां महामुण्डमालां गले शोभमानां ।
महाचर्मवस्त्रां महाशङ्खहस्तां महात्युग्रबालां भजेऽहं हि नित्याम् ॥२॥

सदा सुप्रसन्नां भृतासूक्ष्मसूक्ष्मां वराभीतिहस्तां धृतावाक्षपुस्ताम् ।
महाकिन्नरेशीं भगाकारविद्यां महात्युग्रबालां भजेऽहं हि नित्याम् ॥३॥

तिनी तीकिनीनां रवा किंकिणीनां हहाहा हहाहा महालापशब्दाम् । तथैथै तथैथै महानृत्यनृत्यां महात्युग्रबालां भजेऽहं हि नित्याम् ॥४॥

ननाना रिरीरी महागीश शम्वू हुहूवू हुहूवू पशो रक्तपानाम् । धिमिन्धीं धिमिन्धीं मृदङ्गस्य शब्दां महात्युग्रबालां भजेऽहं हि नित्याम् ॥५॥

महाचक्रसंस्थां त्रिमात्रास्वरूपां शिवार्धांगभूतां महापुष्पमालाम् ।
महादुःखहर्त्रीं महाप्रेतसंस्थां महात्युग्रबालां भजेऽहं हि नित्याम् ॥६॥

स्फुरत्पद्मवक्त्रां हिमांशा कलापां महाकोमलाङ्गीं सुरेशे नमान्याम् । जगत्पालमेकाग्रचित्तां सुपुष्टां महात्युग्रबालां भजेऽहं हि नित्याम् ॥७॥

महादैत्यनाशीं सुरानित्यपालीं महाबुद्धिराशि कवीनां मुखस्थाम् । जटीनां हृदिस्थां मनूनां शिरस्थां महात्युग्रबालां भजेऽहं हि नित्याम् ॥८॥

भुजङ्गाख्यं महास्तोत्रं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।
महासिद्धिप्रदं दिव्यं चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥९॥
सर्वक्रतुफलं भद्रे सर्वव्रतफलं तथा ।
सर्वदानोद्भवं पुण्यं लभते नात्र संशयः ॥१०॥
विवादे कलहे घोरे महादुःखे पराजये ।
ग्रहदोषे महारोगे पठेत्स्तोत्रं विचक्षणः ॥११॥
सर्वदोषाः विनश्यन्ति लभते वांच्छितं फलम् ।
द्यूतीयागे पठेद्देवि सर्वशत्रुक्षयो भवेत् ॥१२॥

महाचक्रे पठेद्देवि लभते परमं पदम् ।
पूजान्ते पठते भक्त्या महाबलिफलप्रदम् ॥१३॥
पितृगेहे तुर्यपथे शून्यागारे शिवालये ।
बिल्वमूले चैकवृक्षे रतौ मधुसमागमे ॥१४॥
पठेत्स्तोत्रं महेशानि जीवन्मुक्तस्स उच्यते ।
त्रिकालं पठते नित्यं देवीपुत्रत्वमाप्नुयात् ॥१५॥
॥ इति श्रीकालानलतन्त्रे श्रीबालायाः भुजङ्गस्तोत्रम् ॥

(१६) श्री बाला मुक्तावली स्तोत्रम्

बालार्ककोटिरुचिरां कोटिब्रह्माण्डभूषिताम् ।
कन्दर्पकोटिलावण्यां बालां वन्दे शिवप्रियाम् ॥१॥
वह्निकोटिप्रभां सूक्ष्मां कोटिकोटि हेलिनीं ।
वरदां रक्तवर्णां च बालां वन्दे सनातनीम् ॥२॥
ज्ञानरत्नाकरां भीमां परब्रह्मावतारिणीं ।
पञ्चप्रेतासनगतां बालां वन्दे गुहाशयाम् ॥३॥
पराप्रासादमूर्ध्निस्थां पवित्रां पात्रधारिणीं ।
पशुपाशच्छिदां तीक्ष्णां बालां वन्दे शिवासनाम् ॥४॥
गिरिजां गिरिमध्यस्थां गीःरूपां ज्ञानदायिनीम् ।
गुह्यतत्वपरां चाद्यां बालां वन्दे पुरातनीम् ॥५॥
बौद्धकोटिसुसौन्दर्यां चन्द्रकोटिसुशीतलाम् ।
आशावासां परां देवीं वन्दे बालां कपर्दिनीम् ॥६॥
सृष्टिस्थित्यन्तकारिण्यां त्रिगुणात्मकरूपिणीम् ।
कालग्रसनसामर्थ्यां बालां वन्दे फलप्रदाम् ॥७॥
यज्ञनाशि यज्ञदेहां यज्ञकर्मशुभप्रदाम् ।
जीवात्मां विश्वजननीं बालां वन्दे परात्पराम् ॥८॥

इत्येतत् परमं गुह्यं नाम्ना मुक्तावलीस्तवम् ।
ये पठन्ति महेशानि फलं वक्तुं न शक्यते ।।९।।
गुह्याद्गुह्यतरं गुह्यं महागुह्यं वरानने ।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम ।।१०।।
कन्यार्थी लभते कन्यां मोक्षार्थी मोक्षमाप्नुयात् ।
बहुनात्र किमुक्तेन चिन्तामणिरिवापरम् ।।११।।
गोपनीयं प्रयत्नेन गोपनीयं न संशयः ।
अन्येभ्यो नैव दातव्यं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ।।१२।।

।। इति श्रीविष्णुयामले श्रीबालादेव्या मुक्तावली स्तोत्रम् ।।

(२०) श्री बाला खड्गमाला स्तोत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः नमः बालात्रिपुरसुन्दर्यै हृदयदेवि शिरोदेवि शिखादेवि कवचदेवि नेत्रदेवि अस्त्रदेवि; दिव्यौघाख्यगुरुरूपिणि प्रकाशानन्दमयि परमेशानन्दमयि परशिवानन्दमयि कामेश्वरानन्दमयि मोक्षानन्दमयि कामानन्दमयि अमृतानन्दमयि; सिद्धौघाख्यगुरुरूपिणि ईशानमयि तत्पुरुषमयि अघोरमयि वामदेवमयि सद्योजातमयि; मानवौघाख्य गुरुरूपिणि गगनानन्दमयि विश्वानन्दमयि विमलानन्दमयि मदनानन्दमयि आत्मानन्दमयि प्रियानन्दमयि; गुरुचतुष्टयरूपिणि गुरुमयि परमगुरुमयि परात्परगुरुमयि परमेष्ठिगुरुमयि; सर्वज्ञे नित्यतृप्ते अनादिबोधे स्वतन्त्रे नित्यमलुप्ते रतिमयि प्रीतिमयि मनोभवामयि; सर्वसंक्षोभणबाणमयि सर्वविद्रावणबाणमयि सर्वाकर्षणबाणमयि वशीकरणबाणमयि उन्मादनबाणमयि; काममयि मन्मथमयि कंदर्पमयि मकरध्वजमयि मनोभवमयि; सुभगामयि भगामयि भगसर्पिणीमयि भगमालामयि अनंगामयि अनंगकुसुमामयि अनंगमेखलामयि अनंगमदनामयि; ब्राह्मीमयि माहेश्वरीमयि कौमारीमयि वैष्णावीमयि

वाराहीमयि इन्द्राणीमयि चामुण्डामयि महालक्ष्मीमयि; असितांगमयि रुरुमयि चण्डमयि क्रोधमयि उन्मत्तमयि कपालमयि भीषणमयि संहारमयि, कामरूपपीठमयि मलयपीठमयि कुलनागगिरिपीठमयि कुलांतक पीठमयि चौहारपीठमयि जालंधरपीठमयि उड्यानपीठमयि देवीकोटपीठमयि, हेतुकमयि त्रिपुरांतकमयि वेतालमयि अग्निजिह्वमयि कालांतकमयि कपालमयि एकपादमयि भीमरूपमयि मलयमयि हाटकेश्वरमयि, इन्द्रमयि अग्निमयि यममयि निर्ऋतिमयि वरुणमयि वायुमयि कुवेरमयि ईशानमयि ब्रह्मामयि अनन्तमयि, वज्रमयि शक्तिमयि दण्डमयि खड्गमयि पाशमयि अंकुशमयि गदामयि त्रिशूलमयि पद्ममयि चक्रमयि, श्रीं श्रीबालात्रिपुरसुन्दरि सर्वानंदमयि नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा सौः क्लीं ऐं।

।। इति श्री बालात्रिपुरसुन्दर्या खड्गमाला शुभं भूयात् ।।

(२१) श्री अष्टोत्तरशत नाम स्तोत्र

अस्य श्री बाला त्रिपुरसुन्दरी अस्टोत्तरशतनाम स्तोत्रमन्त्रस्य चिदानन्द ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री बाला त्रिपुरसुन्दरी देवता, वाग्बीजं, कामशक्तिः, तार्तीय कीलकं, मम धर्मार्थकाममोक्षार्थे पाठे विनियोगः।

ध्यानम्—

अरुणकिरणजालै रंजिता सावकाशा।
विधृत जपवटीका पुस्तिकाभीति हस्ता।।
इतर कर वराढ्या फुल्लकल्हारसंस्था।
निवसतु हृदि बाला नित्य कल्याणरूपा।।
अरुणरूपा महारूपा ज्योतिरूपा महेश्वरि।
पार्वती वररूपा च परब्रह्मस्वरूपिणी।।१।।

लक्ष्मी लक्ष्मिस्वरूपा च लक्षालक्षस्वरूपिणी ।
गायत्री चैव सावित्री सन्ध्या सरस्वती श्रुती ।।२।।
वेदबीजा ब्रह्मबीजा विश्वबीजा कविप्रिया ।
इच्छाशक्ति क्रियाशक्ति आत्मशक्ति भयंकरी ।।३।।
कालिका कमला काली कंकाली कालरूपिणी ।
उपस्थिति-स्वरूपा च प्रलया लयकारिणी ।।४।।
हिंगुला त्वरिता चण्डी चामुण्डा मुण्डमालिनी ।
रेणुका भद्रकाली च मातङ्गी शिवशाम्भवी ।।५।।
योगुला मंगला गौरी गिरिजा गोमती गया ।
कामाक्षी कामरूपा च कामिनी कामरूपिणी ।।६।।
योगिनी योगरूपा च योगज्ञानशिवप्रिया ।
उमा कात्यायनी चण्डी अम्बिका त्रिपुरसुन्दरी ।।७।।
अरुणा तरुणी शान्ता सर्वसिद्धि सुमङ्गला ।
शिवा च सिद्धिमाता च सिद्धिविद्या हरिप्रिया ।।८।।
पद्मावती पद्मवर्णा पद्माक्षी पद्मसम्भवा ।
धारिणी धरित्री धात्री अगम्या गम्यवासिनी ।।९।।
विद्यावती मन्त्रशक्तिः मन्त्रसिद्धिपरायणी ।
विराट्धारिणी धात्री च वाराही विश्वरूपिणी ।।१०।।
परा पश्या परा मध्या दिव्यवादविलासिनी ।
नाद बिन्दु कलाज्योति विजया भुवनेश्वरी ।।११।।
ऐं कारिणी भयंकारी क्लींकारी कमलप्रिया ।
सौंकारी शिवपत्नी च परतत्त्वप्रकाशिनी ।।१२।।
ह्रींकारी आदिमाया च मन्त्रमूर्तिपरायणी ।
इदं त्रिपुरसुन्दर्याः नाम अष्टोत्तरशतम् ।।१३।।
प्रातःकाले पठेन्नित्यं सर्वसम्पत्तिदायकम् ।
द्विकाले च पठेन्नित्यं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ।।१४।।

त्रिकाले च पठेन्नित्यं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।
अष्टोत्तरसहस्रेण लभते वाञ्छितं फलम् ॥१५॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं ज्ञानवित्तं यशोबलम् ।
अष्टोत्तरशतं दिव्यं नाम स्तोत्रं प्रकीर्तितम् ॥१६॥

॥ इति श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं शुभं भूयात् ॥

(२२) श्री बाला सहस्राक्षरी स्तोत्रम्

ऐं नमः श्री बालायै । ऐं नमो बालायै त्रिगुणरहितायै क्लीं शिवारूपिण्यै, शिवोर्ध्वगतायै, त्रिमात्रायै सौः स र्वदेवाधिदेवीश्वर्यै ऐं खं ऐं खं ऐं खं फट् ॐ क्लीं ॐ क्लीं ॐ क्लीं ॐ फट् हंसः सौः हंसः सौः सः सौः फट् ह्लां ह्लीं ह्लूं ऊर्ध्वाम्नायेश्वर्यै ख्फ्रें ह्फ्रें स्फ्रें ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं फट् श्रीं ध्रीं प्रीं फ्रीं त्रैलोक्यविजयेश्वर्यै महाप्रकाशायै स्वाहा—शताक्षरी ।

ऐं ह्लीं ख्फ्रें ह्फ्रें ह्स्ख्फ्रें ॐ ह्लूं क्लीं क्रीं रां रीं रूं सौः ॐकाररूपिण्यै ऐंकारसंस्थितायै हंसः सोहं परमात्मा जगन्मयी यज्ञरूपिण्यै जनानन्ददायिन्यै त्रिजगताधीश्वर्यै ह्लीं ह्लीं ह्लीं फट् फट् फट् शत्रुनाशिन्यै जयप्रदायै त्रिविद्याचक्रेश्वर्यै नरमुण्डमालाधारिण्यै नरचर्मावगुण्ठिनि नरास्थिहारिण्यै महादेवासनि संसारार्णवतारिणि मम शत्रुं भंजय भंजय तुरु तुरु मुरु मुरु हिरि हिरि मनोरथं पूरय पूरय ममाधिव्याधि नाशय नाशय छिन्धि छिन्धि भिन्दि भिन्दि कुरुकुल्ले सर्वारिष्टं विनाशय विनाशय हेरि हेरि गेरि गेरि त्रासय त्रासय मम रिपून् भ्रामय भ्रामय खड्गेन खण्डं खण्डं कुरु कुरु इषुना मर्म भेदय भेदय, ऐं ख्रें ख्रैं ख्रों ख्रौं ख्रः रक्तवर्णशरीरे महाघोररावे शरवाणहस्ते वराभयांकितचारुहस्ते हूँ हूँ हूँ फट् चतुर्दशभुवनमालिनि चतुर्दशविद्याधीश्वरि चतुर्वेदाध्यायिनि चातुर्वर्ण्य एकाकारकारिणि कान्तिदाग्निनि महाघोरघोरतरे अघोरामुखि अघोरमूर्ध्निसंस्थिते परापरपरब्रह्माधिरूढिनि ह्लीं ढ्रीं क्षीं फट् ॐ ऐं ॐ क्लीं ॐ सौः श्रीं ऐं ऐं ऐं ह्सैं स्हैं ॐ ह्लः कफट्

पंचप्रेतासने महामोक्षदात्री ॐ हूँ फट् ह्लः फट् छ्रां छ्रीं छ्रों ॐ जगद्यो-निरूपे योनिसर्पिविभूषिणि योनिसृक्शिरभूषिणि योनिमालिनि योनि-संकोचिनि योनिमध्यगते द्रां द्रीं द्रूं क्षौं हः फट् क्षां यां रां लां वां शां हां ॐ ।

ॐ फट् ऐं हूँ फट् क्लीं हूँ फट् सौः हुँ फट् श्मशानवासिनि श्मशानभस्मलेपिनि श्मशानाङ्गारनिलये शवारूढे शवमांसभक्षमहाप्रिये शवपरितव्याप्तिहाहाशब्दातिप्रिये डामरि भूतिनि योगिनि डाकिनि राक्षसि सहविहारिणि पराप्रासादगेहिनि भस्मीलेपकारविभूषिते फ्रं ख्फ्रें हस्फ्रें क्फ्रें हस्क्फ्रें सहख्फ्रें गां गीं गूं सः फट् क्म्रीं चम्रीं ढ्म्रीं ह्म्रीं क्ष्म्रीं फट् गिरिनिवासिनि गिरिपुष्पसंशोभिनि गिरिपुत्रि गिरि-धारिणि गीतवाद्यविमोहिनि त्रैलोक्यमोहिनि देवि दिव्याङ्गवस्त्रधारिणि दिव्यज्ञानप्रदे दिविषद्माते सिद्धिप्रदे सिद्धिस्वरूपे सिद्धिविद्योतातीतातीते खमार्गंप्रचारिणि खगेश्वरि खड्गहस्तिनि खंवीजमध्यगते ॐ ऐं ॐ ह्रीं ॐ श्रीं ॐ फट् तां तीं तूं तैं तौं तः हां हीं हूं हैं हौं हः वां वीं वूं वैं वौं वः चफ्रें ह्फ्रें क्ष्प्रें अं कं चं टं तं पं यं शं मातृकाचक्रचक्रे हासिनि ह्लां ह्लों ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः श्लीं हूँ फट् अं आं ऐं इं ईं ऐं उं ऊं ऐं ऋं ॠं ऐं एं ऐं ऐं ओं औं ऐं अं अः ऐं फट् । निर्वाणरूपे निर्वाणातीते निर्वाणदात्रि निरंकुशिनि निराकारे निरंजनावतारिणि षट्चक्रेश्वरि सहस्रात्मे महासूक्ष्मसूक्ष्मे सूक्ष्मातीतसूक्ष्मनामरूपिणि महाप्रलयान्तएक-शेषाक्षिणि संसाराब्धिदुःखतारिके सृष्टिस्थित्यन्तकारिके क्मांलांवुयूं ग्मांलांवुंयूं स्मौलांवुंयूं क्ष्मांलांवुंयूं ह्लीं थं छिधि सुबुद्धि दद दद मोक्षमार्गं दर्शय दर्शय तवानुचरं कुरु कुरु हिरि हिरि धिमि धिमि धिमि महाडमरुवादनमहाप्रिये आं हूँ हूँ हूँ हूँ फट् मम हृदये तिष्ठ तिष्ठ सुफलं देहि देहि ।४७। सर्वतीर्थफल प्रदापय प्रदापय सर्वदानफलं प्रापय प्रापय ज्योतिस्वरूपिणि सर्वयोगफलं कुरु कुरु स्फ्रों क्रों ह्रीं ऐं क्लीं सौः स्वाहा । श्री मद्बालायै स्वाहा ।

।। इति बालार्णवे श्रीबालादेव्याः सहस्राक्षरीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

(२३) श्री बाला सहस्रनामकम्

समाध्युपरतं काले कदाचिद्द्विजने मुदा ।
परमानन्दसन्दोहमुदितं प्राह पार्वती ।।१।।

श्री देव्युवाच

श्रीमन्नाथ तवानन्दकारणं ब्रूहि शङ्कर ।
योगीन्द्रप्राप्यं देवीश प्रेमपूर्ण सुधानिधे ।।
कृपया यदि मे शम्भो सुगोप्यमपि कथ्यताम् ।।२।।

श्रीभैरव उवाच

निर्भरानन्दसन्दोहः शक्तिभावेन जायते ।
लावण्यसिन्धुस्तत्रास्ति बालाया रसकन्दरः ।।३।।
तामेवानुक्षणं देवीं चिन्तयामि ततः शिवाम् ।
तस्या नामसहस्राणि कथयामि तव प्रिये ।।४।।
सुगोप्यान्यपि रम्भोरु गम्भीरस्नेहविभ्रमात् ।
तामेव स्तुवतो देवि ध्यायतोऽनुक्षणं मम ।
सुखसन्दोहसंभावो ज्ञानानन्दस्य कारणम् ।।५।।

अस्य श्री बालात्रिपुरसुन्दरी सहस्रनामस्तोत्रस्य भार्गव ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्री बालात्रिपुरा देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकम् समस्तपुरुषार्थे समन्वयसामर्थ्ये पाठे विनियोगः ।

भार्गवऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे । श्रीबालादेवतायै नमो हृदि । ऐं बीजाय नमो गुह्ये । सौः शक्तये नमः पादयोः । क्लीं कीलकाय नमो नाभौ । विनियोगाय नमः सर्वांगेषु ।

ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः । क्लीं तर्जनीभ्यां नमः । सौः मध्यमाभ्यां नमः । ऐं अनामिकाभ्यां नमः । क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । सौः करतलपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिन्यासः ।

रक्ताम्बरां चन्द्रकलावतंसां । समुद्यदादित्यनिभां त्रिनेत्राम् ।।
विद्याक्षमालाभयदानहस्तां । ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम् ।।

आनन्दसिन्धुरानन्दाऽऽनन्दमूर्ति विनोदिनी ।
त्रिपुरासुन्दरी प्रेमपाथोनिधिरनुत्तमा ॥१॥
वामार्थगह्वरा भूतिविभूतिः शाङ्करी शवा ।
शृङ्गारमूर्तिर्वरदा रसा च शुभगोचरा ॥२॥
परमानन्दलहरी रती रङ्गवती गतिः ।
रङ्गमालानङ्गकला केलिः कैवल्यदा कला ॥३॥
रसकल्पा कल्पलता कुतूहलवती गतिः ।
विनोददिग्धा सुस्निग्धा मुग्धामूर्तिर्मनोरमा ॥४॥
बालार्ककोटिकिरणा चन्द्रकोटिसुशीतला ।
द्रवत्पीयूषदिग्धाङ्गी स्वर्गार्थपरिकल्पिता ॥५॥
कुरङ्गनयना कान्ता सुगतिः सुखसन्ततिः ।
राजराजेश्वरी राज्ञी महेन्द्रपरिवन्दिता ॥६॥
प्रपञ्चगतिरीशानी प्रपञ्चगतिरुत्तमा ।
दुर्वासा दुःसहा शक्तिः शिञ्जत्कनकनूपुरा ॥७॥
मेरुमन्दरवक्षोजा सृणिपाशवरायुधा ।
शरकोदण्डसंसक्तपाणिद्वयविराजिता ॥८॥
चन्द्रबिम्बानना चारुमुकुटोत्तंस-चन्द्रिका ।
सिन्दूरतिलका चारुधम्मिल्लामलमालिका ॥९॥
मन्दारदाममुदिता रत्नमालाविभूषिता ।
सुवर्णाभरणप्रीता मुक्ताधाममनोरमा ॥१०॥
ताम्बूलपूर्णवदना मदनानन्दमानसा ।
सुखाराध्या तपःसारा कृपापारा विधीश्वरी ॥११॥
वक्षःस्थलसद्रत्नप्रभा मधुरसोन्मदा ।
बिन्दुनादात्मकोच्चाररहिता तुर्यरूपिणी ॥१२॥
कमनीयाकृतिर्धन्या शाङ्करी प्रीतिमञ्जरी ।
प्रपञ्चा पञ्चमी पूर्णा पूर्णपीठनिवासिनी ॥१३॥

राज्यलक्ष्मीश्च श्रीलक्ष्मीर्महालक्ष्मीः सुराजिका ।
संतोषसीमा संपत्तिः शातकौम्भी तथा द्युतिः ॥१४॥
परिपूर्णा जगद्धात्री विधात्री बलवर्धिनी ।
सार्वभौमनृपश्रीश्च साम्राज्यगतिरम्बिका ॥१५॥
सरोजाक्षी दीर्घदृष्टिः साचीक्षणविचक्षणा ।
रङ्गस्रवन्ती रसिका प्रधाना रसरूपिणी ॥१६॥
रससिन्धुः सुगात्री च धूसरी मैथुनोन्मुखा ।
निरन्तरगुणासक्ता शक्तिर्निधुवनात्मिका ॥१७॥
कामाक्षा कमनीया च कामेशी भगमङ्गला ।
सुभगा भोगिनी भोग्या भाग्यदा सुभगा भगा ॥१८॥
भगलिङ्गानन्दकला भगमध्यनिवासिनी ।
भगरूपा भगमयी भगयन्त्रा भगोत्तमा ॥१९॥
योनिमुद्रा कामकला कुलामृतपरायणा ।
कुलकण्डालया सूक्ष्मा जीवात्मना लिंगरूपिणी ॥२०॥
मूलक्रिया मूलरूपा मूलाकृतिस्वरूपिणी ।
मोत्सुका कमलानंदा चिद्भावाऽऽत्मगातः शिवा ॥२१॥
श्वेतारुणा बिन्दुरूपा वेदयोनिर्ध्वनिक्षणा ।
घण्टाकोटिरवा रावा रविबिम्बोत्थिताऽद्भुता ॥२२॥
नादान्तलीना संपूर्णा पूर्णस्था बहुरूपिका ।
भृंगारावा वंशगतिर्वादित्रा मुरजध्वनिः ॥२३॥
वर्गमाला सिद्धिकला षट्चक्रक्रमवासिनी ।
मूलकेलीरता स्वाधिष्ठाना तुर्यनिवासिनी ॥२४॥
मणिपूरस्थितिः स्निग्धा कूर्मचक्रपरायणा ।
अनाहतगतिर्दीपशिखा मणिमयाकृतिः ॥२५॥
विशुद्धा शब्दसंशुद्धा जीवबोधस्थली रवा ।
आज्ञाचक्राब्जसंस्था च स्फुरन्ती निपुणा त्रिवृत् ॥२६॥

चन्द्रिका चन्द्रकोटिश्रीः सूर्यकोटिप्रभामयी ।
पद्मरागारुणच्छाया नित्याऽऽह्लादमयी प्रभा ॥२७॥
पानश्रीश्च प्रियामात्या निश्चलाऽमृतनन्दिनी ।
कान्तांगसंगमुदिता सुधामाधुर्यसंभृता ॥२८॥
महामञ्चस्थिताऽलिप्ता तृप्ता दृप्ता सुसंभृतिः ।
स्रवत्पीयूषसंसिक्ता रक्तार्णवविवर्धिनी ॥२९॥
सुरक्ता प्रियसंसिक्ता शश्वत्कुण्डालयाऽभया ।
श्रेयः श्रुतिश्च प्रत्येकानवकेशिफलावली ॥३०॥
प्रीता शिवा शिवप्रिया शाङ्करी शाम्भवी विभा ।
स्वयंभूः स्वप्रिया स्वीया स्वकीया जनमातृका ॥३१॥
स्वारामा स्वाश्रया साध्वी सुधाधाराऽधिकाधिका ।
मंगलोज्जयिनी मान्या सर्वमङ्गलसंगिनी ॥३२॥
भद्रा भद्रावली कन्या कलितार्धेन्दुबिम्बभाक् ।
कल्याणलतिका काम्या कुकर्मा कुमतिमनुः ॥३३॥
कुरंगाक्षी क्षीरनेत्रा क्षारा रसमदोन्मदा ।
वारुणीपानमुदिता मदिरारार्चिताश्रया ॥३४॥
कादम्बरीपानरुचिर्विपाशा पाशभीतिनुत् ।
मुदिता मुदितापांगा दरदोलितदीर्घदृक् ॥३५॥
दैत्यकुलानलशिखा मनोरथसुधाद्युतिः ।
सुवासिनी पीनगात्री पीनश्रेणिपयोधरा ॥३६॥
सुचारुकवरी दन्तदीधितिदीप्तमौक्तिका ।
बिम्बाधरा द्युतिमुखा प्रवालोत्तमदीधितिः ॥३७॥
तिलप्रसूननासाग्रा हेमकक्कोलभालका ।
निष्कलंकेन्दुवदना बालेन्दुमुकुटोज्ज्वला ॥३८॥
नृत्यत्खञ्जननेत्रश्रीर्विस्फुरत्कर्णशष्कुली ।
बालचन्द्रातपत्रार्घा मणिसूर्यकिरीटिनी ॥३९॥

हेममाणिक्यताटङ्का मणिकाञ्चनकुंडला ।
सुचारुचिबुका कम्बुकण्ठी मणिमनोरमा ॥४०॥
गङ्गातरङ्गहारोर्मिमंत्तकोकिलनिःस्वना ।
मृणालविलसद्बाहुः पाशांकुशधनुर्धरा ॥४१॥
केयूरकटकाच्छन्ना नानारत्नमनोरमा ।
ताम्रपङ्कजपाणिश्रीर्नखरत्नप्रभावती ॥४२॥
अंगुलीयमणिश्रेणिचञ्चदंगुलिसन्ततिः ।
मन्दारद्वन्द्वसुकुचा रोमराजीभुजङ्गका ॥४३॥
गम्भीरनाभिस्त्रिवलीवलया च सुमध्यमा ।
रणत्काञ्चीगुणोन्नद्धा पट्टांशुकसुनोविका ॥४४॥
मेरुगुण्डीनितम्बाढ्या गजगण्डोरुयुग्मयुक् ।
सुजानुमन्दरासक्तलसज्जङ्घाद्वयान्विता ॥४५॥
गूढगुल्फा मञ्जुशिञ्जन्मणिनूपुरमण्डिता ।
योगिध्येयपदद्वन्द्वा सुधामाऽमृतसारिणी ॥४६॥
लावण्यसिन्धुः सिन्दूरतिलका कुटिलालका ।
साधुसिद्धा सुबुद्धा च बुधा वृन्दारकोदया ॥४७॥
बालार्ककिरणश्रेणीशोणा श्रीप्रेमकामधुक् ।
रसगम्भीरसरसीपद्मिनी रससारसा ॥४८॥
प्रसन्नाऽऽसन्नवरदा शारदा च सुभाग्यदा ।
नटराजप्रिया विश्वनाट्या नर्तकनर्तकी ॥४९॥
विचित्रयंत्रा चित्तन्त्रा विद्यावल्ली गतिः शुभा ।
कूटरकूटा कूटस्था पञ्चकूटा च पञ्चमी ॥५०॥
चतुष्कूट त्रिकूटाद्या षट्कूटा वेदपूजिता ।
कूटाषोडशसम्पन्ना तुरीया परमा कला ॥५१॥
षोडशी मन्त्रयन्त्राणामीश्वरी मेरुमण्डला ।
षोडशार्णा त्रिवर्णा च बिन्दुनादस्वरूपिणी ॥५२॥

वर्णातीता वर्णमाता शब्दब्रह्ममहासुखा ।
चैतन्यवल्ली कूटात्मा कामेशी स्वप्नदृश्यगा ॥५३॥
स्वप्नावती बोधकरी जागृतिर्जागराश्रया ।
स्वप्नाश्रया सुषुप्तिश्च तन्द्रामुक्ता च माधवी ॥५४॥
लोपामुद्रा कामराज्ञी मानवी वित्तपार्चिता ।
शाकम्भरी नन्दिविद्या भास्वद्विद्योतमालिनी ॥५५॥
माहेन्द्री स्वर्गसंपत्तिर्दुर्वासःसेविता श्रुतिः ।
साधकेन्द्रगतिः साध्वी सुलभा सिद्धिकन्दरा ॥५६॥
पुरत्रयेशी पुरजिदर्चिता पुरदेवता ।
पुष्टिर्विघ्नहरी भूतिर्विगुणा पूज्यकामधुक् ॥५७॥
हिरण्यमाता गणपा गुहमाता नितम्बिनी ।
सर्वसीमन्तिनी मोक्षा दीक्षा दीक्षितमातृका ॥५८॥
साधकांबा सिद्धमाता साधकेन्द्रा मनोरमा ।
यौवनोन्मादिनी तुङ्गा सुश्रोणिर्मदमन्थरा ॥५९॥
पद्मरक्तोत्पलवती रक्तमाल्यानुलेपना ।
रक्तमालारुचिः शिखाशिखण्डिन्यतिसुन्दरी ॥६०॥
शिखण्डिनृत्तसन्तुष्टा सौरभेयी वसुन्धरा ।
सुरभी कामदा काम्या कमनीयार्थकामदा ॥६१॥
नन्दिनी लक्षणवती वसिष्ठालयदेवता ।
गोलोकदेवी लोकश्रीर्गोलोकपरिपालिका ॥६२॥
हविर्धानी देवमाता वृन्दारकवरानुयुक् ।
रुद्रपत्नी भद्रमाता सुधाधाराऽम्बुविक्षतिः ॥६३॥
दक्षिणा यज्ञसंमूर्तिः सुबाला धीरनन्दिनी ।
क्षीरपूर्णार्णवगतिः सुधायोनिः सुलोचना ॥६४॥
रामानुगा सुसेव्या च सुगन्धालयवासगा ।
सुचारित्रा सुत्रिपुरा सुस्तनी स्तनवत्सला ॥६५॥

रजस्वला रजोयुक्ता रञ्जिका रङ्गमालिका ।
रक्तप्रिया सुरक्ता च रतिरङ्गस्वरूपिणी ।।६६।।
रजःशुक्राम्बिका निष्ठा रतिनिष्ठा रतिस्पृहा ।
ह्वावभावा कामकेलिसर्वस्वा सुरजीविका ।।६७।।
स्वयम्भूकुसुमानन्दा स्वयम्भूकुसुमप्रिया ।
स्वयम्भूप्रीतिसन्तुष्टा स्वयंभूर्निदकान्तकृत् ।।६८।।
स्वयम्भूस्था शक्तिपुटी रतिसर्वस्वपीठिका ।
अत्यन्तसभिका दूती विदग्धा प्रीतिपूजिता ।।६९।।
कुल्लिका यन्त्रनिलया योगपीठाधिवासिनी ।
सुलक्षणा रसरूपा सर्वलक्षणलक्षिता ।।७०।।
नानालङ्कारसुभगा पञ्चबाणसमर्चिता ।
ऊर्ध्वत्रिकोणनिलया बाला कामेश्वरी तथा ।।७१।।
गणाध्यक्षा कुलाध्यक्षा लक्ष्मीश्चैव सरस्वती ।
वसन्तसमयप्रीता प्रीतिः कुचभरानता ।।७२।।
कलाधरमुखाऽमूर्धा पादवृद्धिः कलावती ।
पुष्पप्रिया धृतिश्चैव रतिकण्ठी मनोरमा ।।७३।।
मदनोन्मादिनी चैव मोहिनी पार्वणीकला ।
शोषिणी वशिनी राजिन्यत्यन्तसुभगा भगा ।।७४।।
पूषा वशा च सुमना रतिः प्रीतिर्धृतिस्तथा ।
ऋद्धिः सौम्या मरीच्यंशुमाला प्रत्यङ्गिरा तथा ।।७५।।
शशिनी चैव सुच्छाया सम्पूर्णमण्डलोदया ।
तुष्टा चामृतपूर्णा च भगयन्त्रनिवासिनी ।।७६।।
लिङ्गयन्त्रालया शम्भुरूपा संयोगयोगिनी ।
द्राविणी बीजरूपा च अक्षुब्धा साधकप्रिया ।।७७।।
राजबीजमयी राज्यसुखदा वाञ्छितप्रदा ।
रजःसंवीर्यशक्तिश्च शुक्रविच्छिवरूपिणी ।।७८।।

सर्वसारा सारमया शिवशक्तिमयी प्रभा ।
संयोगानन्दनिलया सयोगप्रीतिमातृका ॥७९॥
संयोगकुसुमानन्दा संयोगा योगवर्धिनी ।
संयोगसुखदावस्था चिदानन्दैकसेविता ॥८०॥
अर्घ्यपूजकसम्पत्तिरर्घ्यद्रव्यस्वरूपिणी ।
सामरस्या परा प्रीता प्रियसङ्गमरूपिणी ॥८१॥
ज्ञानदूती ज्ञानगम्या ज्ञानयोनिः शिवालया ।
चित्कला ज्ञानसकला सकुला सकुलात्मिका ॥८२॥
कलाचतुष्टया पद्मिन्यतिसूक्ष्मा परात्मिका ।
हंसकेलिस्थली च्छाया हंसद्वयविकासिनी ॥८३॥
विरागता मोक्षकला परमात्मकलावती ।
विद्याकलान्तरात्मस्था चतुष्टयकलावती ॥८४॥
विद्यासन्तोषणा तृप्तिः परब्रह्मप्रकाशिका ।
परामात्मपरा वस्तुलीना शक्तिचतुष्टयी ॥८५॥
शान्तिर्बोधकलावाप्तिः परज्ञानात्मिका कला ।
पश्यन्ती परमात्मस्था चान्तरात्मकलाऽकुला ॥८६॥
मध्यमा वैखरी चात्मकलानन्दा कलावती ।
तारिणी तरणी तारा शिवलिङ्गालयाऽऽत्मवित् ॥८७॥
परस्परशुभ चारा ब्रह्मानन्दविनोदिनी ।
रसालसा दूतरासा सार्था सार्थप्रिया ह्युमा ॥८८॥
जात्यादिरहिता योगियोगिन्यानन्दवर्धिनी ।
वीरभावप्रदा दिव्या वीरसूर्वीरभावदा ॥८९॥
पशुत्वाभिवीरगतिर्वीरसङ्गमहोदया ।
मूर्धाभिषिक्ता राजश्रीः क्षत्रियोत्तममातृका ॥९०॥
शस्त्रास्त्रकुशला शोभा रसस्था युद्धजीविका ।
विजया योगिनी यात्रा परसैन्यविमर्दिनी ॥९१॥

पूर्णा वित्तैषिणी वित्ता वित्तसञ्चयशालिनी ।
भांडागारस्थिता रत्ना रत्नश्रेण्यधिवासिनी ॥९२॥
महिषी राजभोग्या च गणिका गणभोगभृत् ।
करिणी वडवा योग्या मल्लसेना पदातिका ॥९३॥
सैन्यश्रेणी शौर्यरता पताका ध्वजवासिनी ।
सुच्छत्रा चांबिका चांबा प्रजापालनसद्गतिः ॥९४॥
सुरभिः पूजकाचारा राजकार्यपरायणा ।
ब्रह्मक्षत्रमयी सोमसूर्यान्तर्यामिनी स्थितिः ॥९५॥
पौरोहित्यप्रिया साध्वी ब्रह्माणी यज्ञसन्ततिः ।
सोमपानपरा प्रीता जनाढ्या तपना क्षमा ॥९६॥
प्रतिग्रहपरा दात्री सृष्टा जातिः सतां गतिः ।
गायत्री वेदलभ्या च दीक्षा सन्ध्यापरायणा ॥९७॥
रत्नसद्दीधितिर्विश्ववासना विश्वजीविका ।
कृषिवाणिज्यभूतिश्च वृद्धिर्धी च कुसीदिका ॥९८॥
कुलाधारा सप्रसारा मनोन्मनी परायणा ।
शूद्रा विप्रगतिः कर्मकरी कौतुकपूजिका ॥९९॥
नानाविचारचतुरा बाला प्रौढा कलामयी ।
सुकर्णधारा नौः पारा सर्वाशा दुर्गमोचनी ॥१००॥
दुर्गा विन्ध्यवनस्था च कन्दर्पनयपूरणी ।
भूभारशमनी कृष्णा रक्षाराध्या रसोल्लसा ॥१०१॥
त्रिविधोत्पातशमनी समग्रसुखशेवधिः ।
पञ्चावयववाक्यश्रीः प्रपञ्चोद्यानचन्द्रिका ॥१०२॥
सिद्धसन्दोहसुखिता योगिनीवृन्दवन्दिता ।
नित्याषोडशरूपा च कामेशी भगमालिनी ॥१०३॥
नित्यक्लिन्ना च भीरुंडा वह्निमंडलवासिनी ।
महाविद्येश्वरी नित्या शिवदूतीति विश्रुता ॥१०४॥

त्वरिता प्रथिता ख्याता विख्याता कुलसुन्दरी ।
नित्या नीलपताका च विजया सर्वमङ्गला ॥१०५॥
ज्वालामाला विचित्रा च महात्रिपुरसुन्दरी ।
गुरुवृन्दा परगुरुः प्रकाशानन्दनाथिनी ॥१०६॥
शिवानन्दानाथरूपा शक्त्यानन्दस्वरूपिणी ।
देव्यानन्दानाथमयी कौलेशानन्दनाथिनी ॥१०७॥
दिव्यौघगुरुरूपा च समयानन्दनाथिनी ।
शुक्लदेव्यानन्दनाथा कुलेशानन्दनाथिनी ॥१०८॥
क्लिन्नाङ्गानन्दरूपा च समयानन्दनाथिनी ।
वेदानन्दनाथमयी सहजानन्दनाथिनी ॥१०९॥
सिद्धौघगुरुरूपा च अपरागुरुरूपिणी ।
गगनानन्दनाथा च विश्वानन्दस्वनाथिनी ॥११०॥
विमलानन्दनाथा च मदनानन्दनाथिनी ।
भुवनाद्या च लीलाद्या नन्दनानन्दनाथिनी ॥१११॥
स्वात्मानन्दानन्दरूपा प्रियाद्यानन्दनाथिनी ।
मानवौघगुरुश्रेष्ठा परमेष्ठिगुरुप्रभा ॥११२॥
परगुह्या गुरुशक्तिः स्वगुरुकीर्तनप्रिया ।
त्रैलोक्यमोहनख्याता सर्वाशापरिपूरका ॥११३॥
सर्वसंक्षोभिणो पूर्वाम्नायप्रथितवैभवा ।
शिवाशक्तिः शिवशक्तिः शिवचक्रत्रयालया ॥११४॥
सर्वसौभाग्यदाख्या च सर्वार्थसाधिकाह्वया ।
सर्वरक्षाकराख्या च दक्षिणाम्नायदेवता ॥११५॥
मध्यार्कचक्रनिलया पश्चिमाम्नायदेवता ।
नवचक्रकृतावासा कौबेराम्नायदेवता ॥११६॥
कुबेरपूज्या कुलजा कुलाम्नायप्रवर्तिनी ।
विन्दुचक्रकृतावासा मध्यसिंहासनेश्वरी ॥११७॥

श्रीविद्या च महालक्ष्मीः लक्ष्मीः शक्तित्रयात्मिका ।
सर्वसाम्राज्यलक्ष्मीश्च पञ्चलक्ष्मीतिविश्रुता ।।११८।।
श्रीविद्या च परज्योतिः परनिष्कलशाम्भवी ।
मातृका पञ्चकोशी च श्रीविद्यात्वरिता तथा ।।११९।।
पारिजातेश्वरी चैव त्रिकूटा पञ्चबाणगा ।
पञ्चकल्पलता पञ्चविद्या चामृतपीठिका ।।१२०।।
सुधासू रमणेशाना चान्नपूर्णा च कामधुक् ।
श्रीविद्या सिद्धलक्ष्मीश्च मातङ्गी भुवनेश्वरी ।।१२१।।
वाराही पञ्चरत्नानामीश्वरी मातृवर्णगा ।
पराज्योतिः कोशरूपा ऐन्दवी कलया युता ।।१२२।।
परितः स्वामिनी शक्तिदर्शना रविबिन्दुयुक् ।
ब्रह्मदर्शनरूपा च शिवदर्शनरूपिणी ।।१२३।।
विष्णुदर्शनरूपा च सृष्टिचक्रनिवासिनी ।
सौरदर्शनरूपा च स्थितिचक्रकृतालया ।।१२४।।
बौधदर्शनरूपा च महात्रिपुरसुन्दरी ।
तत्त्वमुद्रास्वरूपा च प्रसन्ना ज्ञानमुद्रिका ।।१२५।।
सर्वोपचारसन्तुष्टा हृन्मयी शीर्षदेवता ।
शिखास्थिता ब्रह्ममयी नेत्रत्रयविलासिनी ।।१२६।।
अस्त्रस्था चतुरस्त्रा च द्वारका द्वारवासिनी ।
अणिमा पश्चिमस्था च लघिमोत्तरदेवता ।।१२७।।
पूर्वस्था महिमेशित्वा दक्षिणद्वारदेवता ।
वशित्वा वायुकोणस्था प्राकाम्येशानदेवता ।।१२८।।
अग्निकोणस्थिता भुक्तिरिच्छा नैर्ऋतवासिनी ।
प्राप्तिसिद्धिरवस्था च प्राकाम्यार्थविलासिनी ।।१२९।।
ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा ।
वाराह्यैन्द्री च चामुण्डा महालक्ष्मीर्दिशांगताः ।।१३०।।
क्षोभिणी द्राविणीमुद्राऽऽकर्षोन्मादनकारिणी ।
महांकुशा खेचरी च बीजाख्या योनिमुद्रिका ।।१३१।।

सर्वाशापूरचक्रस्था कार्यसिद्धिकरी तथा ।
कामाकर्षिणिकाशक्तिर्बुद्धय्याकर्षणरूपिणी ॥१३२॥
अहङ्कारार्काषिणी च शब्दाकर्षणरूपिणी ।
स्पर्शाकर्षणरूपा च रूपाकर्षणरूपिणी ॥१३३॥
रसाकर्षणरूपा च गन्धाकर्षणरूपिणी ।
चित्ताकर्षणरूपा च धैर्याकर्षणरूपिणी ॥१३४॥
स्मृत्याकर्षणरूपा च बीजाकर्षणरूपिणी ।
अमृताकर्षिणी चैव नामाकर्षणरूपिणी ॥१३५॥
शरीराकर्षिणीदेवी आत्माकर्षणरूपिणी ।
षोडशस्वररूपा च स्रवत्पीयूषमन्दिरा ॥१३६॥
त्रिपुरेशी सिद्धरूपा कलादलनिवासिनी ।
सर्वसंक्षोभचक्रेशी शक्तिर्गुप्ततराभिधा ॥१३७॥
अनङ्गकुसुमाशक्तिरनङ्गकटिमेखला ।
अनङ्गमदनाऽनङ्गमदनातुररूपिणी ॥१३८॥
अनङ्गरेखा चानङ्गवेगानङ्गांकुशाभिधा ।
अनङ्गमालिनी शक्तिरष्टवर्गदिगन्विता ॥१३९॥
वसुपत्रकृतावासा श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ।
सर्वसाम्राज्यसुखदा सर्वसौभाग्यदेश्वरी ॥१४०॥
सम्प्रदायेश्वरी सर्वसंक्षोभणकरी तथा ।
सर्वविद्राविणी सर्वाकर्षणोपप्रकारिणो ॥१४१॥
सर्वाह्लादनशक्तिश्च सर्वजृम्भणकारिणी ।
सर्वस्तम्भनशक्तिश्च सर्वसंमोहिनी तथा ॥१४२॥
सर्ववश्यकरीशक्तिः सर्वसर्वानुरञ्जिनी ।
सर्वोन्मादनशक्तिश्च सर्वार्थसाधकारिणी ॥१४३॥
सर्वसम्पत्तिदाशक्तिः सर्वमन्त्रमयी तथा ।
सर्वद्वंद्वक्षयकरी सिद्धिस्त्रिपुरवासिनी ॥१४४॥
सर्वार्थसाधकेशी च सर्वकार्यार्थसिद्धिदा ।
चतुर्दशारचक्रेशी कलायागसमन्विता ॥१४५॥

सर्वसिद्धिप्रदा देवी सर्वसम्पत्प्रदा तथा ।
सर्वप्रियङ्करी शक्तिः सर्वमङ्गलकारिणी ॥१४६॥
सर्वकामप्रपूर्णा च सर्वदुःखप्रमोचिनी ।
सर्वमृत्युप्रशमनी सर्वविघ्नविनाशिनी ॥१४७॥
सर्वाङ्गसुन्दरी देवी सर्वसौभाग्यदायिनी ।
त्रिपुरेशी सर्वसिद्धिप्रदा च दशकोणगा ॥१४८॥
सर्वरक्षाकरेशी च निगर्भायोगिनी तथा ।
सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च सर्वैश्वर्यप्रदा तथा ॥१४९॥
सर्वज्ञानमयी देवी सर्वव्याधिविनाशिनी ।
सर्वाधारस्वरूपा च सर्वपापहरा तथा ॥१५०॥
सर्वानन्दमयी देवो सर्वरक्षास्वरूपिणी ।
महिमाशक्ति देवी च देवी सर्वसमृद्धिदा ॥१५१॥
अन्तर्दशारचक्रेशी देवी त्रिपुरमालिनी ।
मर्वरोगहरेशी च रहस्या योगिनी तथा ॥१५२॥
वाग्देवी वशिनी चैव देवी कामेश्वगी तथा ।
मोदिनी विमला चैव अरुणा जयिनी तथा ॥१५३॥
सर्वेश्वरी कौलिनी च ह्यष्टार सर्वसिद्धिदा ।
सर्वकामप्रदेशी च परापररहस्यवित् ॥१५४॥
त्रिकोणचतुरस्था च सर्वेश्वर्याऽऽयुधात्मिका ।
कामेश्वरी बाणरूपा कामेशी चापरूपिणी ॥१५५॥
कामेशी पाशरूपा च शामेश्यंकुशरूपिणी ।
कामेश्वरीन्द्रशक्तिश्च अग्निचक्रकृतालया ॥१५६॥
कामगिर्यधिदेवी च त्रिकोणस्थाऽग्रकोणगा ।
दक्षकोणेश्वरी विष्णुशक्तिर्जालन्धराश्रया ॥१५७॥
सूर्यचक्रालया रुद्रशक्तिर्वामाङ्गकोणगा ।
सोमचक्रब्रह्मशक्तिः पूर्णगिर्यनुरागिणी ॥१५८॥
श्रीमत्त्रिकोणभुवना त्रिपुरात्ममहेश्वरी ।
सर्वानन्दमयेशी च बिन्दुगतिरहस्यभृत् ॥१५९॥

परब्रह्मस्वरूपा च महात्रिपुरसुन्दरी ।
सर्वचक्रान्तरस्था च समस्तचक्रनायिका ॥१६०॥
सर्वचक्रेश्वरी सर्वमन्त्राणामीश्वरी तथा ।
सर्वविद्येश्वरी चैव सर्ववागीश्वरी तथा ॥१६१॥
सर्वयोगीश्वरी चैव पीठेश्वर्य्यखिलेश्वरी ।
सर्वकामेश्वरी सर्वतत्त्वैश्वर्यागमेश्वरी ॥१६२॥
शक्तिः शक्तिहृगुल्लासा निर्द्वन्द्वा द्वैतगर्भिणी ।
निष्प्रपञ्चा महामाया सप्रपञ्चा स्ववासिनी ॥१६३॥
सर्वविश्वोत्पत्तिधात्री परमानन्दसुन्दरी ।
इत्येतत्कथितं दिव्यं परमानन्दकारणम् ॥१६४॥
लावण्यसिन्धुलहरीबालायास्तोषमन्दिरम् ।
सहस्रनाम तन्त्राणां सारमाकृष्य पार्वति ॥१६५॥
अनेन स्तुवतो नित्यमर्धरात्रे निशामुखे ।
प्रातःकाले च पूजायां सर्वकालमतः प्रिये ॥१६६॥
सर्वसाम्राज्यसुखदा बाला च परितुष्यति ।
रत्नानि यिविधान्यस्य वित्तानि प्रचुराणि च ॥१६७॥
मनोरथपथस्थान ददाति परमेश्वरी ।
पुत्राः पौत्राश्च वर्धन्ते सन्ततिः सर्वकालिकी ॥१६८॥
शत्रवस्तस्य नश्यन्ति वर्धन्तेऽस्य बलानि च ।
व्याधयस्तस्य दूरस्थाः सकलान्यौषधानि च ॥१६९॥
मन्दिराणि विचित्राणि राजन्ते तस्य सर्वदा ।
कृषिः फलवती तस्य भूमिः कामदुघाव्ययया ॥१७०॥
स्फीतो जनपदस्तस्य राज्यं तस्य निरीतिकम् ।
मातङ्गाः पक्षिणस्तुङ्गाः सिञ्चन्तो मदवारिभिः ॥१७१॥
द्वारे तस्य विराजन्ते हृष्टा नागतुरंगमाः ।
प्रजास्तस्य विराजन्ते निर्विवादाश्च मन्त्रिणः ॥१७२॥
ज्ञातयस्तस्य तुष्यन्ति शीलं तस्यातिसुन्दरम् ।
लक्ष्मीस्तस्य वशे नित्यं स्वासना च मनोरमा ॥१७३॥

गद्यपद्यमयी वाणी तस्य गंगातरंगवत् ।
नानापद‌पदार्थानां वादचातुर्यसंभृता ॥१७४॥
समग्ररससंपत्तिशालिनी लास्यमालिनी ।
अदृष्टान्यपि शास्त्राणि प्रकाशयन्ते निरन्तरम् ॥१७५॥
निग्रहः परवाक्यानां सभायां तस्य जायते ।
स्तुवन्ति वन्दिनस्तं वै राजानो दासवत्तथा ॥१७६॥
शस्त्राण्यस्त्राणि तदङ्गे जनयन्ति रुजांर्नहि ।
महिलास्तस्य वशगाः सर्वावस्था भवन्ति वै ॥१७७॥
विषं निर्विषतां याति पानीयममृतं भवेत् ।
परपक्षस्तम्भनं च प्रतिपक्षस्य जृम्भणम् ॥१७८॥
नवरात्रेण जायेत स तदभ्यासयोगवित् ।
अहोरात्रं पठेद्यस्तु निस्तन्द्रः शान्तमानसः ॥१७९॥
वशे तस्य प्रजा याति सर्वे लोकाः सुनिश्चितम् ।
षण्मासाभ्यासयोगेन योगमायाति निश्चितम् ॥१८०॥
नित्यं कामकलां ध्यायन् यः पठेत् स्तोत्रमुत्तमम् ।
मदनोन्मादकलिताः पुरन्ध्र्यस्तद्वशानुगाः ॥१८१॥
लावण्यमदनाः साक्षाद्वैदग्ध्यमुदितेक्षणाः ।
प्रेमपूर्णामपि वशे ह्युर्वशीं स हि विन्दति ॥१८२॥
भूर्जपत्रे रोचनया कुंकुमेन शुभे दिने ।
लाक्षारसद्रवेणापि यावकैर्वा विशेषतः ॥१८३॥
धातुरागेण वा देवि लिखितं यन्त्रमञ्चितम् ।
सुवर्णरौप्यगर्भस्थं सुसंपूतं सुसाधितम् ॥१८४॥
बालाबुद्ध्या पूजितं च प्रतिष्ठितसमीरणम् ।
धारयेन्मस्तके कण्ठे बाहुमूले तथा हृदि ॥१८५॥
नाभौ वापि धृतं धन्यं जयदं सर्वकामदम् ।
रक्षणं नापरं किञ्चिद्विद्यते भुवनत्रये ॥१८६॥
ग्रहरोगादिभयहृत् सुखकृत्यविवर्धनम् ।
बलवीर्यकरं क्रूरभूतशत्रुविनाशनम् ॥१८७॥

पुत्रपौत्रान् गुणगणैर्वर्धनं धनधान्यकृत् !
धरण्यां सा पुरी धन्या यत्रायं साधकोत्तमः ॥१८८॥
यद्गृहे लिखितं तिष्ठेत् स्तोत्रमेतद्वरानने ।
तत्र चाहं शिवे । नित्य हरिश्च कमला तथा ॥१८९॥
वसामः सर्वतीर्थानामुत्पत्तिस्तत्र जायते ।
यो वापि पाठयेद् भक्त्या पठेद्वं साधकोत्तमः ॥१९०॥
ज्ञानानन्दकलायोगादैक्यवृत्ति ग विन्दति ।
स्तोत्रेणानेन देवेशि तव पूजाफलं लभेत् ॥१९१॥
षोढान्यासतनुर्भूत्वा पठितव्य प्रयत्नतः ।
उत्तमा सर्वतन्त्राणां बालायाः पूजनसृतिः ॥१९२॥
तत्रोत्तमा षोडशार्णा तत्रेदं स्तोत्रमुत्तमम् ।
नाशिष्याय प्रदातव्यमशुद्धाय शठाय च ॥१९३॥
अलसायाप्रयत्नायाशिवाभक्ताय सुन्दरि ।
भक्तिहीनाय मलिने गुरुनिन्दापराय च ॥१९४॥
विष्णुभक्तिविहीनाय विकल्पाबृतबुद्धये ।
देयं भक्तवरे मुक्तेः कारणं भक्तिवर्धनम् ॥१९५॥
लतायोगे पठेद्यस्तु स्तोत्रमेतद्वरानने ।
सैव कल्पलता तस्य वाञ्छाफलकरी तथा ॥१९६॥
पुष्पिताया लतायोगे कुरङ्गमुखि साधकः ।
अक्षुब्धः सन् पठेद्यस्तु शतयज्ञस्य पुण्यभाक् ॥१९७॥
ब्रह्मादयोऽपि देवेशि प्रार्थयन्ति पदद्वयम् ।
स्वय शिवः स विज्ञेयो यो बालाभावलम्पटः ॥१९८॥
ब्रह्मानन्दमयी ज्योत्स्ना सदाशिवविधूदिता ।
आनन्दो योऽपि यं वेदा वदन्त्यस्यां वशे स्थिताः ॥१९९॥
आह्लादनं बालाध्यानादबालाया नामकीर्तनात् ।
सदानन्दाभ्यासयोगात् सदानन्दः प्रजायते ॥२००॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे भैरवभैरवीसंवादे श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीसहस्रनामकम् ॥